

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_184419

UNIVERSAL
LIBRARY

KALYĀNAMALLA'S ANĀNGARAṄGA

Critically edited with Introduction
and Notes

BY
RICHARD SCHMIDT
Münster University (GERMANY)

(नितान्तं गोपनीयम्)

महाकवि कल्याणमल्लविरचितम्

अनंगरंगम्

पुस्तक प्राप्तिस्थानम्—

पंजाबःसंस्कृत पुस्तकालय लाहौर ।

१९२७

INTRODUCTION.

Kalyāṇamalla's Anaṅgaraṅga has been edited, as far as I know twice in India, namely, (1) by Rāmacandra Śāstrī, Lahore 1920, with a bhūmikā and a small gloss, and (2) by Viṣṇuprasādabhaṇḍārin, Kāśī 1923 (=No. 9 of Haridās' Saṃskṛtagranthamālā), with a short bhūmikā and useful notes. Nevertheless, the work of Kalyāṇa thoroughly deserve our interest, because it is one of the best कामशास्त्र texts written in the language of the gods. It is by this reason that I have undertaken the attempt to publish a new and, as I hope a critical edition of the Anaṅgarāṅgā. Rāmacandra Śāstrī based his edition on one single manuscript and in his Preface freely states that owing to circumstances his book is not perfect one. [अद्यप्यत्रत्यमोषधि-प्रकरणं सम्यग् विशदयितुं समीहावानासं तथापि शीघ्रमस्य मुद्रापयिष्यमाणत्वात्कार्यान्तरव्यासङ्गवशाच्च समयमलभमानस्तथा कर्तुं नापारयमित्योषधिप्रकरणमस्पृष्टमेवात्याक्षम् । आशासे यदि जगदीशोऽनुकूलयिष्यति तर्हि द्वितीयसंस्करणे सर्वं सम्यक् समाधातास्मि ।] Moreover there are in his edition a great many blunders and no good readings. As for Viṣṇuprasādabhaṇḍārin's edition, it is based upon Rāmacandra's text and three manuscripts, only one of which is complete and शुद्धप्रायः, as the editor himself says.

I copied first in 1899 the Berlin manuscript No. 595=Chambers 159 (Weber I, 172) i paper very much damaged and text therefore mutilated. Signed B.

Then I collated the India Office manuscript No 1801 (Eggeling's Catalogue, Vol. III, p. 361). fairly written in Nāgarī. Signed 10.

Later on I copied the two Poona manuscripts No. 204 and 238 (signed P 204 and P 238 respectively) and R=Report...by Ramkrishna Gopal Bhandarkar, Bombay 1894, No. 317. Lastly I got, by the kindness of Mr. F. W. Thomas and the Chief-Librarian of the Madras Library, a most carefully prepared copy and collation of the six manuscripts deposited there. M is the archetypus; क, ख, ग, घ, ङ correspond to the

library reference numbers 3-4-27; 3 3-24; 4B 7-6; 4B-7-7; and 3-1-43 respectively.

As may be expected, I thoroughly collated also the two printed texts: L=the Lahore edition, V=that of Viṣṇuprasādabhaṇḍārin.

Kaivāṇamalla wrote his book for the amusement of Lād Khān, son of Ahmad, who is styled to have been the crown of the Lodī House. Owing to the fact that there Lodī kings immediately preceded the Timur House in the person of Baber Shah, the Anaṅgarāṅga may have been composed in the XVth century of the Christian era. Nothing more can be said about the author and his life-circumstances with any certainty. But we learn from the introductory stanzas that he borrowed his deeds and teachings from elder sources:

मतानि दृष्ट्वा बहुशो मुनीनां तत्सारमादाय निरूपयामि ।

“Having manifoldly examined the opinions of the sage men, and extracted the essence of them, I compose (my book).” This we are also told by the whole work. Indian tradition enumerates a pretty large number of authors who wrote on the present subject e.g. Auddālaki, Bābhraṅga, Dattaka, Cārāyaṇa, Suvarṇanābha, Ghoṭakamukha, Gonardīya, Goṇikāputra, Kucumāra, Vātsyāyana, Kokkoka, Kaviśekhara Jyotiśvara Jayadeva, Bhānuddatta etc, and plenty of titles are known, vid. Anaṅgatilaka, Anaṅgadīpikā, Anaṅgaśekhara, Kandarpacūḍāmaṇi, Kāmaprakāśa, Kāmaprabodha, Kāmasāra, Nāgarasarvasvam, Pañcasāyaka, Madanasamjīvanī, Madanāṅga, Yogaratnāvalī, Ratimanjari, Ratisarvasvam, Ratisāra, Vātsyāyanasūtrasāra (by Kṣemendra), Veśyāṅganākālpa, Śṛṅgārasāriṇī, Strīvilāsa, Smaratattvapra-kāśikā, Smradīpikā, Smararahasyavyākhyā, and many others.

Only a small number of these texts have been printed, by far, most of them being known by name only.

Münster

R. SCHMIDT

विषयसूची ॥

विषयः

पृष्ठम्

(प्रथमः स्थलः)

| | | | |
|---------------------------|-----|-----|---|
| मङ्गलाचरणप्रशस्त्यादि | ... | ... | १ |
| पद्मिनीलक्षणम् | ... | ... | २ |
| चित्रिणीलक्षणम् | ... | ... | २ |
| शङ्खिनीलक्षणम् | ... | ... | ३ |
| हस्तिनीलक्षणम् | ... | ... | ३ |
| नालिनीप्रभृतीनां सुखतिथयः | ... | ... | ३ |

(द्वितीयः स्थलः)

| | | | |
|-------------------------------------|-----|-----|---|
| पद्मिनीप्रभृतीनां साधारणी चन्द्रकला | ... | ... | ४ |
| पृथक्कयाशशिकलोच्यते | ... | ... | ५ |
| चित्रिण्याश्चन्द्रकला | ... | ... | ५ |
| शंखिन्याश्चन्द्रकला | ... | ... | ६ |
| हस्तिन्याश्चन्द्रकला | ... | ... | ७ |

(तृतीयः स्थलः)

| | | | |
|-------------------------------|-----|-----|----|
| शशमृगादिभेदेन सुरतभेदनिरूपणम् | ... | ... | ८ |
| शशस्वरूपं | ... | ... | १० |
| वृषभलक्षणम् | ... | ... | १० |
| अश्वलक्षणम् | ... | ... | १० |
| मृगलक्षणम् | ... | ... | ११ |
| बहुवालक्षणम् | ... | ... | ११ |
| करिणीलक्षणम् | ... | ... | ११ |

(चतुर्थः स्थलः)

| | | | |
|----------------------------------|-----|-----|----|
| अथाङ्गानां समानधर्मा निरूप्यन्ते | ... | ... | १२ |
| प्रकृतिलक्षणानि | ... | ... | १३ |

| विषयः | | | पृष्ठम् |
|--------------------------|-----|-----|---------|
| देवसस्वादिनिरूपणम् | ... | ... | १३ |
| स्त्रीणां नाशहेतवः ... | ... | ... | १५ |
| स्त्रीणां वैराग्यहेतवः | ... | ... | १५ |
| विरक्ता लक्षणानि ... | ... | ... | १५ |
| प्रीतिलक्षणम् ... | ... | ... | १५ |
| भोजनादिव्यवस्था | ... | ... | १६ |
| योनिस्वरूपम् ... | ... | ... | १६ |
| अल्पसाध्यालक्षणम् | ... | ... | १७ |
| रताभिलाषचिन्हानि | ... | ... | १७ |
| (पंचमः स्थलः) | | | |
| वनितानां देशधर्मनिरूपणम् | ... | ... | १८ |
| (षष्ठः स्थलः) | | | |
| द्रावणादियोगाः ... | ... | ... | २१ |
| स्तम्भनविधिः ... | ... | ... | २२ |
| बाजीकरणविधिः ... | ... | ... | २३ |
| लिङ्गस्थूलीकरणम् | ... | ... | २४ |
| योनिस्फुल्लविधानम् | ... | ... | २५ |
| योनिस्संस्कारः ... | ... | ... | २६ |
| लोमशातनम् ... | ... | ... | २६ |
| नष्टपुष्पसमुद्भवविधिः | ... | ... | २६ |
| पुष्पाधिक्य निवारणम् | ... | ... | २६ |
| गर्भाधानम् ... | ... | ... | २७ |
| गर्भेस्तम्भनविधिः... | ... | ... | २७ |
| सुखप्रसवविधिः ... | ... | ... | २८ |
| बन्ध्यात्वापादनम् ... | ... | ... | २८ |
| कोष्ठोद्भवरञ्जनविधिः | ... | ... | २९ |
| केशश्वेतीकरणम् ... | ... | ... | २९ |
| मुखकण्ठकनिवारणम् | ... | ... | ३० |

त्रिषयः

पृष्ठम्

| | | | |
|------------------|-----|-----|----|
| मुखनीलीहरणम् ... | ... | ... | ३० |
| कुचसंस्कारः ... | ... | ... | ३० |

(सप्तमः स्थलः)

| | | | |
|-----------------------|-----|-----|----|
| वशीकरणादिकम् ... | ... | ... | ३१ |
| तिलकविधिः ... | ... | ... | ३१ |
| अञ्जनविधिः ... | ... | ... | ३२ |
| चूर्णविधिः ... | ... | ... | ३२ |
| भक्षणविधिः ... | ... | ... | ३२ |
| लेपविधिः ... | ... | ... | ३३ |
| धूप विधिः ... | ... | ... | ३३ |
| कामेश्वरमन्त्रः ... | ... | ... | ३३ |
| चामुण्डामन्त्रः ... | ... | ... | ३५ |
| पद्मिनीवशीकरणम् | ... | ... | ३५ |
| चित्रिणीवशीकरणम् | ... | ... | ३५ |
| शङ्खिनीवशीकरणम् | ... | ... | ३५ |
| हस्तिनी वशीकरणम् | ... | ... | ३५ |
| अङ्गरागादिकविधिः | ... | ... | ३५ |
| स्नानीयसुगन्धिः ... | ... | ... | ३६ |
| सामान्यसुगन्धिः ... | ... | ... | ३६ |
| सर्वोत्तमसुगन्धिः ... | ... | ... | ३६ |
| मुखवासविधिः ... | ... | ... | ३७ |

(अष्टमः स्थलः)

| | | | |
|----------------------|-----|-----|----|
| विवाहाद्युद्देशः ... | ... | ... | ३८ |
| कन्याशुभलक्षणानि | ... | ... | ३८ |
| कन्यादूषणानि ... | ... | ... | ३८ |
| जामातृलक्षणानि ... | ... | ... | ३८ |
| जामातृदूषणानि ... | ... | ... | ३८ |
| परस्त्रीगमननिषेधः | ... | ... | ३९ |

| विषयः | पृष्ठम् |
|--------------------------------|---------|
| कारणशालारस्त्रागमनेऽनवद्यत्वम् | ४० |
| आगम्याः स्त्रियः ... | ४० |
| दूत्यः ... | ४० |
| सुखसाध्यालक्षणानि | ४१ |
| अनुरागिणीलक्षणम् | ४१ |
| दुःसाध्यालक्षणानि | ४२ |
| सुगते त्याज्यस्थानानि | ४२ |
| विहितप्रदेशः ... | ४२ |

(नममः स्थलः)

| | |
|---------------------|----|
| बाह्यसम्भोगविधानम् | ४४ |
| परिरम्भणलक्षणानि | ४४ |
| चुम्बनभेदाः ... | ४५ |
| नखदानविधिः ... | ४८ |
| दशनविधानम् ... | ४६ |
| केशग्रहणोद्देशः ... | ५० |

(दशमः स्थलः)

| | |
|---------------------|----|
| सुरतभेदा | ५२ |
| तत्रादावुत्तानबन्धा | ५२ |
| तिर्यग्बन्धः ... | ५४ |
| उपविष्टबन्धः ... | ५५ |
| स्थितबन्धः ... | ५६ |
| व्यानतबन्धः ... | ५७ |
| पुरुषायितबन्धः ... | ५७ |
| सीत्कृतभेदाः ... | ६० |
| अष्टनायिकालक्षणानि | ६० |

॥ श्रीः ॥

अथानङ्गरङ्गः प्रारभ्यते ।

— — — — —

¹ अतिललितविलासं विश्वचेतोनिवासं
समरकृतविकाशं शम्बराख्यप्रणाशम् ।
रतिनयनविरामं संततं चाभिरामं²
प्रसभविजितवामं शर्मदं भौमि कामम् ॥ १ ॥

शेर्दीवंशावतंसो हतरिपुत्रनितानेत्रवारिप्रपूर-
प्रादुर्भूतासु सिन्धुध्वमितवरयशा³ लीलया प्लाविताश्वः⁴ ।
तत्पुत्रः⁵ ख्यातकीर्तिरहमदृपतेः कामसिद्धान्तविद्वा-
ञ्जीयाच्छ्रीलाडखानः क्षितिपतिमुकुटैर्घृष्टपादारविन्दः⁶ ॥ २ ॥

अस्यैव कौतुकनिमित्तमनङ्गरङ्गं⁷
ग्रन्थं विलासिजनवल्लभमातनोमि⁸ ।
श्रीमान्महाकविशेषकलाविदग्धः⁹
कल्याणमल्ल इति भूपमुर्निर्यशस्वी¹⁰ ॥ ३ ॥

मतानि¹¹ दृष्ट्वा बहुशो¹² मुर्नानां
तत्सारमादाय निरूपयामि ।
अतोऽङ्गनाकेलिकलानुरागै-
ग्राह्यः सदाऽयं पुरूपैः सभावम्¹³ ॥ ४ ॥

निःसारे जगति प्रपञ्चसदृशे सारं कुरङ्गीदृशा-
मेकं भोगरुखं परात्मपरमानन्देन तुल्यं विदुः ।

तज्जात्यादिविवेकमूढमनसो¹⁴ लब्ध्वापि नानाङ्गनाः
संविन्दन्ति न कामतन्त्रविकलाः¹⁵ पश्चादिवन्मानवाः ॥ ५ ॥

पद्मिनी चित्रिणी चाथ शङ्खिनी हस्तिनी ततः¹⁶ ।
पूर्वपूर्वतरास्तासु श्रेष्ठास्तलक्ष्म चक्ष्महे¹⁷ ॥ ६ ॥

॥ अथ पद्मिनीस्वरूपं निरूप्यते ॥

प्रान्तारक्तकुरङ्गशावनयना¹⁸ पूर्णेन्दुतुल्यानना
पीनोत्तुङ्गकुचा शिरीषमृदुला स्वल्पाशना दक्षिणा ।
फुल्लाम्भोजसुगन्धिकामसलिला लज्जावती मानिनी
श्यामा कापि¹⁹ सुवर्णचम्पकनिभा²⁰ देवादिपूजारता ॥ ७ ॥

उन्निद्राम्बुजकोशतुल्यमदनच्छत्रा²¹ मरालस्वना
तन्वी हंसवधूगतिः सुललितं वेषं सदा बिभ्रती ।
मध्यं चापि²² वलित्रयाङ्कितमसौ शुक्लाम्बराकाङ्क्षिणी
सुग्रीवा शुभनासिकेति²³ गदिता नार्युत्तमा पद्मिनी ॥ ८ ॥

॥ अथ चित्रिणी लक्षणानि ॥

तन्वङ्गी गजगामिनी चपलदृक्सङ्गीतशिल्पान्विता
नो ह्रस्वा न बृहत्तराथ सुकृशा मध्ये मयूरस्वना²⁴ ।
पीनश्रोणिपयोधरा सुललिते जङ्घे वहन्ती कृशे
कामाम्भो मधुगन्ध्यथौष्ठमपि²⁵ सा बिम्बोपमं²⁶ वत्सला ॥ ९ ॥

कामागारमसान्द्रलोमसहितं मध्ये मृदु प्रायशो
बिभ्रत्युलसितं च वर्तुलमथो रत्यम्बुनाऽऽद्यं सदा²⁷ ।
भृङ्गीश्यामलकुन्तलाथ²⁸ जलजग्रीवोपभोगे रता
चित्रासक्तिवती²⁹ रते ऽल्परुचिका ज्ञेयाङ्गना चित्रिणी ॥ १० ॥

॥ अथ शङ्खिनी लक्षणानि ॥

दीर्घं बाह्यशिरं कृशं³⁰ पृथुमथो देहं वहन्ती तथा
पादौ दीर्घतरौ कटिं च बृहतीं स्वल्पस्तनी कोपिनी ।
गुह्यं क्षारविगन्धिना स्मरजलेनाल्पेन सान्द्रैः कचै-
रानिम्नं कुटिलेक्षणा³¹ द्रुतगतिः सन्तप्तगात्रा भृशम् ॥११॥

सम्भोगे करजक्षतानि बहुशो यच्छन्त्यनङ्गाकुला
न स्तोत्रं न च भूरि भक्षति³² सदा प्रायो भवेत्पित्तला ।
स्रग्भ्रान्ण्यरुणानि वाञ्छति दयाहीना³³ च पशुन्यैभृ-
त्पिङ्गा दुष्टमनाश्च घर्घरमहारूक्षस्वरा³⁴ शङ्खिनी ॥१२॥

॥ अथ हस्तिनी लक्षणानि ॥

स्थूला पिङ्गलकुन्तला च बहुभुक् क्रूरा त्रपावर्जिता³⁵
गौराङ्गी कुटिलाङ्गुलीकचरणा³⁶ ह्रस्वानमत्कन्धरा ।
विभ्रत्यैभमदाम्बुगन्धि³⁷ रतिजं तोयं भृशं मन्दगा³⁸
दुःस्साध्या सुरते ऽतिगद्गदरवा स्थूलौष्ठिका हस्तिनी ॥१३॥

॥ अथ नलिनीप्रभृतीनां सुखतिथय उच्यन्ते ॥

वेदाक्षीन्दुशरप्रसंख्यतिथयः प्रोक्ता नलिन्या रते
भोग्यादित्यदशर्तुसंख्यतिथिषु³⁹ प्रीता भवेच्चित्रिणी⁴⁰ ।
रुद्राम्भोधिगुणासमेषुतिथिषु⁴¹ प्रायो द्रवेच्छङ्खिनी
राकादशचतुर्दशीग्रहमितास्वेति द्रवं हस्तिनी⁴² ॥१४॥

रात्रेश्चतुर्थचरणे नलिनी द्रवत्वं⁴³
संयाति चित्रदयिता प्रथमे ऽथ⁴⁴ यामे ।
प्रीत्यै⁴⁵ तृतीयचरणः⁴⁶ खलु शङ्खिनीनां
नक्तं दिनार्धमपि हस्तिवधुजनानाम्⁴⁷ ॥१५॥

रजनीसुरतेषु पद्मिनी

न सुखं याति निसर्गतः क्वचित् ।

दिवसे शिशुयोगतो ⁴⁸ ऽपि सा

विकसत्यम्बुजिनी यथा ⁴⁹ रथेः ⁵⁰

॥ १६ ॥

इति श्रीलाङ्गवानविनोदाय महाकवि - - - - - चिन्तिते-

अनङ्गरङ्गे पद्मिन्यादिजातिवर्णनो नाम

प्रथमः स्थलः ॥ १ ॥



अथ द्वितीयः स्थलः ।

—:—:—

॥ अथ पद्मिनीप्रभृतीनां साधारणी चन्द्रकला

निरूप्यते ॥

सीमन्ताक्षयधरे कपोलगलके कक्षाकुचोरः स्थले ¹

नाभिश््रोणित्रराङ्गजानुविषये ² गुल्फे पदे ऽङ्गुष्ठके ।

कृष्णाकृष्णविभागतो ³ मनसिजाम्तिष्ठत्क्रमाद्यापितां

वामाङ्गेष्वथ ऊर्ध्वतो ऽभिगमनान्मासस्य पक्षद्वये

॥ २ ॥

सीमन्ते करजं ददीत नयने गण्डे ऽपि संचुम्बनं

दन्तेनाधरखण्डनं च नखरैः कक्षां सकण्ठां लिखेत् ।

श्रोणीं चाथ कुचं करेण सुदृढं गृह्णीत नाभौ पुनः

संदद्याच्च चपेटकं ⁴ स्मरगृहे मातङ्गलीलायितम्

॥ २ ॥

कुर्याद्वक्षसि ताडनं तु शनकैर्मुष्ट्यासकृद्बुद्धिगा-⁵

जान्वङ्गुपदेषु गुल्फविषये तैरात्मनो घातनम् ⁶ ।

इत्थं चन्द्रकलाप्रदीपनविदो⁷ रागान्विता भोगिनो

नीत्वा⁸ स्वीयवशं कुरङ्गनयनां⁹ विन्दन्ति सौख्यं परम् ॥ ३ ॥

॥ अथ तामामेव पृथक्तया शशिकलोच्यते ॥

कण्ठे संश्लिष्य गाढं मृदु करजचयं गण्डपाल्यां नितम्बे¹⁰

पृष्ठे पार्श्वोदरे वा विदधदथ रदैः¹¹ खण्डयन्दन्तवासः ।

प्रेम्णा चुम्बल्ललाटे वपुषि च जनयन रोमहर्षं नितान्तं

सीत्कारप्रायवक्रां प्रतिपदि¹² नलिनीं द्रावयेन्ना¹³ विदग्धः ॥ ४ ॥

संचुम्ब्य दन्तवसनं जघने कपाले

पादद्वये स्तनयुगे च नखानि दत्त्वा¹⁴ ।

प्रायः प्रचुद्धमदनां¹⁵ युगलाख्यतिथ्यां¹⁶

कामी नयेद्द्वदशां¹⁷ नलिनीं सहपम्¹⁸ ॥ ५ ॥

गाढालिङ्गनपूर्वकं कुचयुगं संपीड्य दन्तच्छदं

दष्टा¹⁹ चाशु रदैरथोरुफलके यच्छन्नखान्यादरात्²⁰ ।

दोर्मूले सहसासकृच्छ्रितकं कुर्वेश्वतुथ्यां²¹ तिथौ

कामं संप्रतिबोध्य चन्द्रकलया कुर्यान्निजां पद्मिनीम्²² ॥ ६ ॥

दष्टाधरं तदनु पीनकुचौ²³ विमर्द्य

प्रायेण चूचुकयुगं²⁴ परिगृह्य रागात् ।

केशांस्तु²⁵ दक्षिणकरेण विकृष्य मन्दं

कुर्यात्सुविह्वलतनुं किल पञ्चर्माषु ॥ ७ ॥

॥ अथ चित्रिण्याश्चन्द्रकला ॥

अधरं परिचुम्ब्य कन्धरा-

मथ संश्लिष्य नखैर्नितम्बकम् ।

विलिखन्द्रुतमेव चित्रिणीं

ननु²⁶ षष्ठ्यां द्रवतां नयेन्नरः

॥ ८ ॥

कण्ठे संपरिरभ्य बाहुलतया नाभि²⁷ लिखन्पाणिजैः

दष्टा चापि रदच्छदं सपुलकं गृह्णन्नुरोजद्वयम्²⁸ ।

कुर्वन्मन्थमन्दिरे करिकरक्रीडायितं बुद्धिमा-

नष्ट्रम्यां स्मरवारिनिर्झरवती²⁹ कुर्वीत चित्रप्रियाम्

॥ ९ ॥

कर्णोरुस्तनमध्यपृष्ठमदनागारेषु कठ्यां तथा

कामिन्या निजवामपाणिकमलं कान्तः समालोडयन्³⁰ ।

ग्रीवां³¹ पाणिरुहैर्लिखंश्च शनकैश्चुम्बुल्लाटं भृशं

कुर्यादाशु विसृष्टमन्थजलां रामां दशम्यां तिथौ

॥ १० ॥

गाढं संपरिरभ्य गण्डफलके³² चुम्बन्दशंश्चाधरं³³

कर्णश्रोणिनखप्रदानरसिकः कुर्वन्निमेषं दृशोः³⁴ ।

सङ्कर्षश्चिकुरान्विलासकुशलः³⁵ सीत्कारयुक्तां प्रियां

द्वादश्यां त्वरयातिविहलतनुं कुर्यात्पुमांश्चित्रिणीम्

॥ ११ ॥

॥ अथ शङ्खिन्पाश्चन्द्रकला ॥

बाहुभ्यां³⁶ परिरभ्य गाढमधरं दन्तैर्दशभिर्दयं

दोर्मूले खरपाणिजक्षतचयं³⁷ यच्छन्यथेष्टं भृशम् ।

संकुर्वञ्छुरितं कुचद्वयतटे नूनं तृतीयातिथौ³⁸

मुक्तानङ्गजलां स्वकीयवशगां कुर्यान्नरः³⁹ शङ्खिनीम्

॥ १२ ॥

वक्षःकपोलगलकर्णपदेषु यच्छ-

न्प्रायो नखानि परिरभ्य कृतास्यपानः⁴⁰ ।

गाढं बिमर्द्य मदनालयमाशुरीं न

संद्रावयेन्नरवरः किल सप्तमीषु

॥ १३ ॥

परिरभ्य दृढं रदच्छदं

पिवन्नाघातरतो वराङ्गके⁴¹ ।

नखरैः परितो विदारय-

न्स्ववशं शम्भुतिथौ⁴² नयेत्प्रियाम्

॥१४॥

विलिखन्नखरैः⁴³ शिरोधरा-

मथ गृह्णश्च कुचौ ससीत्कृतम्⁴⁴ ।

परिचुम्ब्य कपोलमङ्गनां

श्लथयेदाशु तिथौ मनोभुवः⁴⁵

॥१५॥

॥ अथ हस्तिनीचन्द्रकला ॥

मदनसदनमुच्चैर्पर्दयन्नाभिमूले

तरलितनिजपाणिर्दन्तवासो निपीय⁴⁶ ।

मृदुतरकरजाग्रैः संलिखन्पार्श्वदेशं⁴⁷

कलितकुच इभीनां⁴⁸ वल्लभः स्यान्नवम्याम्

॥१६॥

नयने परिचुम्ब्य कक्षयो-

नखराघातरतः स्मगलये ।

रचयन्करिकेलिमानये-

न्स्ववशं शम्भुतिथौ⁴⁹ द्विपाङ्गनाम्

॥१७॥

नानालिङ्गनचुम्बनानि रचयन्प्रायेण तीक्ष्णैर्नखैः⁵⁰

कक्षोरुस्तनमण्डलान्यकरुणं संदारयन्केलिषु⁵¹ ।

कामागारचुचूलिकाश्रितकरः⁵² संत्यक्तृत्यम्बुकां

दर्शे पूर्णतिथौ च निःसहतुं⁵³ कुर्यान्नरो हस्तिनीम् ॥१८॥

इति श्रीलाङ्कानविनोदाय महाकवि कल्याणमल्लविरचिते

अनङ्गरङ्गे चन्द्रकलानिरूपणं नाम

द्वितीयः स्थलः ॥ २ ॥

अथ तृतीयस्थलः ।

—*~*—

॥ अथ शशमृग्यादिभेदेन सुरतभेदो निरूप्यते ॥

आरोहैर्मदनाङ्कुशस्य पुरुषा ज्ञेयाः सदाथ स्त्रियो

योनीनां परिणाहकै रसनवादित्याङ्कुलीकैः क्रमात्^१ ।

जात्या ते तु नराः^२ शशाश्च वृषभा अध्याम्नर्थवाङ्गना

मृग्यश्वा द्विगदाङ्गनाश्च^३ कथिताः प्राक्मृगिभिः सर्वतः ॥ १ ॥

हरिणीशशयोवृषाश्चयोः

समयोगः^४ करिणीतुङ्गयोः ।

भवतीह परस्परं द्वयो-

नितरां प्रीतिरनङ्गमङ्गे

॥ २ ॥

हरिणीवृषभं^५ तथाश्विका-

तुर्गं चोच्चमिति^६ द्वयं रतम्^७ ।

तुर्गीशशकं द्विपीवृषं

स्मृतमेतद्वितयं तु नीचकम् ।

॥ ३ ॥

कुरङ्गीहययोर्योगे^८ रतमत्युच्चकं विदुः ।

हस्तिनीशशयोश्चाथ^९ रतं स्यादतिनीचकम्

॥ ४ ॥

तत्र प्रशस्यं सुरतं समं स्या-

दुच्चद्वयं मध्यममेव विद्यात् ।

नीचे ऽधमे ऽत्युच्चमथातिनीच-

मत्यन्तनिन्द्यं^{१०} कविभिः प्रदिष्टम्^{११}

॥ ५ ॥

कृमयो रुधिरोद्भवास्त्रिधा
 लघुमध्योरुबलाः स्मरालये ।
 जनयन्ति बलानुसारतो
 बहुकण्डूं वनिताजनस्य ते

॥ ६ ॥

प्रमाणहीनलिङ्गेन सा क^०हूनीपशाम्यति¹² ।

अतो न नीचसम्भोगे¹³ तुष्टिं गच्छन्ति योषितः

॥ ७ ॥

वराङ्गमध्यं नारीणामत्यन्तं कोमलं स्मृतम्¹⁴ ।

अतिप्रमाणलिङ्गेन नातस्तासां¹⁵ सुखं भवेत्

॥ ८ ॥

समप्रमाणलिङ्गेन स्थूलेन सुदृढेन च ।

शमयन्मूलकण्डूति¹⁶ स्पन्दयंश्च मुहुर्मुहुः

॥ ९ ॥

कामकेलिकलाभिज्ञः सुखयन्वित्रधैर्गुणैः¹⁷ ।

विसृष्टकामसलिङ्गां वशीकुर्यान्मृगीदृशम्

॥ १० ॥

नारी विसृष्टकुसुमेषुजला रतान्ते

नृत्यं करोति बहुबलानरोदने¹⁸ च ।

वैकल्यमेति मुकुलीकृतचारुनेत्रा

शक्नोति नो किमपि सोढुमतिप्रयासम्

॥ ११ ॥

चिरमध्यमशीघ्रसम्भवा

नरनार्योस्तु विसृष्टिरुच्यते ।

समयमितिप्रभेदतो¹⁹

नवधैवं सुरतं समीरितम्

॥ १२ ॥

चण्डमध्यममन्दाख्यांस्त्रीन्विगांते²⁰ विदुस्तयोः ।

क्रिया च²¹ त्रिविधा प्रोक्ता लघुमध्यचिरोदया

॥ १३ ॥

अत्रापि कालभेदेन नवधात्वं समूहयेत् ।

सप्तविंशतिसंख्या हि कीर्तितैवं रतिर्बुधैः²²

॥ १४ ॥

प्रचण्डवेगे बहुशो विसृष्टिः

कामाकुलत्वं रतिलोलता च ।

स्यान्मन्दवेगे विपरीतमेत-

त्तन्मध्यभावः²³ खलु मध्यमेषु

॥१५॥

॥ अथ शशस्वरूपं निरूप्यते ॥

प्रायः कोमलकुन्तलाः, पृथुदशः शान्ताश्च तृच्छाशनाः²⁴

सूक्ष्माङ्गाः शुचयः सुवर्तुः सुखास्तुल्याल्पदन्तास्तथा²⁵ ।

विभ्राणाः²⁶ करजानुपादजघनग्रीवोरुतु श्यामतां

धन्याः स्वल्परताः²⁷ सुगन्धिमदनस्यन्दा विनीताः शशाः ॥१६॥

॥ अथ वृषभलक्षणानि ॥

क्रूराः प्रोन्नतमौल्यो दृढभुजाः सुप्रौढवक्षःस्थलाः

रूक्षाः कूर्चनिभोदराश्च वटिनास्त्यागान्विताः पीवराः ।

शोणान्तःस्थिरदीर्घलोचनभृतः स्वारक्तहस्तोदराः²⁸

व्यालोला वृषभा नवाङ्गुः समितं कामाङ्कुशं विभ्रति²⁹

॥१७॥

॥ अथाश्वलक्षणानि ॥

दीर्घस्थूः शिरोरुहाश्चलदतिस्फारेक्षणाः³⁰ क्रोधना

अत्यन्तं कृशदीर्घकंधररदश्रोत्रानना³¹ लोभिनः³² ।

पीनोरः स्थूलदीर्घबाहुयुगला³³ निद्रालवः सालसाः

प्रौढा वक्रनखाङ्घ्रिजानुयुगला³⁴ गम्भीरसंभाषिणः

॥१८॥

धृष्टाः खण्डरते रताश्च नितरां दीर्घाङ्गुलिश्रेणयः

स्थूलस्त्रीरतिशालसा बहुभुजो गत्या तु पृथ्व्यान्विताः ।

भूरिक्षारविगन्धिमन्मथजलप्रायास्तथा³⁵ व्याकुला

आदित्याङ्गुः समितं³⁵ च तुरगा लिङ्गं सदा विभ्रति³⁷

॥१९॥

॥ अथ मृगीलक्षणानि ॥

सान्द्राकुञ्चितकुन्तला समशिरास्तन्वी सुतुङ्गस्तिनी^{३८}
 फुलेन्दीवरलोचनाल्पविवरघ्राणा च तुच्छोदरी^{३९} ।
 आरक्ताधरपाणिपादयुगला पीनोरुकामालया ।

प्रायः कोमलचञ्चलर्जुभुजका^{४०} विन्तीर्णगण्डश्रुतिः^{४१} ॥२०॥

ईर्ष्यालुः सुकुमारिका पिकरमात्यन्तं रते लम्पटा
 विभ्रत्यम्बुजमञ्जुगन्धिमदनस्यन्दं^{४२} तथाल्पाशना ।

सुश्रोणी सरलाङ्गुलिर्गजगतिश्चञ्चनना रागिणी
 ज्ञेया निम्नषडङ्गलैः परिमितं गुह्यं वहन्ती मृगी ॥२१॥

॥ अथ वडालक्षणानि ॥

मौलिं निम्नसमुन्नतं विदधती स्पूलर्जुमान्द्रैः कर्चै-
 नीशाम्भोजदलेक्षणायतगलश्रोत्रानना कोमला ।

पीनश्रोणिपयोधरा शुभगतिर्गम्भीरनाभिहदा
 किञ्चित्पृथाधरा च मांसशुजा क्षमोदरी कोपिनी ॥२२॥

शोशाम्भोजचारुपाणिचरगा निद्रासुभौ व्यपि या
 विस्तीर्णा दधती कटिं चलमनाः कान्ते ऽपुरागान्विता^{४३} ।

कामाम्भः पल्लवगन्धि^{४४} सुचिरात्संभोगकाले द्रवे-
 द्विज्ञेया वडवा नवाङ्गुलमितं गुह्यं वहन्ती बुधैः ॥२३॥

॥ अथ करिणीलक्षणानि ॥

पीनघ्राणकपोलकर्णगलका^{४५} प्रमथू ठलम्बौष्टि हा^{४६}
 पिङ्गाक्षी दरवक्रपर्वनिवहा^{४७} पृथ्वल्पनीलाङ्गका ।

ह्रस्वस्थूलकराङ्घ्रिमाहुयुगला^{४८} मग्भीरुक्षस्वरा^{४९}
 कामार्ता सनतं सुतीक्ष्णदशना दुष्टा च वीरपा^{५०} ॥२४॥

दुःशीला शबलाङ्गिका पृथुकुचा कष्टैकसाध्या रता-

वत्यन्तं⁵¹ बहुभोजना⁵² च नितरां पापेषु बद्धस्पृहा ।

विभ्रत्यैभमदोग्रगन्धमपि⁵³ सा कन्दर्पनीरं सदा

ज्ञेया भानुमिताङ्गुलीकमदनावासा बुधैर्हस्तिनी

॥२५॥

इति निर्दिष्टभेदानां व्यभिचारो ऽपि लक्ष्यते⁵⁴ ।

श्रेष्ठमध्याधमत्वेन सांकर्याच्च विशेषतः⁵⁵

॥२६॥

इति श्रीमल्लाडव्यानविनोदाय महाकविकल्याणमल्लविरचिते

ऽनङ्गरङ्गे जातिविशेषपूर्वकं सुरतभेदनिरूपणं नाम

तृतीयः स्थलः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थः स्थलः ।

—:०:—

॥ अथाङ्गानां समानधर्मा निरूप्यन्ते ॥

यावत्षोडशसंख्यमब्दमुदिता¹ बाला ततस्त्रिशतं²

यावत्स्यात्तरुणीति बाणविशिखप्रख्यं³ तु यावद्भवेत् ।

सा प्रौढेत्यभिधीयते कविवरैर्वृद्धा तदूर्ध्वं⁴ स्मृता

निन्द्या कामकलाकलापविधिषु त्याज्या सदा कर्मिभिः⁵ ॥ १ ॥

बाला नवीनसुरते मुदिता तमिस्रे

संजायते ऽथ तरुणी महति प्रकाशे ।

प्रौढा प्रकाशतमसोः समुपैति सौख्यं

वृद्धा तु न क्वचन जीवितहारिणी⁶ सा

॥ २ ॥

बाला ताम्बूलमालाद्यैस्तरुणी भूरिभूषणैः ।

सुप्रेम्णा रज्यते⁷ प्रौढा वृद्धा त्वालापगौरवैः⁸

॥ ३ ॥

कृशतुरतिदीर्घा निम्नकक्षा च कृष्णा
 सुचिरपतिवियुक्ता कामिनी स्याच्छलथाङ्गी ।
 पृथुलतरशरीरा गौरवर्णा च खर्वा¹⁰
 सततसुरतयोगा¹¹ ब्यूढकक्षा¹² दृढा स्यात्

॥ ४ ॥

॥ अथ प्रकृतिलक्षणानि ॥

श्रेष्ठा बलाशप्रकृतिः¹³ पित्तत्रा मध्यमा स्पृता¹⁴ ।
 अथवा वातत्रा नारी तल्लक्षणापि वक्ष्ये¹⁵

॥ ५ ॥

सुस्निग्धदन्तनखलो वनपद्मयुग्मा¹⁶
 मानोन्नता प्रियतमे सुदृढनुरागा¹⁷ ।
 श्यामाथ शीतमृदुमांसलगुह्यरन्ध्रा¹⁸

॥ ६ ॥

स्यात्पित्तत्रा तु¹⁹ गौराङ्गी शोणलोचनपाणिजा ।
 क्षणं क्रुद्धा²⁰ प्रसन्ना च पीनश्रेणिपयोधरा²¹

॥ ७ ॥

विभर्ति घर्षमलिलं विस्रगन्धि सुबुद्धिका ।
 श्लथकोष्णवराङ्गी²² च कुशत्रा सुरते मृदुः

॥ ८ ॥

वातत्रा तु²³ कठोराङ्गी रूक्षकेशी प्रलापिनी²⁴ ।
 चञ्चला बहुभोज्या च कृष्णपाणिजत्रोचना²⁵

॥ ९ ॥

श्यामा धूसराणां च सुरते कठिना भृशम् ।
गोजिह्वाभखरस्पर्शं विभर्ति मदनालयम्

॥ १० ॥

॥ अथ देवसत्त्वादय उच्यन्ते ॥

प्रसन्नवक्रान्बुजसौरभाङ्गी
 संतोषयुक्ता शुचिकर्षदक्षा²⁶ ।
 प्रियंवदा भूरिधना जनाढ्या
 नारीयमुक्ता किल देवसत्त्वा

॥ ११ ॥

संगीतलीलारसिकातिशान्ता

सुगन्धमाल्यादिरुचिः शुभाङ्गी ।

विज्ञासिनी निर्मलचारुवेषा²⁷

गन्धर्वसत्त्वा वनिता प्रदिष्टा

॥१२॥

अपेतलज्जा मधुमांससक्ता

पीनस्तनी चम्पकयौरदेहा ।

रोषान्विता²⁸ संततभोगवाञ्छा

प्रोक्ता कवीन्द्रैः खलु यक्षसत्त्वा

॥१३॥

आतिथ्यसख्यादिवु²⁹ बद्धभावा-

नुरागिणी निर्मलचित्तवृत्तिः ।

नानाव्रतैरेति³⁰ न च प्रयासं³¹

मनुष्यसत्त्वा परिकीर्तिता सा

॥१४॥

दुश्चारिणी कुत्सितधूरिभोज्या

हृष्टातिदुष्टा³² परितप्तगात्री ।

स्वर्वातिक्रुष्णा³³ सविकारवक्त्रा

माश्रिन्ययुक्तेति³⁴ पितृचसत्त्वा

॥१५॥

व्याकुला भ्रान्तिशीला च सोच्छ्रवासा बहुजृम्भिका³⁵ ।

निशसक्ता³⁶ च सततं नागसत्त्वेति सा स्मृता

॥१६॥

उद्वेगं निष्कलं³⁷ कुर्यान्नेत्रे संप्रामयेन्मुहुः³⁸ ।

अतिक्षुयार्ता सततं³⁹ काकसत्त्वेति सोच्यते⁴⁰

॥१७॥

मय्यन्तचाला⁴¹ या तु सततं भ्रान्त्योचना ।

दन्तसंगरसक्ता च⁴² कृपितत्त्वेति तां विदुः⁴³

॥१८॥

जभावदुष्टा⁴⁴ वाक्यानि विप्रियाप्येव भाषते⁴⁵ ।

अपेतरागा स्नानादौ⁴⁶ खरसत्त्वेति⁴⁷ सा स्मृता

॥१९॥

जातिसत्त्वादयो ये तु नारीणामत्र भाषिताः ⁴⁸ ।

प्रधाना ⁴⁹ प्रकृतिर्ज्ञेया तेषु सर्वेषु पण्डितैः ॥२०॥

॥ अथ स्त्रीणां नाशहेतव उच्यन्ते ॥

पितृसदननिवासः, संगतिः पुंश्चलीभिः,
प्रवसनमपि पत्युर्वाङ्मिकं सेव्यता च ⁵⁰ ।
वसतिरपरपुंभिर्दुष्टशीलैरवश्यं ⁵¹
क्षतिरपि निजवृत्तेर्योपिनां ⁵² नाशहेतुः । ॥२१॥

॥ अथ वैराग्यहेतवः ॥ ✓

कार्पण्यादतिमानरोगविरोहो योगदियारुण्यतो

मालिन्यासमयज्ञादिभयनः ⁵³ शोकादरिद्रादपि ।

भर्तृणां तनुनादिभिश्च ⁵⁴ वपुषः काठिन्यनः शङ्कना-

होषाणां च वृथा प्रयान्ति ⁵⁵ वनिना वैराग्यभुञ्जैः सदा ॥२२॥

॥ अथ विरक्तालक्षणानि ॥ ✓

नाभिपश्यति भर्तारं नोत्तरं संप्रयच्छति ⁵⁶ ।

वियोगे सुखमाप्नोति संयोगे चातितीदति ⁵⁷ । ॥२३॥

शय्यामुपगता शेते वदनं मार्ष्टि चुम्बिता ।

तन्मित्रैर्द्वेषि मानं च विरक्ता नाभिव्राञ्छति ॥२४॥

॥ अथ प्रीतिलक्षणम् ॥

नैसर्गिकी विषयजा समा चाभ्यासिकी तथा ।

चतुर्विधेति विद्वद्भिर्दम्पत्योः प्रीतिरुच्यते ॥२५॥

अभ्यासविषयासाध्या ⁵⁸ दम्पत्योः सहजा तु या ⁵⁹ ।

सान्द्रा निगडभूता च ⁶⁰ प्रीतिर्नैसर्गिकी मता ⁶¹ ॥२६॥

मालाचन्दनभोज्याद्यैर्विषयैर्विथिता तु या ।
 प्रीतिर्विषयजा सोक्ता⁶² समयोगे समा स्मृता ॥२७॥
 आखेटदेवपूजादिकेलिसंगीतकर्मसु ।
 अभ्यासयोगाद्या वृद्धिं याति साभ्यासिकी मता⁶³ ॥२८॥

॥ अथ भोजनादिव्यवस्था ॥

भोजनं द्विगुणं स्त्रीणां बुद्धिः कृत्ये चतुर्गुणा ।
 निश्चयः षड्गुणः⁶⁴ पुंभ्यः⁶⁵ कामश्चाष्टगुणः स्मृतः⁶⁶ ॥२९॥

॥ अथ योनिस्वरूपं निरूप्यते ॥ ✓

योनिरभ्यन्तरे कापि पद्मकिञ्चल्ककामला⁶⁷ ।
 कापि स्याद्दुटिकाकीर्णा काचिद्वलिवयाकुला ॥३०॥
 गोजिह्वाभस्वरस्पर्शा काचिदभ्यन्तरे भवेत्⁶⁸ ।
 पूर्वपूर्वतरा तासु श्रेष्ठा ज्ञेया⁶⁹ विवक्षणैः ॥३१॥
 योनिमध्ये ऽस्ति नाड्येका⁷⁰ कामाङ्कुशसमा हि या⁷¹ ।
 लिङ्गेन क्षोभिता सैव मदवारि⁷² निरन्तरम् ॥३२॥
 कामातपत्रात्सजति⁷³ स(स्यन्दे) इति कीर्त्यते ।
 वराङ्गसन्ध्रदूर्ध्व⁷⁴ तु नासिकाभं यदस्ति तत्⁷⁵ ॥३३॥

मन्मथच्छत्रमित्याहुराढ्यं मदशिराचयैः⁷⁶ ।
 योनिरन्ध्रे⁷⁷ नातिदूरात्पूर्णचन्द्रास्ति नाडिका ॥३४॥
 मनोजवारिसंपूर्णा स्त्रीणां तिष्ठति सर्वदा ।
 तद्विष्टया⁷⁸ द्रुता नारी प्रोच्यते पूर्वमूरिभिः ॥३५॥

॥ अथाल्पसाध्योच्यते ॥ ✓

रङ्गादिश्रान्तदेहा⁷⁹ चिरविरहवती मासमात्रप्रसूता
 गर्भालस्या च नव्यज्वरयुततनुका⁸⁰ त्यक्तमानप्रसन्ना ।

स्नाता पुष्पावसाने नवरतिसमये मेघकाले वसन्ते ⁸¹

प्रायः सम्पन्नरागा मृगशिशुनयना स्वल्पसाध्या रते स्यात् ॥३६॥

कन्दर्पयुद्धे प्रथमे ऽल्पभावा-

श्विरेण तृप्तिं वनिता लभन्ते ।

शीघ्रं द्वितीये धृतभूरिभावाः

पुंसः ⁸² क्रमोऽयं विपरीत उक्तः

॥३७॥

॥ अथ रताभिलाषचिन्हानि प्रोच्यन्ते ॥

संगृह्णात्यलकान्मुहुः स्तनयुगं ⁸³ वस्त्रेण नाच्छादये-

दन्तेनाप्यधरं दशेच्च विरमेत्सन्जातलज्जा क्षणम् ।

प्रायश्चुम्बति बालकं निजवपुः संभङ्गते जृम्भते

रथ्यां चापि रुणद्धि पश्यति च दोर्मूलं हसत्याद्दरात्

॥३८॥

आलिङ्गित्स्वसखीं प्रियं प्रलपति ⁸⁴ प्रत्युत्तरं याचते ⁸⁵

रुव्यक्तं ⁸⁶ न च भाषते स्मितमुखी व्रीडां वृथा धारयेत् ।

व्याजेनैव विलम्बते प्रकुरुते ⁸⁷ मौलौ ⁸⁸ च कण्डूयनं

नारीणां सुरतस्पृहा ⁸⁹ बुधजनैर्ज्ञेयेति भावैः सदा

॥३९॥

इति श्रीलाडखानविनोदाय महाकवि कल्याणमल्लविरचिते

ऽनङ्गरङ्गे सामान्यधर्मनिरूपणं नाम

चतुर्थः स्थलः ॥ ४ ॥

—*ॐ*—

अथ पञ्चमः स्थलः ।

॥ अथ वनितानां देशधर्मा उच्यन्ते ॥

विचित्रवेषा शुचिकर्मदक्षा
सुशीलिनी दन्तनखाद्विरक्ता ।
मनोजसंग्रामविनोदरङ्गा^१
स्यान्मध्यदेशप्रभवा^२ पुरन्ध्री ॥ १ ॥

उपभोगकलानुरागिणी
चिरसम्भोगरसप्रतापिणी^३ ।
करघातननुप्रमानसा
वनिता मालवदेशसम्भवा ॥ २ ॥

अभिघातहृत्पिरिञ्जयते
नखदन्तैः परिरम्भलालसा^४ ।
बहुचुम्बनहार्यमानसा^५
वनिताभीरसमुद्भवा स्मृता ॥ ३ ॥

परिरम्भणलोलुपा रद-
क्षतघातैर्द्रवमेति^६ सत्वरम् ।
सुकुपारतनुर्मनोरमा
सुरते नृत्यति लाटकामिनी । ॥ ४ ॥

मृद्धी दुराचाररता वहन्ती^७
रतार्तिमुच्चैरपि नर्मदक्षा^८ ।

त्रपाविहीनातिमनोरमाङ्गी
स्यादान्त्रकर्णाटभवा^९ पुरन्ध्री ॥ ५ ॥

नितान्तकण्डूतियुतस्मरालया^{१०}
द्रवन्ति चण्डध्वजघातनाच्चिरम्^{११} ।
रतिप्रयोगे^{१२} चतराश्व योषितः
प्रकीर्तिताः कोसलराष्ट्रसम्भवाः^{१३} ॥ ६ ॥

ईपद्मासमनोरमाश्च नितरां साक्षेयवाग्निभ्रमा
निर्लज्जाश्चपलाः कलासु कुशला गाढानुरागान्विताः ।
नार्यः पाटलिपुत्रजा अपि महाराष्ट्रोद्भवाः^{१४} संततं
नानावेषविनोद्भावसिक्ताः सङ्कीर्तिताः पण्डितैः ॥ ७ ॥

कुसुममृदुशरीरा चुम्बनालिङ्गनादौ
बहुतरधृतभावा^{१५} क्रूरचेष्टा विरक्ता^{१६} ।
विषमविशिखयुद्धे स्तोकवेगा पुरन्ध्री
भवति तरलनेत्रा^{१७} वङ्गजा गौडजा^{१८} च ॥ ८ ॥

विपरीतरताभिः शशिपिणी
गतलज्जा नखदानतोषिणी^{१९} ।
नितरामनुरागशालिनी
मदनार्ता कथितैव मुत्कली^{२०} ॥ ९ ॥

प्रियंवदा कोमलदेहवल्ली
भृशं द्रवन्ती स्मरकेन्द्रिरङ्गे^{२१} ।
विश्रसदक्षा प्रचुरानुरागा
स्यात्कामरूपप्रभवा पुरन्ध्री ॥ १० ॥

निजदोषनिगूडने^{२२} रताः
परदोषप्रदृणेषु तत्पराः ।

- वनिता वनवाससम्भवा
 दृढदेहाः परिकीर्तिता बुधैः ॥११॥
- उपभोगरता सुलोचना
 लघुसम्भोगविधिप्रतोषिणी^{२५} ।
 शुभवेषधरा विचक्षणा
 कथिता सा^{२४} खलु गुर्जरी बुधैः ॥१२॥
- प्रचण्डवेगा अतिकष्टसाध्याः
 सुकोपवत्यश्चलनेत्रपाताः^{२५} ।
 भवन्ति दुष्टाः किल^{२६} सिन्धुजाता-
 ष्ववन्तिबाह्लीकभवाश्च नार्यैः^{२७} ॥१३॥
- नानोपभोगरसिका रतिरङ्गदक्षा
 प्रोत्फुल्लपद्मनयना^{२८} प्रियवद्गरागा ।
 कन्दर्पदर्पपरिदीपनभावशीला^{२९}
 ज्ञेया बुधैर्मृदुगतिः^{३०} खलु तीरशुक्ता^{३१} ॥१४॥
- सम्भोगशिक्षाकुशलाः सलज्जाः
 प्रियोपभोगा अतिचण्डवेगाः ।
 मनोरमाः पुष्पपुरप्रसूताः^{३२}
 स्युरङ्गजा मद्रतिलङ्गजाश्च^{३३} ॥१५॥
- मृद्यः सुवाचो लघुभोगसाध्याः
 ससाहसा^{३४} वीतभयत्रपाश्च ।
 समानरूपा द्रविडे प्रजाताः^{३५}
 सौवीरभेदे^{३६} मलये च नार्यैः ॥१६॥
- नखादिविन्यासकलाविहीनाः^{३७}
 सम्भोगसंपर्दनजाततोषाः^{३८} ।

स्वभावतो दुष्टतमाः^{३९} प्रचण्डाः
काम्बोजपौण्ड्रप्रभवाः^{४०} पुरन्ध्रयः^{४१} ॥१७॥

दुर्गन्धिगात्रा लघुभोगतुष्टाः
संचुम्बनाश्लेषणभावहीनाः^{४२} ।
म्लेच्छाङ्गनाः पर्वतजाश्च नार्यो
गाध्याश्च^{४३} काश्मीरभवास्तथैव^{४४} ॥१८॥

जात्यादिसात्म्यमिति तत्त्वत एव^{४५} यस्तु
ज्ञात्वा नरः सकलकामकलाप्रवीणः ।
सन्तोषयेच्च^{४६} सततं सुरतप्रयोगे^{४७}
प्राणैः समत्वमुपयाति स^{४८} कामिनीनाम् ॥१९॥

इति श्रीमल्लाडखानविनोदाय महाकविकल्याणमल्ल विरचिते

ऽनङ्गरङ्गे जात्यादिधर्मनिरूपणं नाम

पञ्चमः स्थलः ॥ १ ॥

— * —

अथ षष्ठः स्थलः ।

— : ८ : —

॥ अथ द्रावणादियोगा निरूप्यन्ते ॥

प्रागेव पुंसः सुरते न याव-
न्नारी द्रुधेद्रोगफलं न तावत् ।
अतो बुधैः कामकलाप्रवीणैः^१
कार्यः प्रयत्नो वनिताद्रवत्वे ॥ १ ॥

जात्यादिसात्म्यं^२ दुर्ज्ञेयं^३ साङ्कर्यादिविशेषतः ।

अत एवः तिसौश्याश्च कलापीन्दोरगोचरा^४ ॥ २ ॥

तस्माल्लोकहितार्थाय दम्पत्योः सुखसिद्धये ।

न्रनौषधविधानेन द्रवयुक्तिरुदीर्यते

॥ ३ ॥

मधुना सहितं घोषाचूर्णं^५ यस्या वराङ्गके ।

निक्षिप्यते नताङ्गी सा पुंसः प्राग्द्रवतां व्रजेत्^६

॥ ४ ॥

शुद्धं शङ्करबीजं च जातीरसविमर्दितम्^७ ।

वराङ्गमध्ये निक्षिप्तं नारीं सन्द्रावयेद्दुतम्^८

॥ ५ ॥

चिञ्चाफलं ससिन्दूरं^९ माक्षिकेण समन्वितम् ।

क्षिप्तं गुह्यान्तरे योषां^{१०} प्रागेव द्रवतां नयेत्

॥ ६ ॥

कर्पूरं टङ्कणं शम्भुबीजं चेति^{११} त्रिभिः समैः ।

सक्षौद्रैर्लिप्तलिङ्गस्तु^{१२} नरः सन्द्रावयेत्प्रियाम्^{१३}

॥ ७ ॥

मध्वाज्यागस्त्यपत्रोत्थ रससंमर्दितेन च^{१४} ।

ढङ्कणेन ध्वजं लिप्त्वा द्रावयेद्वलां नरः^{१५}

॥ ८ ॥

जीर्णो गुडश्चिञ्चिकाफलं च

घोषारज^{१६} क्षौद्रयुतं समांशम् ।

एभिर्ध्वजं यः परिलिप्य शेते^{१७}

कुर्यात्स^{१८} रेतश्शुतिमङ्गनानाम्

॥ ९ ॥

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रयुक्तै^{१९}-

र्विमलमधुविमिश्रैर्मानशो लिप्तलिङ्गः ।

स्मरसगरविलासे कष्टसाध्यां च नारी^{२०}-

मपगततरागां^{२१} संविदध्यादवश्यम्^{२२}

॥ १० ॥

॥ अथ स्तम्भनविधिः ॥

पतनान्मदनाम्भसो द्रुतं^{२३}

परितोषो न भवेद्विलासिनाम्^{२४} ।

सुरतोत्सवसिद्धिहेतवे

तदयं स्तम्भविधिर्निरूप्यते

॥११॥

लज्जालुमूलं^{२५} गोक्षीरैर्वज्रीक्षीरेण वा पुनः ।

पिष्ट्वा स्वपादौ संलिप्य चिराद्बीजं^{२६} न मुञ्चति^{२७}

॥१२॥

अथ कौसुम्भतेलेन वर्षाभूरजसापि वा ।

लिप्तपादः पुमानेतो न जहाति रते द्रुतम्^{२८}

॥१३॥

सितायाः काकजङ्घाया मूलं^{२९} श्वेताब्जकेसरम्^{३०} ।

क्षौद्रेण नाभिसंलेपाद्बीजं स्तम्भ्नाति^{३१} कामिनः

॥१४॥

शम्याकं^{३२} शम्भुबीजं च कर्पूरं^{३३} च^{३४} समांशकम् ।

मधुना लेपयेन्नाभौ^{३५} यः स बीजं^{३६} न मुञ्चति

॥१५॥

सितकोकिलवृक्षस्य^{३७} बीजं पुष्योद्धृतं कटौ ।

बद्धं लोहितमूत्रेण बीजस्तम्भं करोत्यलम्^{३८}

॥१६॥

सप्तपर्णस्य बीजं वा^{३९} रविवारे समुद्धृतम् ।

वक्त्रे धृतं नृणां बीजं स्तम्भ्नाति सुरते चिरम्

॥१७॥

श्वेतेषुपुङ्खामूलं^{४०} वा पुष्याके प्राप्य यः कटौ ।

कन्याकर्तितमूत्रेण वध्नाति स^{४१} भजेच्चिरम्

॥१८॥

बीजं सितपिकारुस्य वटक्षीरेण पेपितम् ।

करञ्जबीजमध्यस्थं स्तम्भयेद्वदने^{४२} धृतम्

॥१९॥

॥ अथ वाजीकरणविधिः ॥

शक्तेरभावात्स्तम्भादि^{४३} सर्वमेवाप्रयोजकम् ।

अतः^{४४} शरीरपुष्ट्यर्थं वाजीकरणमुच्यते

॥२०॥

चूर्णं विदार्याः स्वरसैर्भाषितं भानुशोषितम् ।

मध्वाज्यमिभितं लीढ्वा^{४५} भजते वनिता दश

॥२१॥

- स्वरसैर्भावितं⁴⁶ धात्रीचूर्णपाज्यसितान्वितम् ।
 क्षौद्रेण विलिहत्रात्रौ⁴⁷ वृद्धोऽपि तरुणायते ॥२२॥
- कपिगोक्षुरगोरक्षबलानागबलाभवम्⁴⁸ ।
 चूर्णं च शतपत्रायाः⁴⁹ पीतं क्षीरेण⁵⁰ पौष्टिकम् ॥२३॥
- सितासाधितगोक्षीरे⁵¹ माषान्सम्भाव्य शोषयेत् ।
 भानुपादैः पुनस्तेषां चूर्णस्य वटकं शुभम्⁵² ॥२४॥
- कृत्वा घृतेन संसाध्य प्रदोषे भक्षयेत्सदा ।
 वृद्धोऽपि प्रबलो⁵³ भूत्वा वनितानां शतं व्रजेत्⁵⁴ ॥२५॥
- मध्वाहचूर्णकर्षं⁵⁵ वा लीढ्वा⁵⁶ मध्वाज्यमिश्रितम् ।
 पिबेत्तदनु गोक्षीरं यः स नारीशतं भजेत्⁵⁷ ॥२६॥
- बीजं सितपिक्वाक्षस्य⁵⁸ तण्डुलाः षष्टिकोद्भवाः⁵⁹ ।
 द्वयोः कर्षं लिहत्रात्रौ मधुना दृढतां व्रजेत् ॥२७॥
- शतपत्रारसं⁶⁰ सर्पिः तुल्यं तदशधा पयः⁶¹ ।
 दत्त्वा संसाधितं क्षौद्रसिताभ्यां पौष्टिकं परम्⁶² ॥२८॥
- मृतायस्त्रिफलायष्टीचूर्णं⁶³ मधुघृतान्वितम् ।
 दिनान्ते लेढि यो नित्यं⁶⁴ स नारीं सुरते जयेत् ॥२९॥
- ॥ अथ लिङ्गस्थूलीकरणम् ॥
- लघु सूक्ष्मेण लिङ्गेन नैव तुष्यन्ति योषितः ।
 अतस्तत्प्रीतये⁶⁵ वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥३०॥
- बला नागबला कुष्ठं वचा द्विरदपिप्पली ।
 वाजिगन्धा ह्यरिपुरिति⁶⁶ सर्वं समांशकम् ॥३१॥
- संचूर्ण्य⁶⁷ नवनीतेन लिङ्गलेपो विधीयते⁶⁸ ।
 सुहूर्तादतिमूक्षं च⁶⁹ वाजिलिङ्गसमं भवेत् ॥३२॥

जातीरसशिलाकुष्ठत्योषट्क्रेणचृणकैः ।

तिलतैलयुतैलेपाहिङ्गशुद्धिः प्रजायते ⁶⁰ ॥३३॥

सैन्धवं मरिचं कुष्ठं बृहती खरमञ्जरी ।

हयगन्धा यवा माषा पिप्पली गौरसर्षपाः ॥३४॥

तिलतैलेन संपिष्य मधुरोद्वर्तनं बुधः ⁷¹ ।

प्रयोजयेत्कर्णपालीस्तनलिङ्गविवर्धनम् ⁷² ॥३५॥

भल्लातं कृष्णलवणं ⁷³ नलिनीदलमेव च ।

दग्ध्वा तद्भस्म बृहतीफलजेनाम्भसा सह ॥३६॥

महिषीगोमयैः पूर्वं घृष्टलिङ्गे ⁷⁴ विलेपयेत् ⁷⁵ ।

तत्क्षणान्मुसलाकारं दृढं चैव भवेदलम् ⁷⁶ ॥३७॥

लोध्रकासीसमातङ्गबलाकल्कैर्मिलोद्भवम् ⁷⁷ ।

तैलं संसाधितं लिङ्गयोनिकर्णविवर्धनम् ⁷⁸ ॥३८॥

॥ अथ योनिमेकाचनविधिः ॥

प्रौढानवप्रसूतानां ⁷⁹ श्लथं ⁸⁰ गुधं न गेचते ।

यूनामतस्तत्संकोचविधिं संक्षेपतो ध्रुवे ⁸¹ ॥३९॥

सनालं कमलं ⁸² पिष्ट्वा पयसा कारयेद्वर्टीम् ।

तां निधाय ⁸³ क्षणं यानो वृद्धापि म्यात्कुमारिका ॥४०॥

देवदारुनिशायुग्मसरसीरुहकेसरैः ⁸⁴ ।

संलिप्तं मदनच्छत्रं संकोचं परमं व्रजेत् ⁸⁵ ॥४१॥

लिप्त्वा पिकाक्षबीजैश्च ⁸⁶ वारिपिष्टैः स्मरालयम् ।

नियमेन परं गाढं वराङ्गं लभतेऽङ्गना ॥४२॥

त्रिफलाधातकीपुष्पजम्बुत्वक्समावरैः ⁸⁷ समैः ।

सक्षौद्रैर्लिप्तगुद्या ⁸⁸ च कन्येव जरता ⁸⁹ भयेत् ॥४३॥

कदुतम्बीभवैबीजैः सलोध्रैः स्मरमन्दिरम् ।

लिप्त्वा नवप्रसूतापि ⁹⁰ ध्रुवं कन्येव जायते ॥४४॥

वाजिगन्धावचाव्योषनिशेन्दीवरकुष्ठकैः⁹¹ ।

तोयपिष्टैः स्मरागारं लिप्तं गाढतरं⁹² भवेत् ॥४५॥
 मधुककाष्ठसारेण⁹³ श्लक्ष्णेन⁹⁴ मधुना सह ।
 वराङ्गं पूरितं यत्नादत्यन्तं दृढतां व्रजेत्⁹⁵ ॥४६॥

॥ अथ योनिमंस्कारः ॥

लघुघ्नौ⁹⁶ सार्षपं तैलं जातिपुष्पैः प्रसाधयेत् ।

नारीगुह्यं तदभ्यङ्गात्सुगन्धि सुरते भवेत्⁹⁷ ॥४७॥
 सुरदारुतिलारिष्टदाडिमाञ्जनकाञ्चनैः⁹⁸ ।

तैलं सुसिद्धमभ्यङ्गाद्योनिं सुरभितां नयेत्⁹⁹ ॥४८॥

॥ अथ लोमशातनम् ॥

कटुतैले नागचूर्णं क्षिप्त्वा सप्ताहमातपे ।

निधेयं मर्दनात्तत्तु योनिलोमापहारकम्¹⁰⁰ ॥४९॥
 सप्ताहं¹⁰¹ भावितं शङ्खभस्म रम्भाम्भसा ततः¹⁰² ।

तालेन युक्तं हरति योनिलोमानि योषिताम्¹⁰³ ॥५०॥
 हरितालं पलाशस्य भस्म रम्भाजलान्वितम् ।

एतस्य लेपालोमानि¹⁰⁴ न रोहन्ति कदाचन ॥५१॥

॥ अथ नष्टपुष्पमृद्भवविधिः ॥

भृष्टं¹⁰⁵ ज्योतिष्मतीपत्रं जपापुष्पं¹⁰⁶ च वारिणा ।

पिष्ट्वा पिबति सा भूयो नष्टपुष्पं प्रविन्दति¹⁰⁷ ॥५२॥
 तण्डुला देवकाष्ठं च दूर्वापत्रं समं त्रयम्¹⁰⁸ ।

वारिपिष्टं¹⁰⁹ पिबेद्या च¹¹⁰ नष्टपुष्पं¹¹¹ लभेत सा¹¹² ॥५३॥

॥ अथ पुष्पाधिक्यनिवारणम् ॥

पथ्या रसाञ्जनं धात्री त्रयं पिष्ट्वाभ्भसा¹¹³ समम् ।

पिबेद्यात्यधिकं¹¹⁴ पुष्पं सप्ताहात्परिनाशयेत्¹¹⁵ ॥५४॥

कपित्थं वेणुपत्रं च समांशं मधुना सह ।

लीढं सप्ताहमाधिक्यं¹¹⁶ पुष्पस्योपशमं नयेत्

॥५५॥

॥ अथ गर्भाधानविधिः ॥

रुक्मकाञ्चनताम्राणां भस्म क्षौद्रान्वितं त्र्यहात्¹¹⁷ ।

लीढं पुष्पान्तके¹¹⁸ स्त्रीभिः क्षेत्रशुद्धिं परां दिशेत्

॥५६॥

नागकेसरचूर्णं वा¹¹⁹ स्नाताज्येन पिवेत्रचहम्¹²⁰ ।

क्षीरभृग्भर्तृसंसर्गाद्गर्भं¹²¹ धत्तेऽङ्गना ध्रुवम्

॥५७॥

वाज्रिगन्धामृतासर्जिकाथं¹²² स्नानदिने पिवेत् ।

सापि पुंयोगतो नारी गर्भं धत्ते न संशयः

॥५८॥

शृङ्गवेगोपणक्षुद्राकणाकेसरजं¹²³ रजः ।

गोघृतेन पिवेद्या तु बन्ध्यापि लभते सुतम्

॥५९॥

पुष्योद्धृतं लक्ष्मणाजं¹²⁴ मूलं भर्त्राभिपेपितम्¹²⁵ ।

पिवेद्घृतेन¹²⁶ सा गर्भं धत्ते क्षीराशनाद्भुवम्¹²⁷

॥६०॥

वीजपूरम्य मूलं वा क्षीरसिद्धं¹²⁸ घृतान्वितम् ।

ऋतौ¹²⁹ त्र्यहं पिवेद्या सा गर्भं धत्ते न संशयः¹³⁰

॥६१॥

पुष्योद्धृतं¹³¹ श्वेतबलामूलं कर्पं च तत्समम् ।

यष्टीचूर्णं¹³² सितायास्तु पलमेकं विमिश्रयेत्

॥६२॥

पिष्ट्वा गोरेकवर्णायाः सवत्सायास्तथा पयः¹³³ ।

आदाय क्षिप्त्वा तन्मध्ये पिवेत्स्नाता वराङ्गना

॥६३॥

न खादेत्तदिने किञ्चिदथ रात्रौ पतिं व्रजेत्¹³⁴ ।

प्रातः¹³⁵ क्षीरौदनं भक्षेद्गर्भिणी¹³⁶ स्यादसंशयम्

॥६४॥

॥ अथ गर्भस्तम्भनविधिः ॥

कुलालपाणिसंलग्नः पङ्कः क्षौद्रसमन्वितः¹³⁷ ।

अजाक्षीरेण सम्पीतो¹³⁸ गर्भस्तम्भं करोत्यलम्

॥६५॥

यष्टीसावरधार्त्रीणां¹³⁹ चूर्णं¹⁴⁰ पीतं पयोन्वितम् ।

सप्ताहाच्चलितं गर्भं स्त्रीणां संस्तम्भयेद्भुवम्¹⁴¹ ॥६६॥

कन्दं लोहितपद्मस्य¹⁴² श्रीराज्यमधुसंयुतम् ।

सुपकं शीतलं कृत्वा सप्ताहं याङ्गना¹⁴³ पिवेत् ॥६७॥

गर्भस्त्रावं तथा वान्ति¹⁴⁴ शूलं शोथं¹⁴⁵ त्रिदोषजम् ।

अन्यांश्च बहूशो¹⁴⁶ गंगान्नाशयेन्नात्र संशयः ॥६८॥

॥ अथ सुखप्रमथविधिः ॥

मातुलङ्गमधूकोत्थं¹⁴⁷ चूर्णं मधुघृतान्वितम् ।

पीत्वा सूते सुखं नारी¹⁴⁸ शीघ्रमेव न संशयः ॥६९॥

गृहधूमं समादाय पिवेत्पर्युपिताम्भसा ।

या सा सूते सुखेनैव शीघ्रमेव वराङ्गना ॥७०॥

रविवारे गृहीतस्य गुञ्जामूलस्य बन्धनात् ।

नीलमूत्रैः कटौ मूर्ध्नि जायते प्रसवो द्रुतम्¹⁵⁰ ॥७१॥

ओं मन्मथ मथ मथ¹⁵¹ वाहिलि वालस्योदरं¹⁵² मुञ्च मुञ्च लघु स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण संजप्तं पातुं देयं जलं बुधैः ।

सूते ऽङ्गना सुखं शीघ्रं मन्त्रराजप्रसादतः ॥७२॥

॥ अथ बन्ध्यात्वापादनम् ॥

गुडं त्रैहायनं यात्ति¹⁵³ पलमात्रं तु नित्यशः ।

मासार्धं सा¹⁵⁴ भवेद्बन्ध्या यावदायुर्न संशयः ॥७३॥

तुषतोयेन संकाथ्य मूलमग्नितरुद्भवम्¹⁵⁵ ।

पुष्पावसाने त्रिदिनं पीत्वा बन्ध्याभिजायते¹⁵⁶ ॥७४॥

कदम्बस्य¹⁵⁷ फलं पादं मक्षिकाया¹⁵⁸ दिनत्रयम् ।

पीतमुष्णोदकेनैतद्बन्ध्यात्वं¹⁵⁹ प्रतिपादयेत् ॥७५॥

रक्षोभरुहवीजानां¹⁶⁰ पलार्धं तण्डुलाम्भसा ।

ऋतौ पीतं¹⁶¹ तु सप्ताहं बन्ध्यां कुर्यान्मृगीदृशम्¹⁶² ॥७६॥

॥ अथ केशोद्भवरञ्जनविधिः ॥

गव्येन पयसा पिष्टं¹⁶³ तिलपुष्पं सगोक्षुरम्¹⁶⁴ ।

सप्ताहलेपनात्कुर्वाण्केशान्दीर्घान्वहृनपि ॥७७॥

दन्तीसावरकल्केन सिद्धं तैलं¹⁶⁵ तिलोद्भवम् ।

पीतं¹⁶⁶ काश्यपे च स्वर्धन्वं केशानां हन्ति लेपनात्¹⁶⁷ ॥७८॥

गुञ्जाफलरजः क्षौद्रयुक्तं लेपान्निहन्त्यलम्¹⁶⁸ ।

इन्द्रलुप्तं तथा केशवाद्यारोहणकारणम्¹⁶⁹ ॥७९॥

दग्धेभदन्तं¹⁷⁰ सुश्लक्ष्णं पिष्ट्वा तेन प्रलेपयेत्¹⁷¹ ।

इन्द्रलुप्तं क्षयं याति केशा रोहति भूरिशः¹⁷² ॥८०॥

आम्रप्रमूनं त्रिफला न्वक्पाण्डवतरोरपि ।

पिण्डारकं चेति¹⁷³ कल्कैस्तिलतैलं प्रसाधयेत् ॥८१॥

नीलतैलमिति¹⁷⁴ ख्यातं केशसंरञ्जनं¹⁷⁵ परम् ।

क्षिप्तोऽत्र हंसपक्षोऽपि ध्रुवं मेचकतां व्रजेत्¹⁷⁶ ॥८२॥

माजूफलकणानीलीसैन्धवैः¹⁷⁷ भारनालकैः¹⁷⁸ ।

पिष्टैः¹⁷⁹ शिरोरुहा लिप्ताः श्यामवर्णा भवन्त्यलम्¹⁸⁰ ॥८३॥

निम्बतैलं पलं¹⁸¹ नित्यं मामैकं यः पिबेन्नरः ।

शुक्लाः केशाः क्रमेणैव तस्य यान्त्यलितुल्यताम् ॥८४॥

गोरोचना¹⁸² कृष्णातिलाः काकमाची शतावरी ।

अर्माभिश्चिकुरा लिप्ताः श्यामतां यान्ति सत्वरम् ॥८५॥

॥ अथ केशश्वेतीकरणम् ॥

तिलानां सुहिदुग्धेन भावितानां तु यद्भवेत् ।

तैलं तलेपनात्केशाः स्फटिकाभा भवन्ति हि ॥८६॥

वज्रीक्षीरेण या धात्री¹⁸³ भाविता मज्जनात्तया¹⁸⁴ ।

तत्क्षणादेव¹⁸⁵ मर्त्यानां निपतन्ति स्वयं कचाः ॥८७॥

॥ अथ मुखकटकहरणम् ॥

वचासावरधान्यानां लेपनाद्यौवनोद्भवाः¹⁸⁶ ।

मुखस्थाः¹⁸⁷ - पिटका यान्ति नरनार्योः क्षयं त्र्यहात्¹⁸⁸ ॥

कण्टकैः शाल्मलीयैश्च क्षीरपिष्टैर्विलेपयेत्¹⁸⁹ ।

मुखं तस्यापि पिटका¹⁹⁰ नाशं गच्छन्त्यसंशयम् ॥८९॥

लोध्रसैन्धवसिद्धार्थवचानां परिलेपनात् ।

गण्डस्थाः पिटका यान्ति देहिनां संक्षयं क्रमात्¹⁹¹ ॥९०॥

॥ अथ मुखनीलीहरणम् ॥

तिलद्विजीरसिद्धार्थान्पिष्ट्वा क्षीरेण¹⁹² लेपयेत् ।

यः सप्ताहं जयेन्नीलीं चन्द्रवद्वदनं भवेत् ॥९१॥

गैरिकं शोणयष्टी¹⁹³ च मेघनादो¹⁹⁴ निशाद्वयम् ।

पिष्ट्वा रम्भाम्भसा लेपात्सप्ताहं¹⁹⁵ नीलिकां जयेत् ॥९२॥

॥ अथ कुचसंस्कारः ॥

वाजिगन्धावचाकुष्ठकणाश्वारिलवङ्गकम्¹⁹⁶ ।

नवनीताम्बुसंमिश्रं¹⁹⁷ लेपात्कुर्यात्कुचान्पृथूनं¹⁹⁸ ॥९३॥

कौलमज्जा हयारिश्च भुजगस्य वसा समा ।

एतेषां मर्दनात्स्त्रीणां कुचाः¹⁹⁹ संयान्ति पीनताम् ॥९४॥

श्रीपर्णीरससंसिद्धतिलतैलविलेपनात्²⁰⁰ ।

पतितावपि संकुर्यात्पीनोत्तुङ्गौ²⁰¹ कुचौ स्त्रियाः ॥९५॥

दाडिमीकल्कसंसिद्धकटुतैलविमर्दनम्²⁰² ।

स्तनौ चारुतरौ पीनौ नित्यं कुर्यान्मृगीदृशः²⁰³ ॥९६॥

तैलं तिलोद्भवं²⁰⁴ गव्यं घृतं चार्कपयः समम् ।

बला श्यामलता व्योषं लज्जालुश्च²⁰⁵ निशाद्वयम् ॥९७॥

एतेषां कल्कसहितं पचेन्मृद्गग्निना²⁰⁶ सुधीः ।

तलेपेन²⁰⁷ कुचाः स्त्रीणां शीघ्रं यान्ति विशालताम् ॥९८॥

बाला²⁰⁸ तण्डुलतायेन तैलमेतत्पिबेद्यदि ।

पीनोत्तुङ्गो²⁰⁹ कुचो तस्या न पतेतां²¹⁰ कदाचन ॥९९॥

इति श्रीलाङ्गवानविनोदाय महाकवि कल्याणमहल्लविरचितं

ऽनङ्गरङ्गे द्रावणादिनिरूपणं नाम

पष्ठः स्थलः ॥ ६ ॥

---*~*~*---

अथ सप्तमः स्थलः ।

-----:0:-----

॥ अथ वशीकरणादिकं निरूप्यते ॥

सारमुद्धृत्य संक्षेपाद्वशीकरणमोहनम् ।

कामिनां प्रीतिजननं¹ किञ्चिदत्र निगद्यते ॥ १ ॥

॥ तत्रादौ तिलकविधिः ॥

लज्जालुर्मधुकं हव्यं² नलिनीमूलमेव च ।

एतत्पिष्ट्वा³ स्ववीर्येण यः कुर्यात्तिलकं पुमान्⁴ ॥ २ ॥

तत्क्षणादेव नयति⁵ वशतां भुवनत्रयम् ।

वात्स्यायनेन मुनिना प्रोक्तो योगो ऽयमुत्तमः⁶ ॥ ३ ॥

सितार्कमूलं⁷ मञ्जिष्ठा वचा मुस्तं सकुष्ठकम्⁸ ।

स्त्रीयोनिशोणितेनैतदेकीकृत्य ललाटके ॥ ४ ॥

शुभं तिलकमाधत्ते यः स लोकत्रयं क्षणात् ।

नयति स्ववशं प्राज्ञः सुचिरं मोदते भुवि⁹ ॥ ५ ॥

तगरं पिप्पलीमूलं मेषशृङ्गी कणा जटा ।

एतत्समं स्वपञ्चाङ्गमलैर्नीत्वैकतां¹⁰ सुधीः ॥ ६ ॥

मधुना तिलकं कुर्याद्यः¹¹ क्षोणीसुतवासरे ।

जगत्सर्वं¹² वशीकुर्यात्स पुमान्नात्र संशयः ॥ ७ ॥

गोरोचनां च सम्भाव्य स्वपुष्परुधिरेण या ।

कुर्यात्तत्तिलकं¹³ भाले सा पतिं मोहयेद्भुवम् ॥ ८ ॥

॥ अथाञ्जनविधिः ॥

महाष्टमीदिने यत्तु¹⁴ श्मशाने नरमस्तके ।

पातितं¹⁵ कज्जलं¹⁶ विश्वं मोहयेन्नयनाञ्जनात्¹⁷ ॥ ९ ॥

रोचना केसरं कन्या शिला चैभिर्विलोचने ।

योजयेद्दृष्टिपथगं¹⁸ सर्वमेव विमोहयेत् ॥ १० ॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्त्वा¹⁹ क्षौमीं²⁰ सुवर्तिकाम् ।

सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥ ११ ॥

पातयेदञ्जनात्तस्य²¹ सर्वदा भुवनत्रये ।

दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥ १२ ॥

शिलाकिञ्जल्कफलिनीरोचनानां तथाञ्जनम्²² ।

पुष्यार्कयोगे विहितं दम्पत्योर्मोहनं परम् ॥ १३ ॥

॥ अथ चूर्णविधिः ॥

काकजङ्घा सिता पक्षौ भ्रामरौ कुष्ठमुत्पलम्²³ ।

मूलं तगरजं चैषां²⁴ चूर्णं क्षिप्तं²⁵ विमोहयेत् ॥ १४ ॥

वात्यान्तिकदलं²⁶ पुंसो मलं माला शवस्य च²⁷ ।

पक्षावलेरिदं²⁸ चूर्णं क्षिप्तं शिरसि²⁹ मोहनम् ॥ १५ ॥

सप्तच्छदं शिवाक्षं³⁰ च सक्षौद्रं तु³¹ समांशकम् ।

अमीषां शिरसि क्षिप्तं चूर्णं मोहकरं परम्³² ॥ १६ ॥

॥ अथ भक्षणविधिः ॥

अन्तादि सर्वं³³ निष्कास्य खञ्जरीटोदरं कुजे³⁴ ।

पूरयित्वा स्ववीर्येण³⁵ शराचयुगले क्षिपेत् ॥ १७ ॥

सुद्रां कृत्वा तदेकान्ते^{३८} सप्ताहं धारं देत्सुधीः ।

पश्चात्त्रिष्कास्य संपिष्य^{३९} वर्टी^{४०} कृत्वा विशोषयेत् ॥१८॥

सा भक्षणविधानेन दीयमाना परस्परम् ।

दम्पत्योर्मोहजननी कीर्तिता वटिकोत्तमा ॥१९॥

॥ अथ लेपनविधिः ॥

यः स्वरेतः समादाय रतान्ते सव्यपाणिना ।

वामपादे^{४१} स्त्रियो लिम्पेत्सा तस्य वशगा भवेत् ॥२०॥

या भोगशेषे कान्तस्य लिङ्गं वामाङ्घ्रिणा स्पृशेत् ।

यावदायुर्भवेद्दासः स तस्या^{४२} नात्र संशयः ॥२१॥

कपोतविष्टासिन्दूरमधुकैः^{४३} समभागकैः^{४४} ।

लिप्त्वा लिङ्गं भजेद्यां सा वशगा स्याद्वराङ्गना ॥२२॥

घनसारं सभलूकमेढूं^{४५} च मधुना सह ।

पिष्ट्वा लिप्तध्वजो यां च भजेत्सा वशगा भवेत्^{४६} ॥२३॥

रोचना कनकं शम्भुबीजं कर्पूरचन्दने^{४७} ।

एभिर्विलिप्तलिङ्गो यां भजते सा वशीभवेत् ॥२४॥

॥ अथ धूपः ॥

चन्दनं कुङ्कुमं व्याधिं^{४९} कालाङ्गं कुसुमं जलम्^{५०} ।

देवदारुं^{५१} च संपिष्य मधुना सह मिश्रयेत् ॥२५॥

चिन्तामणिरिति ख्यातो धूपः परममोहनः ।

एष प्रयुक्तो विधिना सर्वकार्याणि साधयेत् ॥२६॥

एला सर्जरसस्तार्क्ष्यं चन्दनं युवती वचा ।

शृङ्गी चैभिः^{५३} समैर्धूपात्सर्वं विश्वं^{५४} विमोहयेत् ॥२७॥

॥ अथ कामेश्वरमन्तः ॥

ह्रीं^{५५} प्राकामेश्वरेत्युक्त्वा प्रणवादि ततो ऽमुकीम् ।

आनयाथानयेत्येवं^{५६} वसतां ह्रीं ततः परम्^{५७} ॥२८॥

अयं कामेश्वरो मन्त्रः कदम्बकुसुमैः सह ।

पलाशकुसुमैर्वाथ⁵⁸ संजतो ऽयुतसंख्यकः⁵⁹

॥२९॥

तथा⁶⁰ दशांशहोमेन सर्वसिद्धिप्रदः⁶¹ स्मृतः ।

अनेन जप्तं⁶² पुष्पादि दत्तं परममोहनम्⁶³

॥३०॥

॥ अथ चामुण्डामन्त्रः ॥

ॐ चामुण्डे मोहयाथ वशतां⁶⁴ नय चामुकीम् ।

स्वाहापदान्त इत्युक्तश्चामुण्डामन्त्र उत्तमः

॥३१॥

पलाशकुसुमैरेतल्लक्षं जप्त्वा दशांशतः ।

होमेन वामविधिना सर्वसिद्धिं प्रविन्दति⁶⁵

॥३२॥

इति मन्त्रेण जप्तानि सप्तधा कुसुमानि च ।

दत्तानि वशगां कुर्युः कामिनीं नात्र⁶⁶ संशयः

॥३३॥

॥ अथ पद्मिनीवशीकरणम् ॥

कामेश्वरपदं पूर्वमोंकाराद्यथ⁶⁷ मोहय ।

स्वाहान्तं क्रमतो मन्त्रं नागवल्लीदले लिखेत्

॥३४॥

पुष्पेन मधुयुक्तेन रविवारे ऽभिमन्वितम्⁶⁸ ।

शतधा दीयमानं तत्पद्मिनीं वशतां नयेत्

॥३५॥

॥ अथ चि... ॥

ओङ्कारद्वितयं प्रोक्तं⁶⁹ विहङ्गमपदद्वयम् ।

कामदेवाय तस्मै च स्वाहेत्यस्त्रं मनोभुवः⁷⁰

॥३६॥

पिष्ट्वा जातीफलं⁷¹ रम्भमूलतोयेन भावयेत् ।

संशोष्य भानुकिरणैर्नागवल्लीदले⁷² क्षिपेत्

॥३७॥

निमन्त्र्यानेन मन्त्रेण रविवारे प्रदापयेत् ।

एतद्भक्षणमात्रेण चित्रिणी वशगा भवेत्⁷³

॥३८॥

॥ अथ शङ्खिनीवशीकरणम् ॥

ॐ मोहनश्चोमिति च⁶⁴ स्वाहान्तं च पदद्वयम्⁷⁵ ।

अयं महासिद्धिमन्त्रः कार्तिनः पूर्वमूरिभिः⁷⁶ ॥३९॥
मन्त्रेणानेन संजप्तं⁷⁷ मूलं तगरसम्भवम् ।

श्रीफलं चैव⁷⁸ संदद्याच्छिङ्खिनीं वशतां नयेत्⁷⁹ ॥४०॥

॥ अथ हस्तिनीवशीकरणम् ॥

ओङ्कारो धिरियुग्मं⁸⁰ च कामदेवाय चेत्यथ ।

तस्मै स्वाहेति कथितो मन्त्रः श्रेष्ठो⁸¹ मुनीश्वरैः ॥४१॥

कपोतपिच्छं संपिष्य⁸² मधुनाथ⁸³ निमन्त्रयेत् ।

मन्त्रेणानेन तद्दानाद्दन्तिनी वशगा भवेत्⁸⁴ ॥४२॥

॥ अथाङ्गरागादिकमुच्यते ॥

संमूर्छितानुरागाणां रत्युन्मवत्रिलासिनाम् ।

कामिनां⁸⁵ प्रीतिजननमङ्गरागादिकं ब्रुवे⁸⁶ ॥४३॥

चन्दनोशीरपथ्यार्ति (?) लोध्राम्रत्वक्समुद्भवः⁸⁷ ।

लेपः स्वेदजदौर्गन्ध्यं हरत्याशु विलासिनाम् ॥४४॥

पथ्या निम्बदलं⁸⁸ लोध्रं दाडिमीसप्तपर्णयोः⁸⁹ ।

बल्कलश्च⁹⁰ प्रलेपो ऽयमङ्गदुर्गन्धिनाशनः⁹¹ ॥४५॥

चिञ्चाफलं करञ्जस्य⁹² वीजैरथ⁹³ हरीतकी ।

विल्वमूलेन कक्षादिदुर्गन्धिहरणं⁹⁴ द्रव्यम्⁹⁵ ॥४६॥

नागपुष्पागुरुशीरकोलमज्जाम्बुचन्दनैः⁹⁶ ।

लिप्ताङ्गो विनिहन्त्याशु⁹⁷ दुर्गन्धं घर्षवारिजम् ॥४७॥

खगं पीलुतरोः⁹⁸ पुष्पं तथा जम्बूफलं⁹⁹ समम् ।

एतद्देहे निदाघेषु लिप्तं घर्षाम्बुनाशनम् ॥४८॥

पिचुमन्ददलाम्भोजलोध्रदाडिमवलकलैः¹⁰⁰ ।

निदाघकाले लिप्ताङ्गो घर्षवारिचयं जयेत् ॥४९॥

शिरीषकेसरोशीरलोध्रैरङ्गविरूक्षणात् ।

तद्रक्षणाच्च घर्षाम्बु निदाघे नैव विन्दति ॥५०॥

॥ अथ स्नानीयसुगन्धिप्रयोगः ॥

- विल्वपत्रं मरुवक¹⁰¹ मशोककुसुमानि च ।
 क्रमात्पुष्पाणि केतक्याः क्षिप्त्वा तैले निधापयेत्¹⁰² ॥५१॥
 आतपे शुष्कपुष्पाणि¹⁰³ ततो निष्कासयेन्नरः ।
 महापरिमलं तैलं ख्यातं योग्यं विलासिनाम्¹⁰⁴ ॥५२॥
 एलाम्बुदनखस्वर्णमांसीकर्पूरपत्रकैः¹⁰⁵ ।
 स्नात्वा सुगन्धं परमं मूर्धजानां प्रविन्दति¹⁰⁶ ॥५३॥
 धात्रीस्वर्णघनीशीरपथ्यामांसीविलेपनैः¹⁰⁷ ।
 स्नात्वा मासार्धमाधत्ते केशसौरभ्यमुत्तमम्¹⁰⁸ ॥५४॥

॥ अथ : सुगन्धिप्रयोगः ॥

- चन्दनैलाशटीपत्रशिग्रुपथ्याम्बुतोयदैः ।
 सामवैलेप¹⁰⁹ उक्तोऽयं सुगन्धिः¹¹⁰ कामिवल्लभः¹¹¹ ॥५५॥
 कर्पूरं कुङ्कुमं लोध्रं स्थौणेयं¹¹² जलमम्बुदः ।
 उशीरं च समैरेभिलेपः¹¹³ स्यात्सुरभिः परः¹¹⁴ ॥५६॥
 पत्राम्बुचन्दनोशीरकृष्णागुरुसमुद्भवः¹¹⁵ ।
 लेपः कृतोऽयमङ्गेपु¹¹⁶ सौरभ्यं परमं दिशेत् ॥५७॥

॥ अथ सर्वोत्तमसुगन्धिप्रयोगः ॥

- कस्तूरी नागकुसुमं शैलेयं चन्दनं घनः¹¹⁷ ।
 श्रीवासः कनकश्चन्द्रो¹¹⁸ जाती स्थौणेयपूतिकम्¹¹⁹ ॥५८॥
 सुश्लक्ष्णपिष्टैरेभिस्तु¹²⁰ नागवल्लीदलोद्भवैः ।
 रसैलेपः सुगन्धोऽयमुक्तो योग्यो¹²² महीभुजाम्¹²³ ॥५९॥
 स्यात्तोयदस्य भागैकं पथ्याभागचतुष्टयम् ।
 व्याधिस्थौणेयचन्द्राणां¹²⁴ प्रत्येकं भागयुग्मकम् ॥६०॥
 शिलात्मजस्य¹²⁵ पञ्च स्युर्नव भागा नखस्य तु¹²⁶ ।
 एभिरुक्तः सुगन्धोऽयं कस्तूरीदलसङ्गकः¹²⁷ ॥६१॥

नखपथ्याभयाम्भोद मांसीमांसकरञ्जकाः¹²⁸ ।

समाः¹²⁹ स्वर्णाम्भसोरुक्तं प्रत्येकं भागयुग्मकम् ॥६२॥

कर्पूरागुरुकस्तूरी जातिस्थौणेयकस्य तु¹³⁰ ।

भागत्रिकं स्यात्प्रत्येकं सर्वैरेभिरिहोच्यते ॥६३॥

लेपः¹³¹ सौरभ्यगर्भाख्यः¹³² सर्वलोकमनोरमः ।

भ्रूजामेष योग्योऽयमन्येषां दुर्लभः स्मृतः ॥६४॥

॥ अथ मुखवामविधिः ॥

त्वक्पत्रैलानखस्वर्णजातिभिः कारयेद्वटीम् ।

ताम्बूलयुक्ता सा भुक्ता¹³³ वक्त्रं सुरभितां नयेत् ॥६५॥

केसरं कोलमज्जा च स्थौणेयं¹³⁴ जातिसस्यकम्¹³⁵ ।

वटिका मधुनैतेषां¹³⁶ कृता¹³⁷ वक्त्रं सुवासयेत् ॥६६॥

मुराकिञ्जल्ककुष्ठानां चूर्णं लीढं हि सन्ध्ययोः¹³⁸ ।

कर्पूरगन्धि¹³⁹ वदनं कुर्यान्मासार्धतो ध्रुवम् ॥६७॥

काम्बोजीवीजकुष्ठोत्थं¹⁴⁰ चूर्णं मधुघृतान्वितम्¹⁴¹ ।

यो लेढि मासं तद्वक्त्रं¹⁴² केतकीगन्धवद्भवेत्¹⁴³ ॥६८॥

आम्रपत्ररसे क्षारं मार्गवृक्षभवं क्षिपेत् ।

संशोष्य भानुकिरणैर्भक्षेत्ताम्बूलमध्यगम्¹⁴⁴ ॥६९॥

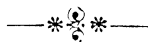
प्रातः प्रतिदिनं यस्तु सुगन्धि स्यात्तदाननम्¹⁴⁵ ।

सर्वेषु सुखवासस्य¹⁴⁶ योगेष्वयमनुत्तमः ॥७०॥

इति श्रीलाङ्गानविनोदाय महाकवि कल्याणमल्लविरचिते

अनङ्गरङ्गे वशीकरणादिनिरूपणं नाम

मसमः स्थलः ॥ ७ ॥



अथ अष्टमः स्थलः ।

—:०:—

॥ अथ विवाहाद्युद्देशः ॥

विद्याशौर्यविवेकधैर्यसहिते^१ शुद्धे स्वधर्मस्थिते^२

विख्याते धनधान्यवैभवयुते^३ जाता^४ समाने कुले ।

कन्या दोषविवर्जिता गुणवती सभ्रातृका सुन्दरी

सद्भिः शास्त्रविधानतः स्मरकलायोग्या विवाहा सदा^५ ॥ १ ॥

॥ अथ कन्याशुभलक्षणानि ॥

नीलाम्भोरुहपत्रकान्तिरथवा स्वर्णप्रभासुन्दरी^६

भृङ्गीनीलशिरोरुहा शशिपूर्वा सारङ्गशावेक्षणा ।

स्याद्यस्याश्च तिलप्रसूनमदृशी नासा सुदन्तावली^७

सुश्रोत्रा पिकभाषिणी च जलजग्रीवाथ विम्बाधरा^८ ॥ २ ॥

चक्राद्यङ्कितशोणपाणिचरणा क्षामोदरी स्वल्पभु-

ग्रम्भास्तम्भमनोरमोरुयुगला श्रोण्या बृहत्यान्विता^९ ।

नाभ्या चैव सुनिम्नया^{१०} गजगतिः शान्तालपनिद्रालसा^{११}

शीलाढ्या सुकुमारिका नखरैः कन्या विवाहा सदा^{१२} ॥ ३ ॥

॥ अथ कन्यादृषणानि ॥

कूरा पिङ्गलकेशलोचनवती खर्वातिर्दीर्घा कृशा

लम्बोष्ठी पृथुकन्धरातिबहुभुक् श्यामाधरा दन्तुरा ।

वाचाला विषमस्तनी द्रुतगतिः शूर्पश्रवाः कोपिनी

रूक्षा पल्लवजिह्विकातिकठिना^{१३} सङ्मश्रुका^{१४} लोमशा ॥ ४ ॥

निद्राशोकवती^{१५} सदाथ चलने यस्याः प्रकम्पोऽवने^{१६}-

र्हास्ये चापि^{१७} तरङ्गितौ प्रभवतो गण्डौ^{१८} भृशं चञ्चला^{१९} ।

अङ्गुष्ठादधिका भवेत्तदुपगा पादे तथानामिका
यान्ता नो धरणीं स्पृशेदथ भवेन्मध्या तु हीनाग्रका²⁰ ॥ ५ ॥
अज्ञाता गिरिपक्षिभूरुहनदीनक्षत्रसंज्ञा²¹ च या
प्रौढा रोगसमाकुला च सरलध्रुवल्लरी²² निस्त्रपा ।
गण्डौ कूपयुगान्वितौ²³ च दधती²⁴ हीनाधिकाङ्गी तथा
दुःशीला च विवाहकर्मणि सदा त्याज्याबला पण्डितैः ॥ ६ ॥
॥ अथ जामातृलक्षणानि ॥

विद्याशौर्यधनाश्रयो²⁵ गुणनिधिः ख्यातो युवा सुन्दरः
साचारः²⁶ सुकुलोद्भवो मधुरवाग्दाता दयासागरः ।
भोगी भूरिकुटुम्बवान्निश्चरमतिः²⁷ पापार्तिहीनो बली
जामाता परिवर्णितः²⁸ कविवरै रेवंविधः सत्तमः ॥ ७ ॥
॥ अथ जामातृदूषणानि ॥

वृद्धो दुर्व्यसने²⁹ दयाविरहितो रोगी महापापवान्
षण्ढो³⁰ दुष्टकुलोद्भवश्च पिशुनो द्यूते³¹ ऽतिवद्वस्पृहः ।
निर्वित्तः³² कृपणो ऽतिचञ्चलमतिर्नित्यप्रवासी ऋणी
भिक्षुः स्नेहविवर्जितः सुमतिभिः कार्यो वरो नेदृशः³³ ॥ ८ ॥
॥ अथ परस्त्रीगमन निषेधः ॥

आयुःक्षतिर्विकलतात्युपहास्यता³⁴ च
निन्दार्थहानिलघुते³⁵ विगतिः³⁶ परत्र ।
स्यादेव यद्यपि रतेन³⁷ पराङ्गनायाः
प्राहुस्तथाप्यनघमित्यपि कारणेन ॥ ९ ॥
लङ्केश्वरो जनकजाहरणेन वाली
तारापहारकतयाप्यथ कीचकारव्यः³⁸ ।
पाञ्चालिकाग्रहणतो निधनं जगाम
तच्चेतसापि परदाररतिं न काङ्क्षेत्³⁹ ॥ १० ॥

॥ अथ कारणवशात्परस्त्रीगमनस्यानवद्यत्वमुच्यते ॥

दृष्टिप्रेम⁴⁰ पुरा भ्रमो ऽथ मनसि⁴¹ प्रोक्तो ऽथ सङ्कल्पको,
निद्रोऽच्छित्तिरतः⁴² शरीरतल्लता लज्जाविनाशस्ततः ।
वैराग्यं विषयेष्वथो निगदिते उन्मादमूर्च्छे⁴³ ततो
मृत्युः स्यादिति पण्डितैः स्मरदशा उक्ता दशैवं क्रमात् ॥११॥

उर्वशी सुरतचिन्तया ययौ

संक्षयं किल⁴³ पुरुरवा नृपः ।

रक्षणाय निजर्जावितस्य त-

त्संभजेत्परवधुं न कामतः

॥१२॥

नारी चोन्नतयौवनाभिलषितं कान्तं न चेदामुया⁴⁴-

दुन्मादं मरणं च विन्दति तदा कन्दर्पसंमोहतः⁴⁵ ।

संचिन्त्येति⁴⁶ समागतां परवधुं रत्यर्थिनीं⁴⁷ स्वेच्छया

गच्छेत्कापि न सर्वदा सुमतिमानित्याह वात्स्यायनः⁴⁸ ॥१३॥

अपि द्विजश्रोत्रियभूपमित्र-

संबन्धिभार्या⁴⁹ यदि पञ्चभुक्ताः ।

स्युस्ताश्च दोषाय न तत्र गच्छे⁵⁰-

द्धेतौ पुमान्कामत एव नैव⁵¹

॥१४॥

॥ अथागम्याः स्त्रिय उच्यन्ते ॥

कन्या प्रव्रजिता सती रिपुवधूर्मित्राङ्गना रोगिणी

शिष्या⁵² ब्राह्मणवल्लभाथ⁵³ पतितोन्मत्ता च संबन्धिनी ।

वृद्धाचार्यवधुश्च गर्भसहिता ज्ञाता महापापिनी

पिङ्गा कृष्णतमा सदा बुधजनैस्त्याज्या इमा योषितः ॥१५॥

॥ अथ दूत्य उच्यन्ते ॥

मालाकारवधुः सखी च विधवा धात्री नटी शिल्पिनी

सैरन्ध्री प्रतिगेहिकाथ रजकी दासी च संबन्धिनी ।

बाला प्रव्रजिता च भिक्षुवनिता तक्रस्य विक्रेतृका⁵⁴
मान्या⁵⁵ कारुवधूर्विदग्धपुरुषैः प्रेष्या इमा दूतिकाः⁵⁶ ॥१६॥

॥ अथ सुखसाध्यालक्षणानि ॥

निलज्जा, विधवा, कलासु कुशला, गोष्ठीपरा, दुर्भगा
क्रीवस्थूलकठोरवामनजरद्वैरूप्यभायांस्तु याः⁵⁷ ।
द्वारावस्थितिशीलिकानिचपला बन्ध्या महामानिनी⁵⁸
प्रत्यग्रा⁵⁹ तरुणी महाविरहिणीः साध्याः सुखेनाङ्गनाः⁶⁰ ॥१७॥

॥ अथानुरागिणीलक्षणानि ॥

लज्जां विधत्ते⁶¹ ऽभिमुखं⁶² न पश्ये-
त्पादेन भूमिं विलिखेत्स्थिता⁶³ च ।
व्यनक्ति गात्रं कुरुते च हास्यं
दृष्टा⁶⁴ कटाक्षा⁶⁵ नयने विदध्यात् ॥१८॥

पृष्ठास्फुटं⁶⁶ सम्मितमेव⁶⁷ वाक्यं
शनैर्वदेच्चानुसरेद्भ्रजन्तम्⁶⁸ ।
विलोक्य तं⁶⁹ व्याजकथाप्रसङ्गा-
दुच्चैर्वदेत्स्वं⁷⁰ परिदर्शयन्ती ॥१९॥

तन्मित्रवर्गे प्रणयं विदध्या-
दित्यादिवार्तामसकृच्च पृच्छेत् ।
कति स्त्रियो ऽख्यालयगाः सुरूपाः
कस्यामयं प्रेम भृशं विधत्ते⁷¹ ॥२०॥

मृद्राति⁷² दृष्टा⁷³ स्वकुचं करेण
संस्फोटयेद्दङ्गुलिकाः⁷⁴ सजृम्भम् ।

भूषाविहीना न ददाति तस्मै
स्वदर्शनं याचितमप्यजस्रम् ॥२१॥

पुष्पादिना हन्ति तथातितारं⁷⁵
संकासयेन्मार्ष्टि⁷⁶ भुजं करेण ।
व्याजेन गच्छेत्सदनं कराङ्घ्रि-
वक्त्रेषु घर्मांशु वहेद्विलोक्य⁷⁷ ॥२२॥

इत्यादिचिह्नैरनुरागयुक्तां⁷⁸
ज्ञात्वा विदग्धां मृगशावकाक्षीम् ।
संप्रेषयेत्तां प्रति निर्विशङ्कं
दृतीमलं⁷⁹ कामकलाप्रवीणः⁸⁰ ॥२३॥

॥ अथ दुःखं ॥

भर्तृस्त्रेहवती दृढैकवनिता प्रेम्णा⁸¹ विहीना भृशं
संध्या भूरिसुता अषाभग्युता⁸² गुर्वादिर्भाता⁸³ स्थिरा ।
प्रायेणार्थवती तथा परजनालापे विरक्ता सदा ।
निर्लोभा व्यभिचारकर्मणि बुधैर्दुःखेन साध्या स्मृता⁸⁴ ॥२४॥

॥ अथ सुरते त्याज्यस्थानानि⁸⁵ ॥

वह्निब्राह्मणपूज्यवर्गनिकटे नद्यां च देवालये
दुर्गादौ च चतुष्पथे परगृहे ऽरण्ये इमशाने दिवा ।
सङ्क्रान्तौ शशिसंक्षये ऽथ⁸⁶ शरदि ग्रीष्मे ज्वरातीं व्रते
सन्ध्यायां च परिश्रमेषु सुरतं कुर्यान्न विद्वान्कचित् ॥२५॥

॥ अथ सुरते विहितप्रदेशाः ॥

विस्तीर्णे ललिते⁸⁷ सुधाधवलिते चित्रादिनालंकृते
रम्ये⁸⁸ प्रोन्नतचन्द्रे ऽगुरुमहाधूपादिपुष्पान्विते⁸⁹ ।

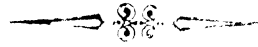
सङ्गीताङ्गविराजिते स्वभवने" दीपप्रभाभारुरे

निःशङ्कं सुरतं याथाचित्यपितं कुर्यान्ममं कान्तया ॥२६॥

इति श्रीलाङ्गवानविनोदाय महाकवि कल्याणमहद्विगच्छिते

ऽनङ्गरङ्गे विवाहाद्युपदेशनिरूपणं नाम

अष्टमः स्थलः ॥ ८ ॥



अथ नवमः स्थलः ।

॥ अथ बाह्यमम्भोगविधानम् ॥

मतिमानुपभोगपूर्वकं

सुरतं संविदधीत^१ कान्तया ।

परिरम्भणमेव पण्डितैः

प्रथमं तेषु निगद्यते ऽष्टधा ।

॥ १ ॥

वृक्षाधिरूढं तिलतण्डुलाख्यं

लालाटिकं जाघनविद्धके च^२ ।

ऊरूपगूढाह्वयदुग्धनीरे^३

तत्राष्टमं वल्लरिवेष्टितं स्यात्

॥ २ ॥

॥ अथ ----- ॥

चरणकमलमेकेनाङ्घ्रिणाक्रम्य भर्तु-

रपरपदसरोजेनाश्रयन्ती^४ तदूरुम् ।

तरुमिव भुजवल्ल्यावेष्टय^५ चुम्बेन्नताङ्गी

कथितमिह मुनीन्द्रैस्तद्धि वृक्षाधिरूढम्

॥ ३ ॥

भुजगुह्यविपर्ययं मिथी

घटयेच्चेन्मिथुनं^६ सुनिश्चलम् ।

तिलतण्डुलसंज्ञकं तदा

परिरम्भं कथयन्ति सूरयः

॥ ४ ॥

मिथो ललाटाक्षिकपोलवक्र-

हृद्बाहुवल्लीर्मिथुनं घटेत ।

ग्मातिरेकाद्यदि निस्तरङ्गं

लालाटिकं तत्प्रवदन्ति सन्तः ॥ ५ ॥

जघनपरिसरस्थं श्रीणिदेशं स्वभर्तु-

निजभुजलतिकाभ्यां गाढमालिङ्गय रागात् ।

लुलितवसनकेशा^१ चुम्बनं यत्र कुर्या-

त्स्फुटमिह परिरम्भं जाघनं तं वदन्ति ॥ ६ ॥

स्थितं^{१०} पतिं मीलितनेत्रयुग्मं

षश्चात्प्रविध्येद्वनिता कुचाभ्याम्^{११} ।

गृह्णात्यसौ तामपि विद्वकाख्य^{१२}-

मालिङ्गनं तन्मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥ ७ ॥

उद्गामकामोन्मथितो ऽङ्गनाया^{१३}

ऊरुद्वयं स्वोरुयुगेन यत्र^{१४} ।

आपीडयेत्कान्त उदीरितं त-

द्रूपगृहं परिरम्भणं हि^{१५} ॥ ८ ॥

अङ्के ऽथ तल्पे^{१६} निजसंमुखस्थां

कान्तां^{१७} समालिङ्गति यत्र कान्तः^{१८} ।

मिथः प्रवेशं कुरुतो निजाङ्गैः

म्यात्क्षीरनीरं परिरम्भणं तत्^{१९} ॥ ९ ॥

बलीव वृक्षं सरलाङ्गयष्टिः^{२०}

पतिं समालिङ्गति यत्र कान्ता^{२१} ।

चुम्बेच्च^{२२} रागात्कृतमन्दसीत्का

प्रोक्तं बुधैर्वल्लरिवेष्टितं तत्^{२३} ॥ १० ॥

॥ अथ चुम्बनभेदाः ॥

अधराक्षिकपोलमस्तकं

वदनान्तः स्तनयुग्मकन्धरे ।

विहितानि पदानि पण्डितैः

परिरम्भादनु चुम्बनस्य हि²¹

॥११॥

कक्षायुगं मन्मथमन्दिरं च

नाभेश्च मूलं स्मरलोलचित्ता ।

चुम्बन्ति लाटा निजदेशसात्म्या-

न्नास्त्यन्यतश्चुम्बनगीतिरेपा²⁵

॥१२॥

नारीमुग्वान्ते वदनं स्वर्कायं

समानयेद्यत्र वलेन कान्तः ।

सा नैव चुम्बेदतिकोपयुक्ता²⁶

स्याच्चुम्बनं तन्निमिताभिधानम्²⁷

॥१३॥

दयितस्य निवेद्य वक्रके

निजवक्रं परिचुम्बिताधरम् ।

न पिबेदबला तदाननं

स्फुरिताख्यं²⁸ किल²⁹ चुम्बनं तदा

॥१४॥

करेण कान्तस्य निमील्य नेत्रे

जिह्वां मुखान्तर्विनिधाय यत्र ।

चुम्बेद्विलोला परिमीलिताक्षी

तद्घट्टिताख्यं³⁰ कवयो वदन्ति

॥१५॥

करेण कान्ताचुबुकं गृहीत्वा

दशेत्पतिः पश्चिमभागवती ।

प्रियाधरं यत्र तु^{११} तिर्यगाख्यं
 प्रोक्तं कवीन्द्रैः खलु^{१२} चुम्बनं तत् ✓ ॥१६॥

दन्तैर्गृहीत्वा मदनार्तिलाला^{१३}-
 धरं विचुम्ब्याशु दशेत्स्वभर्तुः ।
 कान्तस्तदीयं कथितं मुनीन्द्रै-
 रित्युत्तरोष्ठं परिचुम्बनं हि^{१४} ✓ ॥१७॥

अदाय दन्तच्छदमाशु पत्युः
 कराङ्गुलीसंपुटकेन नारी ।
 जिह्वाग्रदेशेन घटेद्दशेच्च^{१५}
 तच्चुम्बनं पीडितसंज्ञकं^{१६} स्यात् ✓ ॥१८॥

प्रियाधरं^{१७} स्वाधरसंपुटेन
 पित्रेत्पतिः सापि तथैव भर्तुः ।
 परस्परं प्रेमरसातिरेका-
 त्त्याचुम्बनं संपुटकं तदेव^{१८} ✓ ॥१९॥

संप्राप्तनिद्रां रहसि स्वकान्तां
 चिरागतश्चुम्बति यत्र भर्ता ।
 प्रोक्तं कवीन्द्रैः प्रतिबोधसंज्ञं
 तच्चुम्बनं सर्वरसातिरेकम् । ✓ ॥२०॥

अधरोष्ठयुगेन कामिनी
 पतिवक्त्रोष्ठयुगं स्वजिह्वया ।
 परिपीड्य विचुम्ब्य नृत्यति
 कथितं^{१९} तद्धि समौष्ठसन्तकम् ॥२१॥

॥ अथ नखदानविधिः ॥

ग्रीवाकरोरुजघनस्तनपृष्ठकक्षा⁴⁰-

हृत्पार्श्वगण्डविषये नखराः खराः स्युः ।

माने नवीनसुरते विरहे प्रवासे,

द्रव्यक्षये⁴¹ स्थिरतौ च मदे प्रयोज्याः

॥२२॥

नीरेखता निर्मलतोज्ज्वलत्वं

वर्धिष्णुताथास्फुटितत्वमेव⁴² ।

अमार्दवं⁴³ चेति गुणानखानां

बुधैः षडुक्ताः किल कामशास्त्रे⁴⁴ ।

॥२३॥

अव्यक्तरखं कृतरोमहर्षं

समर्पितं गण्डकुचाधरेषु⁴⁵ ।

यत्कर्म सम्पूर्णनखप्रसूतं⁴⁶

विज्ञान्तदेव⁴⁷ च्छरितं वदन्ति

॥२४॥

ग्रीवाकुचे वक्रनखप्रहारो

दत्तो ऽर्धचन्द्राख्य उदीरितो ऽसौ ।

इत्येव भेदो ऽभिमुखे प्रयोज्य⁴⁸-

स्तदा बुधा मण्डलकं वदन्ति⁴⁹

॥२५॥

द्वित्र्यङ्गलादधिक⁵⁰ एव नखप्रहारो

मूर्धोरुगुहाकुचदेशसमर्पितो यः ।

रेखाह्वयं⁵¹ मदनकेलिकलाविधिज्ञाः⁵²

प्राहुस्तमेव⁵³ तरुणीविहितप्रभावाः⁵⁴

॥२६॥

रेखा कृता सर्वनखैरथस्ता-

दङ्गुष्ठाधाय⁵⁵ तु चूचुके या ।

मयूरपादं किल तां⁵⁶ वदन्ति
शशप्लुतं सर्वनखैः कुचाग्रे ॥२७॥

रेखात्रयं पृष्ठकुचेऽथ गुह्ये
कृतं⁵⁷ भवेदुत्पलपत्रवद्यत् ।
अन्वर्थसंज्ञं प्रवदन्ति तद्धि⁵⁸
स्मर्तुं प्रवासावसरे दिशन्ति ॥२८॥

नखं प्रयुक्तं प्रणयाद्रसज्ञै-
र्यदेतदेवास्ति मनोभवस्य ।
सर्वस्वमत्यन्तसुखैकहेतु⁵⁹-
र्नातोऽस्ति किञ्चिद्भ्रकामिनीनाम ॥२९॥

॥ अथ दशनविधानम् ॥

नखप्रदेशेषु रदाः प्रयोज्या
ओष्ठाननान्तर्नयनानि,⁶⁰ हित्वा ।
हिंकारशीत्कारविशेष⁶⁰ उक्तो
दन्तार्पणे कामकलाविदग्धैः⁶¹ ॥३०॥

रागस्पृशः स्निग्धतराः समाना
घनाश्च सूक्ष्माः सशिखाः सभासः ।
दन्ताः⁶² प्रशस्ता अथ खर्वरूक्षाः
करालबाह्या मलिनाश्चनिन्द्याः ॥३१॥

अधरस्थितरागमात्रकं⁶³
रदलेख्यं⁶⁴ किल गृढकं विदुः ।
दशनच्छदगण्डपीडना-
दिदमुच्छूनकमुच्यते बुधैः ॥३२॥

दन्तोष्ठयोर्योगविशेषसाध्यः

प्रवालपूर्वा मणिरप उक्तः

अभ्यासयोगेन स⁶⁵ दम्पतिभ्यां ✓

संसाध्यते नान्यविनोदतस्तु

॥३३॥

अधरे तिलशश्व⁶⁶ कामिना⁶⁷

रदयुग्मेन विखण्डने कृते ।

इति बिन्दुरुदीरितो ऽखिले-

दर्शनैः स्यात्किल बिन्दुमालक⁶⁸ ✓

॥३४॥

कपोलवक्षोगलभालदेशे

खण्डाभ्रकं⁶⁹ स्याद्दशनाग्रलेख्यम् ।

तन्मण्डलाकारकमङ्गनाना-

मङ्गेषु शोभां लभते नितान्तम्

॥३५॥

अखर्वसान्द्रा दशनावली या

कान्ताशरीरे क्रियते स्वभर्त्रा ।

प्रस्थानकाले स्मृतिहेतुभूता⁷⁰

तत्कालचर्वे⁷¹ प्रवदन्ति विज्ञाः⁷²

॥३६॥

॥ अथ केशप्रहणोद्देशः ॥

स्निग्धा घनाः कुञ्चितनीलवर्णाः

केशाः प्रशस्तास्तरुणीजनानाम् ।

प्रेमप्रवृत्त्यै⁷³ विधिर्नैव मन्दं⁷⁴

ग्राह्यानरैश्चु⁷⁵म्बनदानकाले

॥३७॥

चिकुरान्परिगृह्य⁷⁶ चुम्बतेः

करयुग्मेन पतिः प्रियां यदि ।

समहस्तकमित्यथैकता

यदि हस्तेन तरङ्गरङ्गकम्⁷⁸

॥३८॥

परिवेष्टय करेण कुन्तला-

न्मदनार्तो यदि धारयेन्प्रियाम् ।

रतिकेलिकलापकोविदाः

कथयन्तीति भुजङ्गवाहिकम्⁷⁹

॥३९॥

कर्णप्रदेश⁸⁰ स्थकचान्विगृह्य⁸¹

परस्परं चुम्बति यत्र नारी ।

पतिश्च रागात्सुगतावतारे⁸²

कामावतंसः स कचग्रहः स्यात्

॥४०॥

इति प्रदिष्टाः⁸³ कतिचित्प्रसिद्धाः

क्रमान्मया⁸⁴ बाह्यरतप्रकाशः⁸⁵ ।

प्रसिद्धभावाद्बहुशोऽपरे ते

न दर्शिता विम्वत्शङ्कया च⁸⁷

॥४१॥

इति श्रीलाडवानविनोदाय महाकवि --- चिंत

ऽनङ्गरङ्गे बाह्यमम्भोगनिरूपणं नाम

नवमः स्थलः ॥ ९ ॥



अथ दशमः स्थलः ।

॥ अथ सुरतभेदा निरूप्यन्ते ॥

सात्स्यानुरूपान्प्रविधाय^१ पूर्वं

विज्ञः पुमान्वाह्वरतोपचारान^२ ।

विधिश्चर्याभूतवराङ्गदेशा^३

भजेत कान्तां रतिकेलिगङ्गे ।

॥ १ ॥

दृढापि नारी श्लथतामुपैति

प्रमारणादृष्युगस्य सद्यः^४ ।

अपि श्लथा^५ संयमितोरुषुग्मा

गच्छेद्देहत्वं सुरतप्रयोगे

॥ २ ॥

उत्तानकं तिर्यगथासिताख्यं

स्थितं तथैवानतकं रतज्ञैः^६ ।

पञ्चप्रकारं सुरतं प्रदिष्टं

तस्य प्रभेदान्क्रमतो ब्रवीमि^७

॥ ३ ॥

॥ तत्रादावुत्तानबन्धः ॥

निधाय पादौ रमणांसयोश्च-

दुत्तानसुप्ता रमते पुरन्ध्री ।

रतिप्रबन्धे समपादसंज्ञं

प्रोचुस्तदा भोगविधानदक्षाः^८

॥ ४ ॥

उत्तानितायाः स्मरमन्दिरोप^९-

स्थितस्तदरुद्वयमुत्प्रगृह्य^{१०} ।

संस्थाप्य बाह्यं कटितो रमेत

कान्तस्तदा स्यात्किल नागराख्यः

॥ ५ ॥

स्त्रियो ऽङ्घ्रिमेकं विनिधाय भूमा-
वन्यं स्वमौलौ निजपादयुग्मम्¹² ।
पृथ्व्यां¹³ समाधाय रमेत भर्ता

त्रैविक्रपाख्यं करणं तदा¹⁴ स्यात्

॥ ६ ॥

तल्पप्रसुप्ता निजपादयुग्म¹⁵

मूर्ध्वं विधत्ते रमणी कराभ्याम् ।

स्तनौ गृहीत्वाथ भजेत कान्तो

बन्धस्तदा व्योमपदाख्य उक्तः

॥ ७ ॥

कान्तोरुयुग्मान्तरगः स्वहस्तौ

निधाय भूमौ रमते पतिश्चेत् ।

बन्धस्तदोक्तः स्मरचक्रनामा¹⁶

प्रेष्टुः¹⁷ सदा कामिजनस्य लोके

॥ ८ ॥

नारी स्वपादौ दयितस्य वक्षः-

स्थितौ समालिङ्ग्य करद्वयेन ।

किञ्चन्नतोरु¹⁸ रमते तदासौ

प्रोक्तो मुनीन्द्रैरविदारिताख्यः¹⁹

॥ ९ ॥

उत्तानितोरुद्वयमध्यगामी

दृढं समालिङ्ग्य भजेत यत्र ।

कान्तो²⁰ विलासिप्रिय एष बन्धः

सौम्याख्य उक्तः कविभिः पुराणैः

॥ १० ॥

ऊरुद्वयं²¹ वक्रमुदञ्चितं च

कृत्वाम्बुजाक्षी भजते²² पतिं चेत् ।

आनन्दकर्ता तरुणीजनानां

बन्धो ऽयमुक्तः किल जृम्भिताख्यः

॥११॥

कान्तोरुयुग्मं परिवर्तितं चे-

न्निष्पीड्य²³ कामाकुलचित्तवृत्तिः²⁴ ।

रमेत भर्ता यदि वेष्टिताख्यं²⁵

तमेव²⁶ बन्धं मुनयो वदन्ति

॥१२॥

स्कन्धप्रदेशे विनिधाय जङ्घा-

मेकां स्त्रियो ऽन्यामथ संविदार्य ।

अधो²⁷ विनीय प्रबलं²⁸ रमेत

भर्ता यदा वेणुविदारितं तत्

॥१३॥

विलासिनीं²⁹ संहतमूरुयुग्मं

कृत्वोर्ध्वमालिङ्ग्य भजेत भर्ता ।

उद्भ्रमकः⁵⁰ स्यात्प्रमदाङ्घ्रियुग्मे

कान्तोरसिस्थे स्फुटनं³¹ प्रदिष्टम्

॥१४॥

॥ अथ तिर्यग्बन्धः ॥

कान्ताङ्घ्रिमेकं हृदये स्वकीये

निधाय भर्ता शयने द्वितीयम् ।

कुर्याद्रतिं चेदिति वीणिकाख्यः³²

प्रौढाङ्गनायाः परिकल्पनीयः³⁴

॥१५॥

पार्श्वप्रसुप्तप्रमदोपरिस्थः³⁵

कान्तः समालिङ्ग्य रतिं करोति ।

यत्र प्रदिष्टो मुनिभिः पुराणै-

र्बन्धस्तदा संपुटनामधेयः

॥१६॥

यद्यङ्गनाकुञ्चितपादयुग्मं

स्वनाभिदेशे परिकल्प्य भर्ता ।

रतिं प्रकुर्यादिति कर्कटाख्यं

तदा कवीन्द्रैः³⁶ करणं प्रदिष्टम्

॥१७॥

॥ अथोपविष्टवन्धः ॥

प्रेङ्गाविलासं प्रसभं वहन्त्या

विपर्ययाज्जङ्घयुगम्य³⁷ नार्या ।

पद्मासनं स्यादथ चैकजङ्घा-

विपर्ययादुपपदं³⁸ प्रदिष्टम्

॥१८॥

स्वजानुयुग्मान्तरनिर्गतौ चै-

भुजौ स्वकण्ठे निनयेन्मृगार्क्षा³⁹ ।

कान्तो ऽपि कृत्वेति⁴⁰ विधिं प्रगच्छे⁴¹-

तदा बुधैर्वन्धुरिताख्य⁴² उक्तः

॥१९॥

उक्तप्रकारो यदि दम्पती स्वौ

भुजौ तु कृत्वा निजकूर्परस्थौ⁴³ ।

स्वैरं रमेते करणं प्रदिष्टं

तदा कवीन्द्रैः⁴⁴ फणिपाशसंज्ञम्⁴⁵

॥२०॥

निधाय जङ्घायुगलं युक्त्याः

स्वकीययोः कूर्परयोरथाख्याः ।

कण्ठे स्वबाहू परिणीय गच्छे-

त्यतिस्तदा⁴⁶ संयमनाख्यमेतत्⁴⁷

॥२१॥

मुखे मुखं⁴⁸ बाहुयुगे स्वबाहू⁴⁹

जङ्घाद्वये जङ्घयुगं निवेश्य ।

गच्छेत्पतिश्चेदिति कौर्मिकं स्या-
दूर्ध्वोर्युग्मात्परिवृतिताख्यम्⁵⁰ ॥२२॥

स्थितां स्त्रियं कुञ्चितपादयुग्मां⁵¹
तथैव भर्ता कृततिर्यगङ्गः ।
भजेत चेत्कामकलाविदग्धो⁵²
बन्धं तदा युग्मपदं वदन्ति ॥२३॥

विलासिनीकूर्परमध्यवती
कटिं स्वकीयां भ्रमयन्मुहुश्चेत्⁵³ ।
भजेत भर्तेति विमर्दितं⁵⁴ स्यात्⁵⁵-
त्तन्मार्कटं संमुखसंगमेन ॥२४॥

॥ अथ स्थितबन्धः ॥

संवेष्टयित्वा⁵⁷ निजकूर्परेण
जान्वङ्गनाया। अवलम्ब्य⁵⁸ कण्ठम् ।
रतिं प्रकुर्यादिति कूर्पराख्यो
बन्धः प्रदिष्टः स च जानुपूर्वः ॥२५॥

उक्तप्रकारे करणे यदैकः
पादो भवेदूर्ध्वगताऽङ्गनायाः ।
तदा प्रदिष्टो हरिविक्रमाख्यो
बन्धः प्रियोऽयं तरुर्णाजनानाम् ॥२६॥

कण्ठं भुजाभ्यामवलम्ब्य भर्तुः
श्रोणिं निजोर्वोर्युगलेन गाढम् ।
संवेष्ट्य कुर्याद्रतमङ्गना चे-
दुक्तः कवीन्द्रैरिति कीर्तिबन्धः ॥२७॥

॥ अथ ध्यानतन्त्रः ॥

धिन्यस्तपाप्यङ्घ्रियुगा^{५०} धरण्या-
मधोमुखी धेनुवदग्रमंस्था ।

स्वा स्यादथास्याः कटिदेशवर्ती^{५१}
भर्ता भजेद्वेनुकमेतदुक्तम्

॥ २८ ॥

अधोमुखीं मस्तकदोःकृचास्यै-
भुवं गतां क्रामति यत्र नार्गम ।

करीव भर्ता रतिलोलाचित्त-
स्तदैभमंजं कर्णं प्रतिष्ठम्

॥ २९ ॥

ऐणसौकरकृगार्दिभादिका-
न्यपनाजकनयात्र^{५२} भूर्गिञ्ज ।

अप्रमिद्धकरणानि नी मया
दर्शितान्यतिविनिन्दितानि च

॥ ३० ॥

॥ अथ पुरुषायितन्त्रः ॥

जातश्रमं वीक्ष्य पतिं पुग्न्धी
स्वेच्छ्रात एवाथ रतेष्वतृषा^{५३} ।

कन्दर्पवेगाकुलिता नितान्तं
कुर्वीत तुष्ट्यै पुरुषायितं सा^{५४}

॥ ३१ ॥

उत्तानसुप्तं दयितं भुजाभ्या-
मालिङ्ग्य लिङ्गं विनिवेश्य योनौ ।

भजेन्नितम्बं परिचालयन्ती
नारी तदा स्याद्विपरीतबन्धः

॥ ३२ ॥

सुप्तस्य पुंसो जघनोपगन्थिता⁶⁵

संभ्रामयन्त्यङ्घ्रियुगं त्रिवुञ्जितम् ।

चक्राकृतिः स्त्री नगविद्धिचेष्टते

तद्भ्रापगख्यं करणं⁶⁶ सर्मारितम्

॥ ३३ ॥

प्रेङ्खविभ्रमवती⁶⁷ स्मरयन्त्रे⁶⁸

भर्तृलिङ्गमुपाधाय पुरन्ध्री ।

भ्रामयेत्कटिपतङ्गद्विलोला

स्यात्तदा करणमुत्फलिताख्यम्

॥ ३४ ॥

त्रिपरीतरते सर्मात्कृता

दरहासातिपनोरमानना⁶⁹ ।

क्वितवाद्य वशं गता ऽसि मे

स्मरयुद्धे विजितो ऽसि चाप्यलम्

॥ ३५ ॥

इति मञ्जु रटन्त्ययाकुला⁷⁰

सकचाकर्षणचुम्बिताधरा ।

श्रमनीलित चारुलोचना⁷¹

द्रवतां याति तदा⁷² विलासिनी

॥ ३६ ॥

श्लथदेहलतां⁷³ समूर्धनां

दरसंमालितलोचनात्पलाम् ।

सभवेक्ष्य नितान्तनिःसहा-

मवगच्छेद्वलां⁷⁴ द्रुतामिति⁷⁵

॥ ३७ ॥

करिणीं हरिणीं च गर्भिणीं

नवसूतामृतुयोगिनीं⁷⁶ कृशाम् ।

ज्वरितां च कुमारिकां रते

विपरीते परिवर्जयेत्सुर्धाः⁷⁷

॥ ३८ ॥

॥ अथ करताडनमोक्तोद्देशः ॥

कामयुद्धाङ्गयुग्मं⁷⁸ स्यात्करताडनसीत्कृते ।

तत्ताडनं चतुर्थोक्तं⁷⁹ सीत्कृतं पञ्चधा स्मृतम्

॥ ३९ ॥

प्रसूतेनापहस्तेन⁸¹ मुष्टिना, समपाणिना, ।

ताडनं स्याद्भ्रतुर्थं तस्य स्थानानि संव्रुवे⁸¹

॥ ४० ॥

पार्श्वे गुह्ये मपतलं मुष्टिं⁸² शृष्टे ऽथ मर्धनि ।

फणाकारं प्रसृतकं युञ्ज्याद्भ्रुवपहस्तकम्

॥ ४१ ॥

॥ अथ ताडनभेदाः ॥

विपरीतरते⁸³ यदाङ्गना

हृदि मुष्ट्या परिताडयेत्पतिम् ।

करघातकं⁸⁴ तदा वृधै-

रिति संतानितसंज्ञमुच्यते

॥ ४२ ॥

विस्तीर्णहस्तेन यदा रतौ⁸⁵ स्त्री

हन्यात्पतिं स्यात्स पताकसंज्ञः⁸⁶ ।

अङ्गुष्ठकेनैव कृतः प्रहारो⁸⁷

विज्ञैः म उक्तः खलु विन्दुमाला⁸⁸

॥ ४३ ॥

साङ्गुष्ठमध्याङ्गुलिकाप्रहारं⁹⁸

शनैः पुग्न्धी कुरुते ऽतिरागात् ।

यद्येष उक्तः कृषिभिः पुगणै-

रानन्दकृत्कु⁰डलनामधेयः

॥ ४४ ॥

॥ अथ सीत्कृतभेदाः ॥

अथ सीत्कृतभेदांस्त^{१०} पञ्चैव क्रमतो ब्रूये ।

दिकृतं स्तनितं सीत्कृतं त्कृते^{११} ? सूक्तं तथा ॥ ४५ ॥

उच्चारो मुखनासाभ्यां दिकृतस्याभिजायते^{१२} ।

स्तनितं मेघगम्भीरघोषवत्स्यात्ततः परम्^{१३} ॥ ४६ ॥

सीत्कृतं^{१४} तत्तु भुजगोच्छ्वासवत्स्यादथोत्कृतम् ।

वेणुविस्फोटनाघोषतुल्यं^{१५} स्यादथ फूत्कृतम् ॥ ४७ ॥

मेघविन्दुर्यथा तोये निपतेत्तद्रवाकृति ।

सीत्कृतस्येति पञ्चैव क्रमाद्भेदाः समीरिताः ॥ ४८ ॥

लावकोक्किलकपोतहंसिका-^{१६}

नीलकण्ठरुतसंनिभान्क्रमात्^{१७} ।

संदधाति किल दिकृतादिकां-

श्वित्रभागसमये विलसिनी ॥ ४९ ॥

सुरते दशनच्छदो^{१८} यदा^{१९}

प्रमदायाः परिखण्ड्यते भृशम् ।

दयितेन तदातिरागकृ-^{१००}

त्क्रियते सीत्कृतमञ्जसा तथा ॥ ५० ॥

॥ अथ सीत्कृतभेदानि ॥

निखिलसुरतचिह्नैरङ्किताङ्गः सपत्न्या^{१०१}

अरुणकलुषनेत्रो^{१०२} निद्रया जीवितेशः ।

सभयमधुरवाक्यः^{१०३} प्रातरभ्येति यस्याः

कथयति भरतस्तां^{१०४} स्वण्डिताख्यां पुरन्ध्रीम् ॥ ५१ ॥

वनिता शुभवासवेश्मनि¹⁰⁵

मृदुशय्यामधिवाहिनी निशि ।

पतिमार्गचिरार्थितेक्षणा¹⁰⁶

कथिता वासवसार्जिका बुधैः

॥ ५२ ॥

सागन्ध्या चरगगं दयितं प्रचण्डै-

र्वाक्ष्यैर्निरस्य बहुकापत एव पश्चात् ।

संजायते विरुद्धतापविलापदीना¹⁰⁷

या तां वदन्ति कलहान्तरितां कवीन्द्राः

॥ ५३ ॥

मदनाकुलितानिनिस्त्रया

कृतभूषा निशि गूढवारिणी ।

सुरताप परालये¹⁰⁸ व्रजे

त्कवयस्तामभिमारिकां जगुः¹⁰⁹

॥ ५४ ॥

प्रियतममुपनेतुं प्रेषयित्वैव¹¹⁰ दृतीं

स्वयमतिरतिलोला¹¹¹ याति संकेतदेशम् ।

तदनु पतिविहीनामगतां व्रीक्ष्य तां या

दहति बहुलतापं सोच्यते विप्रलब्धा

॥ ५५ ॥

दयिते परदेशसंस्थिते

शशिपङ्केरुहचन्दनादिभिः ।

परितप्यत¹¹² एव यद्रपुः

कथिता म कविभिर्वियोगिनी

॥ ५६ ॥

वैराग्यवान्सकलकलिकलाकलापे¹¹³

कान्तो जहाति न समीपमनङ्गल्योल्यात् ।

यस्याः स्त्रियाः सुरतमौख्यविचर्चिता ¹¹⁴ सा

स्वाधीनपूर्वपतिकेति बुधैः प्रदिष्टा

॥५७॥

विविधकुसुममान्वाभूषिताङ्गी मनोज्ञा

सुरवरसत्रिलोला सानुरागा स्वकान्ते ।

निवसति चटुल्भा ¹¹⁵ वासगेहे चिरं या

वरकविभिरहोक्ता सा विरोत्व पिठतेति ॥५८॥ ¹¹⁶

सुविदितपरमार्थः कामशास्त्रस्यै विद्वा-

न्विविधरतिविनोदैः कामिनीनां मनामि ।

अनुदिनमनुरागाद्रज्यंयः ¹¹⁷ सलीलं ¹¹⁸

फलप्रविक्रममेव ¹¹⁹ प्राप्नुयाज्जन्मनः ¹²⁰ सः ॥५९॥

यावच्छंकरमौलिगा ¹²¹ सुरनदी गौरी तदर्धाङ्गना ¹²²

यावत्प्रेमवती पयोधितनया वैकुण्ठनाथे हरौ ।

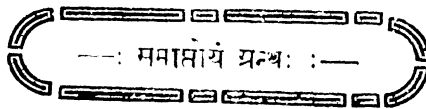
वेदाभ्यासरतो विरञ्चिरपि भूर्यादिनेशः कशी

भूयात्तावदनङ्गरङ्ग इति ¹²³ प्रीत्यै सदा कामिनाम् ॥६०॥

इति श्रीमल्लोडवानविनोदाय महाकविकल्याणमल्लविरचिते

ऽनङ्गरङ्ग सुरतादिभेदनिरूपणं नाम

दशमः स्थलः ॥ १० ॥





1926.

Printed At The ' jayalaya '
Press, Mysore.



NOTES.

I.

(1) IO, P 204 (and the English Translation) open with the following stanza:

दद्या लाक्षां नखाग्रे तदनु सुरधुनीधौतहस्ताग्रभागं,
भक्त्या भालस्थलाग्रौ तदनु नयनयोः कञ्जलं संनिवेश्य ।
कण्ठे संप्रोक्ष्य नीले तदनु च विजयादत्तमादर्शमङ्गे,
शम्भोर्भस्मानुलिप्तेः पुलकिनि मृशती पार्वती वः पुनातु ॥

(2) A remarkable reading is सत्यसंधाभिरामं of P 238. —

(3) B ° प्रदुर्भूताश्रुसिधुस्तमित °; IO ° भूतांबुराशिः शमित °
R ° भूतांबुराशिः समित °; P 238 स्तितमित °; L ° मितजवतया.—

(4) IO स्लावितश्च.—(5) B IO P 204 तत्पुत्रः, R तत्पुत्रं.—

(6) M ° ईष्ट °.—After stanza 2, V reads as follows:

तस्य भूरिगुणरत्नतोयधेः प्रेमपूर्ववचनानुरोधतः ।
कौतुकाय रसिकानुगञ्जनं शास्त्रमुत्तममिदं विरच्यते ॥

शम्भोजिनीबन्धुकुलप्रसूतः ,

कर्पूरराजन्य उदारकीर्तिः ।

तीव्रप्रतापानलदग्धशत्रुः

त्रैलोक्यचन्द्रः चित्तिपाल आसीत् ॥

तस्यात्मजो ऽस्ति गजमल्ल इति प्रसिद्धः

संग्रामसंगतपराजितवैरिवृन्दः ।

चान्त्याद्यशेषशुभलक्षणसन्निवासः

चन्द्रांशुनिर्मलयशोरुचिरीकृताशः ॥

(7) B तस्यैव ; L °रङ्गग्रन्थं; V पुत्रो ऽस्य तस्य कुतुकार्थमनङ्गरङ्गं. (8) M विलास°.—(9) IO, R श्रीमन्म°; L omits महा; B कलाविदाढ्यः.—(10) B भूपमणि°, M भूपमनु°, L भूमि-मुनि°.—L adds here the stanzas परिजनपदे°, भूयो भूयो°; and असाध्यायाः°, which are taken from the Ratirahasyam (I. 3 5. 6).—(11) M भवानि.—(12) B वचनैर्मुनीनां, P 238 वचने.—(13) B स्वभात् (=स्वभावात् ar reads P 238); M स्वभावः.—(14) IO नो जात्यादि°.—(15) L कामतत्त्व°. This stanza is an imitation of Ratirahasyam I, F:

संसारे षटलान्ततोयतरले सारं यदेकं परं
 यस्यायं च समग्र एव विषयग्रामप्रपञ्चो मतः ।
 तत्सौख्यं परतश्चवेदनमहानन्दोपमं मन्दधीः
 को वा विन्दति सूक्ष्ममन्मथकलावैचित्र्य मूढो जनः ॥

After this, V inserts the following stanza:

✓ सुविदितपरमार्थः कामशास्त्रस्य विद्वान्,
 विविधरतिविनोदैः कामिनीनां मनांसि ।
 अनुदिनमनुरागाद्रञ्जयेद्यः सलोलं
 फलमविकलमेव प्राप्नुयान्मानवः सः ॥

(16) L तथा.—(17) M पूर्वपूर्वतरैस्तासु; B, IO, R, P 204, 238, and ख, ग read क्रमाच्चतुर्धा नारीणां लक्षणानि ब्रुवेऽधुना [IO तथा].—(18) L प्रान्तेरङ्ग, IO, M, R पीतारङ्ग°.—(19) IO, R दीप्त.—(20) M ग पङ्कज instead of चम्पक.—(21) L ° तुल्यवद-ना रम्या, IO, R ° तुच्छमदन°.—(22) M, IO मध्ये.—(23) R शुक्नासिकेति.—(24) B, L ° स्वरा.—(25) M मधुगन्ध्यतोष्ण-

पि; B, IO, P 238 ° गन्ध्यथोऽणमपि.—(26) M, U, B, IO सा
 तुच्छोन्नतं.—(27) IO रत्यम्बुना सर्वदा.—(28) L R भृंग °.—
 (29) L चित्राभोगवती, V, B, IO, R, M, ख ग ° शक्ति °; V, B °
 मती.—(30) L दीर्घ बाहु कृशं शिरः, M R ° शिरः.—(31) L
 कर्चैः श्रानिम्नाऽऽकृटिलेक्षणा.—(32) L यच्छति.—(33) M
 त्रपाहीना.—(34) L ° स्वना.—(35) M कृपावर्जिता—(6) B ° कृ-
 चरणा.—(37) P 204 ° मदोग्रगन्धि.—(38) L मन्दगां.—(39) V
 रतेर्वस्वादित्यं ; IO, P 204 भाग्या °.—(40) M प्रायो द्रवेष्वि-
 णी.—(41) L ° गुणस्मराख्यतिथिषु.—(42) L ° मितास्वाशुद्र-
 वेद्रस्तिनी.—(43) L द्रवान्तं.—(44) L प्रथमे च.—(45) L omits
 प्रीत्यै.—(46) M, B ° चरणे.—L inserts (before stanza 15) the
 stanza of Ratirahasyam II, 1 as follows :

अंगुष्ठेपदगुल्फ जानुजघने नाभौ च वक्षस्तने,
 कक्षेऋणकपोलदन्तवसने नेत्रे तथामूर्धनि ।
 शुक्राशुक्र विभागतोमृगदृशामङ्गेष्वनङ्गस्थिति,
 रुर्ध्वाधोगमनेन वामपदतः पक्षद्वये लक्षयेत् ।

(47) M, ख, ग add the following stanza (=Ratirahasyam
 I, 22):

ब्रजति रतिसुखार्थी चित्रिणीमग्रयामे,
 भजति दिनरजन्योर्हस्तिनीं च द्वितीये ।
 गमयति च तृतीये शङ्खिनीमार्द्रभावं,
 रमयति रमणीयां पश्चिनीं तुर्ययामे ॥

(48) ख, ग L शशियोगतो, M शिशिरागमे.—(49) L तथा.—
 (50) M रवौ.

II.

(1) IO, M कक्षौ.—(2) L ° जानुनि पुर्नमुष्ट्यासकृद् ° ; that
s to say, it omits गुल्फे-शनकैर् (stanza 3).—(3) IO, P 238
शुक्राशुक्र ° —(4) M संदघात्कुचपेटिकां, B संदघात्तु चपेटकं,
[O, ° त्कुचपेटकं.—(5) V wrongly ° मुष्ट्या सकृद्.—(6) L
दन्तैर्नखैः सादरम्.—(7) M ° विधौ.—(8) L नीताः.—(9) L
° नयना.—(10) L गण्डपालीनितम्बे.—(11) M विदधति रदनैः
12) L सीत्काराकारि वक्रामतिलघुनलिनीं !! B पदिपदि.—
(13) IO द्रावयेत्तां.—(14) L, M, IO नखादि; IO कृत्वा.—
(15) B, M ° नयनां.—(16) M युगराज्यतिथ्यां.—(17) M ° द्रव-
वशं.—(18) V सहषाम्.—(19) L छिन्धादाशु.—(20) M यच्छन्न-
खान्यादरात्.—(21) M दोमूले नखरै सकच्छकलितं कुर्वन्तृतीयां
तिथौ.—(22) M कुर्वन्निजां; L कुर्याद्वशे कामिनीं.—(23) B,
IO कुचं.—(24) M चञ्चुयुगलं परिपीड्य; B, IO परिचुम्ब्य.—
(25) B, P 204, 238 केशांश्च.—(26) L चित्रिणीमपि.—(27) L
पाणिं.—(28) This line is wanting in L.—(29) L स्रुतकामवा-
रिनिचयां.—(30) M समालोढयेत्.—(31) M प्राञ्चत्पाणिरुहैश्च
लिख्य.—(32) B गंडयुगले, M ताथपलको.—(33) M दशित्वा
धरं.—(34) M दिशेत्.—(35) M संकृष्येच्चिकुरान्वि °.—(36) L
पाण्यभ्यां.—(37) M करपाणि °.—(38) V तृतीयास्वलं, M
तृतीयाबलं, L ° दिने.—(39) M कुर्यात्प्रियां.—(40) L कृतौष्ठ-
पानः.—(41) L परिरभ्य रदच्छदं पिवन् सुरतेशो रतिभावको-
विदः, M रदनछदं वचनाघातरतो; IO, R ° रसे.—(42) V

कृष्णतिथौ, B मुक्तिथौ, IO हारतिथौ.—(43) L विलिखंस्तु
 नखैः.—(44) M समीक्षितम्.—(45) B मनोभवः, M मनोभवस्य
 —(46) L, M निपीड्य.—(47) L, IO ° देशे.—(48) M विभिन्नां
 (49) M स्ववशम्भूततिथौ.—(50) L तीक्ष्णैः करैः.—(51) M
 °करणं संने(?) स्वयं केलिषु.—(52) L कामागारसुचूचुका °; IO
 कामागारचूचुरिकां.—(53) M निस्सहतरं.—

III.

(1) L गाम्भीर्येण मनोजमन्दिरभवेनांगुल्यभिख्यातिना. —
 (2) L जात्यास्ते हरिणाः.—(3) V मृगयोऽश्वा द्वि °; L मृग्यश्चीद्वि °.
 (4) V समयोगाः—(5) L हरिणीवृषभस्तथा °.—(6) L ° तुरग-
 श्चोच्चमिदं.—(7) L रते, B, IO रतेः.—(8) L तुरङ्गीहयसंयोगे,
 M हरिणी °, B हरिणीशशयो °.—(9) B ° श्रैव.—(10) L नी-
 चोत्तमे, V नीचाधमात्युच्च °, M, B नीचाधमे, L ° मत्यन्तनेष्टं.
 (11) M पुराणैः instead of प्रदिष्टम्.—(12) B, R नैव शाम्यति.
 —(13) L अतस्तुल्ये हि; B ° संभोगात्. —(14) B विदुः.—(15)
 IO, R नहि तासां.—(16) L कण्ठीति शमयन् भूयः.—(17) B
 सुखयंस्त्रिविधै °.—(18) L बहु वेद्मति मोदते च; B ° रोदनेन;
 M करोति चपला न चलोदते च.—(19) L समयामिति °; M
 समयः प्रतिभेदतः क्रमात्त्रिविधैः.—(20) L भेदांश्च; M ° मन्दा-
 ख्यास्त्रिनङ्गांश्च विदु °.—(21) L क्रमाच्च त्रिविधा ° चिरोदयाः.
 —(22) L ° संख्यं हि कीर्तितं च रतं.—(23) M विपरीतमेतन्मध्य-
 स्वभावः.—(24) B omits कोमल; शांता रथाल्पाशनाः; L
 शान्तास्तथाल्पाशनाः.—(25) B ° मुखाः स्थूलाल्य °.—(26) B,

IO, R, P 138 विभ्रन्तः, M चित्रान्तः.—(27) L सम्भोगान्प-
 सुखाः.—(28) B ° भृतस्त्वारक °.—(29) L, M विभ्रतः.—(30) M,
 B ° शिरोधरा °.—(31) M कृशकन्दरालघुरदश्रो °.—(32) B तो-
 पिणः.—(33) L, B, M पीनोह °; M स्फुट instead of स्थल.—
 (34) L प्रौढैर्घ्याः कुटिलाङ्गजानु कुनखा; B ° जानुजघना.—(35)
 B ° सुगन्धि °.—(36) V आदित्यांगुलि °.—(37) L विभ्रते, M
 विभ्रतः.—(38) L चुङ्ग², M प्रतुङ्ग °.—(39) B सुतुच्छोदरी.—(40)
 L कोमलवलिर्वयभुजिका, M कोमलवच्चुजूभुजलता, V कोमल-
 पल्लवालघुभुजा, B कोमलचारुवर्तुलभुजा.—(41) L ° कर्णा शु-
 भा.—(42) L चारु instead of मञ्जु; M ° म्बुजगन्धिमन्मध-
 जलास्पन्दं; IO, R शीतोष्णा मकरदंगंधि °.—(43) M कान्ते
 ऽतिरामान्विता, B कान्तानुरागा °.—(44) L प्रवलप्रगन्धि.—
 (45) M ° कर्णयुगला.—(46) V ° गलकाप्रातिस्थूल °; IO, R, M
 प्रस्फार °.—(47) M रदवक्त्रर्व °, B रदवक्र °, IO पिगाचो-
 दर °.—(48) M, R ह्रस्वा.—(49) M, L ° स्वरा.—(50) B त्यक्तः
 स्पृहा.—(51) M चपलाङ्गिका, B तरलांगिका.—(52) B रतादं-
 पत्यं.—(53) L ° भोजिनी.—(54) L, IO ° गन्धिमपि.—(55) L
 दृश्यते.—(56) L तत्सङ्करे ऽपि बाहुल्याल्लक्ष्यं निर्धारयेद्बुधः;
 B संकृयाच्चाविशेषतः

IV.

(1) B ° संख्यकाष्टमुदिता.—(2) L तत्तस्त्रिंशतिं.—(3) L तरुणी
 पत्रिविशिखैः प्रख्यन्तु; M ° विशिखैस्संख्या तु.—IO ततः सा
 —(5) B कामकलापविधिषु, TO, R कामकलापजातविधिषु.—(6)

M मानिभिः.—(7) B ° जीवति °, M जीवन °.—(8) L प्रिय भू-
 षणैः.—(9) L रज्यति.—(10) L, M, IO, R स्वालाप°; M °गौ-
 रवः.—(11) V भामिनी.—(12) V, B ° वर्णातिखर्वा.—(13) V M
 ° योग्या, B ° योगा.—(14) M गूढकच्छा, IO प्रौढकचा.—
 (15) V कफप्रकृतिका श्रेष्ठा, IO, कफप्रकृतिरुत्तमा, R श्रेष्ठ-
 बला कफप्रकृतिः, B बलाश, ° as have also P. 204, 238; L बला-
 स°.—(16) IO मध्यमा पित्तला.—(17) M, B, IO ° भिदधमहे.—
 (18) V ° पादयुग्मा.—(19) M सुरतेतिदचा, IO च दृढा °.—(20)
 M शान्तमृदु °.—(21) L च.—(22) B क्षणवृत्ता, M क्षण त्या
 [!], IO क्षणप्रसन्नकृपिता, P 138 क्षणवृत्तप्रसन्ना, V क्षणं रुष्टा
 —(23) L प्रौढ °.—(24) L सोष्माश्लथ °.—(25) B चं.—(26) L
 प्रलापिका; B ° केशकलापिनी; IO ° प्रलापिता.—(27) M रुक्-
 पङ्कजलोचना.—(28) L सन्तोषयुक्ताखिल कर्मदचा.—(29) M नि-
 र्मलकान्तिवेषा.—(30) L रोगान्विता, M रोमान्विता.—(31) L
 अतीवसख्यादिषु, M °संख्यादिषु बद्धवाञ्छा सुरागिणी.—(32) M
 नानारतैरेति.—(33) M प्रहासं.—(34) L हृष्टा सुवासाः.—(35) M
 सर्वातिकष्टा.—(36) L भवेदियं स्त्री तु.—(37) M, B, IO सो-
 च्छासं बहु जृम्भते.—(38) M निद्रासक्तिश्च.—(39) L उद्योगं, M
 सफलं.—(40) L नेत्रं; M सम्भ्रमयन्मुहुः.—(41) L बुभुक्षापीडि-
 ता नित्यं; B अतिक्रुधार्ता, IO अप्रतीता च.—(42) L काकस-
 स्वा प्रकीर्तिता.—(43) V अत्यन्तं.—(44) L ° संयुक्ता, M ° सं-
 सक्रा, B, IO ° रक्ता च.—(45)—IO, R सोच्यते.—(46) M, IO
 ° दुष्ट.—(47) IO, R विषयानेव वाहते.—(48) L गानादौ; B
 स्नानाद्यैः.—(49) L, IO, R ° सञ्जा तु सा.—(50) M नारीणां

मन्त्रभावितः —(51) M, IO प्रधान —(52) L प्रवसनमथ रोगो
 शार्द्धकं चापि पत्युः —(53) M वसतिरपि च, B, IO वसतिरेथ
 च —(54) M क्षितिरेपि निजदत्ते —(55) L ° समयज्ञतादि —
 (56) M भर्तृणामनुवादिभिश्च —(57) L, M प्रयाति —(58)—L संप्र-
 तीच्छति, B सा प्रयच्छति —(59) B चापि सीदति —(60)—B
 सम्यगाभ्या ° —(61) M स्मृता —(62) B अभ्यासजा सा दुः
 साध्या —(63) V, B सा —(64) M सान्द्राणि स्वर्ग्यभूत्वा च —
 (65) L reads:

नैसर्गिकी स्वभावोत्थापूर्वजन्मसमुद्भवो ।
 दम्पत्योरुत्तमा प्रीतिर्वज्रलेखेव राजते ॥

(66) IO प्रोक्ता —(67) This stanza is wanting in M.—(68) B
 षड्विधः —(69) V प्रोक्तः —(70) M, IO, R कामवेगस्तथाष्टधा—
 (71) M ° संनिभा corrected into ° कोमला —(72) V गोजिह्वा-
 भा खर °, M गोजिह्वाथस्समस्पर्शः, IO, R गोजिह्वावत्खरस्पर्श-
 त्युक्तं भेदचतुष्टयं —(73) L ° पूर्वतरास्ताश्च, M ° पूर्वगुणं तत्तु
 श्रेष्ठं ज्ञेयं —(74) M स्थिता नात्ये —(75) L ° समाकृतिः, B, IO
 हि सा; M ° समीहता —(76) L स्यन्दते सम्भो —(77) L स्यन्दते
 यत्तु कामाग्भः —(78) B ° मध्याद् ° —(79) L निरन्त-
 रम् —(80) M मन्मधाकृतामित्या °, L ° मित्याहुः कामशास्त्रविशा-
 रदाः —(81) V योनिमध्ये; L ° रन्ध्राश्चातिदूरे —(82) L, V
 तद्विसर्गे —(83) L, V मार्गादि ° —(84) M नाल्पज्वरयुतसुतनु-
 स्त्यक्रमानाप्रसन्ना; L नव्या ज्वरकृततनुता —(85) IO वरांगी —
 (86) L पुंसां —(87) M कुचयुगे —(88) M प्रियं प्रियतमा —(89) M
 दीयते —(90) B, IO प्रन्यक्तं —(91) M सथ कुरुते —(92) B

माला, IO मूलं.—(93) L सुरते स्पृहा.

V.

- (1) L, V °रम्या.—(2) M °देशे प्रभवा.—(3) V, B ° रत्न° M ° रति °
 —(4) M परिरभ्यलालसाः.—(5) M ° चुम्बतिकार्यं.—(6) V रद-
 च्छद°.—(7) M मृदूपचारा च रता विहंसी.—(8) L
 मर्दनेन, M नर्मवर्षा, IO मर्मदन्ना.—(9) L स्यादान्ध्र-
 देशप्रभवा.—(10) M ° कण्डूलयुत°.—(11) M चन्द्रध्वजभूतला-
 च्चिरं.—(12) M रतिप्रयङ्गे.—(13) V कोशलदेश°.—(14) M महा-
 राष्ट्रेभवास्सन्ततं.—(15) M, B नानदेश°.—(16) M ° धृतशंसा;
 B ° भृत°.—(17) M सुरक्ता.—(18) M विरलनेत्रा.—(19) L गौड-
 जा वङ्गजा च.—(20) M नखरासतोषिणी.—(21) M मदवर्धा कलि-
 तेयमु°; B, IO कथितेयमु°; B ° मुद्गलो, IO ° मुन्कुला.—(22)
 M स्मरकेलिसंगरे.—(23) B ° विगोपने; M IO ° निगोपने.—
 (24) IO दृढसंभोग°; B ° संभोगरत°.—(25) B कथितेयं.—
 (26) L सुकोपनाश्चञ्चल°; B ° दृष्टिपाताः.—(27) B खलु.—
 (28) B ° भवाः पुरंध्रयः.—V, IO transpose stanzas 12 and 13.—
 (29) M °पद्मवदनाः.—(30) B ° परिपीडन°.—(31) L, M, B ° रतिः
 —(32) M तैरभुक्तिः—(33) M, IO ° पुरे.—(34) M ° प्रसूतास्त्रैलिङ्ग-
 जा स्युः किल कामिनीस्ताः; B स्युरंगनाश्चेति तिलंग°, IO
 स्युरंगना नागतिलंग.—(35) L प्रसाहसा, B ससाध्वसा.—(36)
 B द्रविड; L प्रसूताः.—(37) V ° देशे stanza 36 is wanting in
 the Madras Manuscripts.—(38) L नखप्रदानादि°.—(39) L
 ° रोषाः, M ° जातिवेषः; B, IO ° दोषाः.—(40) L दौष्ट्यभृतः
 (41) L काञ्चोजगौड°.—(42) M ° प्रभवाश्च नार्यः.—(43) B सं-

चुवनलिंगन °, M सुचुम्बनाश्रेषण °.—(44) V गाध्रयाश्च, B गां-
 ध्याश्च, IO गांध्याब्धकाश्मीर.—(45) B, M ° भवाः पुरंधयः.—
 (46) L ° सात्म्यमवबुध्य सदैव.—(47) L, B संतोषयच्च.—(48) L,
 IO ° प्रयोगैः.—(49) M प्राणैस्सदा समुपयानि न; B समत्व-
 मपि'याति.—

VI.

(1) IO, R ° विदग्धैः.—(2) V M ° साम्यं.—(3) M विज्ञेयं.—
 (4) M कला विन्दोरगोचराम्.—(5) V व्योषा °; M माषा चूर्ण-
 कश्च वरा °.—(6) M क्षिपेन्नताङ्गी सा ° प्रागेव द्र °.—(7) B ° सम-
 न्वितं.—(8) M ° येद्भ्रवम्, V ° येद्रेते, B ° येद्रतौ.—(9) B
 सतांबूलं.—(10) B, IO यासां.—(11) B टंकणं चैव शंभुवीजं
 त्रि °; M ° बीजं तेन त्रि °.—(12) M लिङ्गलेपाच्च, B ° लिंगश्च -
 (13) M स्त्रियम्.—(14) M ° पतेन्धरस °; L ° रसे संमर्द्य टङ्क-
 णम्; IO, R वा instead of च.—(15) L तेन लिप्त्वा ध्वजं
 शीघ्रं कान्तां सन्द्रावयेन्नरः.—(16) V व्योषा °, M व्यूषा °.—(17)
 L संपरिलिप्य शीघ्रं.—(18) M, B कुर्याच्च.—(19) M लिप्यते
 instead of पिप्लो.—(20) L ° साध्यामपि द्राग्.—(21) M °मद-
 रागा, V, B ° रति °, B ° रागात्, L द्रागलमपगतरागां.—(22)
 L संविदध्यात्पुरन्ध्रीम्, M ° रागा सा विन्द्यादवष्प्रम्.—(23) M,
 B IO ° भ्रमसत्त्वरा.—(24) L, M, B, IO विलासिनीनाम्.—(25)
 L लज्जालुवीजङ्गो °.—(26) V चिराद्वीर्यं.—(27) IO, R विभुंचति
 —(28) B, IO त्वरा, M त्वराम्.—(29) L मूलैः.—(30) L ° के-
 सरैः.—(31) V वीर्यं; L स्तम्भन्ति; M चौद्र नाभि च सल्लेपा-

द्वीजं स्तंभन्ति .—(32) L शपाकं, M सपाकं.—(33) M गोजुरं.—
 (34) V तु.—(35) M लेपयेच्चासौ .—(36) V वीर्यं.—(37) V ° को-
 किलमूलं च; M, B, IO ° कोकिलनाम्रथ .—(38) L बीजस्तम्भ-
 करं परम्; IO नरो बीजं न मुंचति.—(39) B तु; IO मूलं वा;
 M बीजं च.—(40) M श्वेतपुङ्खस्य मूलं.—(41) M स्तम्भयेच्चिरम्.—
 (42) B स्तम्भते; IO, R स्तम्भनं.—(43) B संभोगात् .—(44) M
 ततश्शरीर °.—(45) M ले टं.—(46) M ° भाविता धात्री चूर्ण °.—
 (47) M क्षौद्रेण लीढं रात्रौ तु; L क्षौद्रेण नाभिसंलेपात् . The
 reading adopted above is, according to Rāmacandraśāstri, also to
 be found in the Kāmaprakāśa.—(48) M ° नागबलापहम्.—(49) B
 शतपुष्पायाः; M चूर्णेन.—(50) B पीतं क्षीणस्य.—(51) M सि-
 तासाक्षिरगोक्षीरमाषी °; B ° गोक्षीरं.—(52) M चूर्णस्तु; V
 वटिका शुभाम्.—(53) B तरुणो.—(54) After stanza 25, M adds
 the following passage:

मधुकं मधुना घृतेन च

प्रलिहन्क्षीरमनुप्रयोजयन् ।

लभते रुचनात्मना क्षयं

प्रमदानां प्रियतां च गच्छति ॥

The g manuscript reads लभते ऽथ च नात्मनः क्षयं.—
 (55) B मध्वाज्यैश्चूर्णं कर्षं वा; IO, R ° चूर्णकार्यं वा.—(56)
 M विध्या.—(57) B, IO व्रजेत्.—(58) M सिता °: M, L, B, IO
 °पिकाख्यस्य.—(59) IO षष्ठिसंभवाः .—(60) B शतपुष्पा °.—(61)
 L सर्पिः समं दशगुणं पयः.—(62) L भवेत्.—(63) B मृतलोहं च
 त्रिकला यष्टिमधु °.—(64) B दिनांते मधुना लेढि स; L दिनान्ते
 यो लिहोन्नित्यं; M दिनान्ते लीढयेलिसं.—Stanza 29 is wanting

in IO.—(65) IO R तस्मात्तत्प्रीतये .—(66) L ° रिपुश्चैतत्सर्वं.
—(67) M सचूर्णं.—(68) IO, R लिंगे यस्य; M लिप्तलिङ्गो; L
विधीयताम्.—(69) L ° दपि सूक्ष्मं तद्; B मुहूर्त्तादपि; M °सू-
क्ष्माच्च.—(70) L ° लिङ्गो वृद्धिमवाप्नुयात्.—(71) L तिलाः
श्वेताश्चेति सर्वं संपेष्य मधुना सह; V संपिष्ट्वा (!!); M तिलैश्चैव
निसंपित्य; IO तिलाश्चैतानि .—(72) L कुच instead of स्तन;
V योनि instead of पाली; M प्रयाति कर्णपालिश्च तनुलिङ्गं
(73) M कुष्ठलवणं .—(74) V घृष्टे .—(75) B विमर्दयेत् .—(76)
M भविष्यति, L भवेद् ध्रुवम्.—(77) M ° बलिकर्कैस्समुद्भवम्
(78) M तैलसंसाधितालिङ्गैर्योनि°; L कुच instead of योनि;
B ° विमर्दनं .—(79) B ° प्रसूतापि.—(80) IO, R श्लक्ष्णं .—(81)
M अतश्च कामिनां प्रीत्यै विधिं संकोचकं ब्रूये .—(82) L सनाल-
कमलं, M सताल°.—(83) IO विनिधाय .—(84) V, M ° युगमं
सरसी°.—(85) IO नयेत् .—(86) L, M, IO, R पिकाख्य .—(87) L
° त्वक्...चटैः, M ° सारसैः.—(88) M सक्षौद्रलिप्त°.—(89) B
रजती, IO युवतिर्भवेत् .—(90) L नारी प्रसूतापि.—(91) IO, M
बला instead of वचा; M ° व्योषानीलेन्दीवर°.—(92) L दृढतरं
—(93) L मधुना काष्ठ°.—(94) L लक्ष्णे, as reads also the Ka-
maprakāśa.—(95) L यत्तु नित्यं तदृढतां; B यत्नादतिगाढतरं
—(96) L लवङ्गं.—(97) L सुगन्धं; B योनिः सुरभितां व्रजेत्
—(98) M ° दाडिमीबीजकेशरैः.—(99) M, B योनिः सु° व्रजेत्
(100) L ° लोमानि शातयेत्, IO योनिलोमानि योषितां .—(101)
B सप्ताह्नि.—(102) L सह; B ° जलेन च.—(103) B तिलतै-
लेन तालेन लेपनाद्भृति नः कचाः L तालेन युक्तं प्रभवेद् योनि-

लोमापहारकम्.—(104) V लेपाद्रोमाणि ; B तस्य मर्दनालो-
मानि.—(105) B भृशं, IO भ्रष्ट.—(106) L, M यवापुष्पं; B
° पुष्पेण.—(107) V नष्टं पुष्पं; B लभेत्सदा, IO प्रसीदति.—
(108) L समन्त्रकम्, M समञ्च यत्,—(109) L जलैः पिष्ट्वा
(110) B लभेद्या च, M भवेद्यवन्नष्ट.—(111) V नष्टं पुष्पं.—
(112) B प्रचिन्वति.—(113) IO, R पीत्वांभसा.—(114) L पी-
तमात्यन्तिकं, V, IO पिबेद्यात्यन्तिकं, B पिबेद्यापलिकं.—(115)
B पुष्पमाश्रु तस्याः शमं नयेत्.—(116) IO लीढ्वा सप्ताहगुटिकां;
M सप्ताहमत्यन्तं पुष्पस्येव शमं नयेत्;—(117) IO, R त्र्यहं.—
(118) M पुष्पान्तिके.—(119) L च.—(120) L स्नानान्ते तु M
स्नाताञ्जेन; V त्र्यहं पिबेत्.—(121) IO, R नरसंसर्गा°; M° सं-
योगा°.—(122) L° मृताद्राणांकाथं स्नात्वा दिने.—(1.3) L° रो-
पणं क्षुद्रा°.—(124) M लक्ष्णजं, B लक्ष्मणजं, IO लवणजं.—
(125) L भर्त्रा निवेदितम् (निवेशितम्; M मूलपत्रविशेषिता, IO
निषेवितं, B निःषेपितं.—(126) L घृते.—(127) M, V क्षीराशना;
M भृशम्.—(128) L क्षीरं सद्यो.—(129) M ततो—(130) M
न सङ्गता, IO, R नृसंगतः.—(131) L, IO, R पुष्पोद्घृत °, M
पुष्पोद्घृता श्वेत°.—(132) L ज्येष्ठी°.—(133) M, IO, B सवत्साया-
श्च गो (:) पयः.—(134) M, B, IO भजेत्—(135) L यामात् (136)
L खादेद्.—(137) L, M° लग्नं पङ्कं° न्वितम्—(138) L संपीय,
M तं पीतं.—(139) L ज्येष्ठी°.—(140) IO, R मूलं.—(141) IO, R
नारीणां स्तम्भ°; M संस्तम्भयेदिति.—(142) M लोहितपत्र-
स्य.—(143) L सप्ताहान्यङ्गना.—(144) L वातं, M गर्भस्तम्भ-
स्तथा शान्तिः.—(145) L शूनकोशं, M शोकं शूलं तृषेपुजम्

—146 L सुवहन् रोगान्, M दोषान्, B विविधात्रोगा °.—
 (147) L मातुलुङ्गं, IO, B, R मातुलिङ्ग °, M ° मधुत्थं च.—
 (148) M omits पीत्वा-पर्युषिताम्भसा.—(149) IO सुखं योषा
 शीघ्रं नात्र विचारणा.—(150) M, B प्रसवत्वर, IO प्रसवस्तरा
 —(151) L मन्मथसथमथ, V मन्मथ सथमथ; B, IO मथ
 only once.—(152) L वांहिलि, V, IO वाहिलि; B वाहिनी;
 L बालस्योदरी; B IO ° दरि.— In M, the mantra and stanza
 F 2 are want'ng.—(153) L, V खादेत्.—(154) M मासार्धाच्च
 —(155) M ° मग्निमुद्भवम्.—(156) M वन्ध्यापि जायते.—(157) M
 कुदुम्बस्य.—(158) M, IO मान्त्रिकाया.—(195) M, B ° दकेनैव
 वन्ध्या °.— Instead of कदम्बस्य °, L reads as follows:

चन्दनं सर्षपाञ्चैव शर्करा समभागतः ।

पीत्वा तण्डुलतोयेन रामारकं विनश्यति ॥

(160) L ° बीजानि, M ° बीजं वा; IO रक्तांभोरुह °, P 204
 रक्तांभूरुह °.—(161) P 238 पीत्वा.—(162) IO वन्ध्यात्वं प्रतिपाद-
 येत्.—(163) M पिष्ट्वा.—(164) M सगोखुरम्.—(165) M सिन्धु-
 तैल.—(166) L याति, M पीता.—(167) L केशानां त्रिविले-
 पनात्; M, B केशा रोहन्ति.—(168) L लेपाद् विहन्त्य. IO
 adds here the second half of stanza 80.—(169) M
 केशान् बाह्या °.—(170) L दुधेन दन्तं, M तं श्रुश्रूक्तवजं पिष्ट्वा
 (171) V तैलेन लेपयेत्, M तवस्तेन प्रले °.—(172) This line is
 wanting in IO.—(173) B पिंडाकारं जेति °, M पिण्डारकश्चतेक-
 न्कैः.—(174) M तिलतैलं °.—(175) L, B केशानां रञ्जनं, IO
 कशरजनकं.—(176) L क्षिप्तं त्र्यहेण केरोषु ° नयेत्.—(177) M

मजू^०, the ख and ग manuscripts माया^०, B मंजू, IO, R
 मांजू^०.—(178) M^० सैन्धवश्चारितालकैः, B स्मरनालकैः, L
^० नारकैः.—(179) L पिष्टा.—(180) M भवन्ति हि.—(181) M
 रिङ्घनैलफलं, B विंशतैलफलं.—(182) B, V, M गोरोचनाः—
 (183) The Madras manuscripts add the following lines:

लवणक्षारमिन्धूरो कापिकेयेतिमंजितः ।

मृटारशृङ्गिका चैव चूर्ताम्बूलपाककृत् ॥

चतुर्णां समभागेन पिष्टं चेन्नीरभंग्युतम् ।

प्रत्यहं लेपनात्केशा भवन्त्यलिसमा ध्रुवम् ॥

(184) B चित्री.—(185) L स्याद्यथायथम्; IO मर्दना^०.—(186) L
 तल्लेपादेव.—(187) L संलेपाद्यौ^०, M देवनागाद्वनोद्भवाः.—
 (188) V मुखस्य, M मुखस्तां पिंडकां.—(189) IO देहीनां संचयं
 क्रमात्—(190) M शात्मलेयैश्च; IO, B शात्मलैर्यैश्च; M क्षार-
 पिष्टै.—(191) L मुखं तत्पिष्टकाः शीघ्रं, B मुखस्थाः पिंडिका-
 श्चापि...ग...त्यसंशयं.—(192) L गण्डस्थ, M गण्डस्ता पि-
 ण्डका देहादेहिनां च क्रमं क्षयात्; IO, R नरनार्योः क्षयं.—
 (193) M पिष्ट्यदीणि विलेपयेत्.—(194) L^० ज्येष्ठी; M^० यष्टि
 —(195) M, IO^० नादा, V^० नादं.—(196) M सप्ताहां, IO
 सप्ताहार्त्ना^०.—197 L^० कणाश्चापि ल^०, M^० कणाश्मरि^०, B
^० कणावारि^०, IO^० कणाश्चारिं ल^०.—(198) L^० म्बुमिश्राणां
 लेपः.—(199) M कुचौ पृथक्.—(200) M कुचौ संयाति.—(201)
 M श्रीवर्ण^०, IO, R श्रीपर्ण^०; L^० सिद्धं कडुतैलं वि^०; B, IO
^० सिद्धं तिलतैलं; B, R विलेपयेत्.—(202) L पीनौ तुङ्गौ.—

—(203) M ° संसिद्धि °; B, IO °सिद्धं कटुतैलं ; M IO विमर्दन त्,
 B वि...येत् .—(204) B, IO मृगीदृशाम् .—(205) M तिलतैलो-
 द्भवं .—(206) व्योषं रिजालस्तु .—(207) M पञ्चमृद्धग्निना .—
 (208) M तन्नश्याणकुचाणकुचा, B तंन्नस्येन, IO तत्तैलन .—(209) L
 बलातएडुल °, B, IO बलातएडुल .—(210) L पीनौ तुङ्गौ .—
 (211) L पतन्ति.

VII.

(1) B ° करणमुच्यते .—(2) L कामिनीप्रीतिजनकं .—(3) L
 धीव्यं .—(4) M एतान्पिष्टा .—(5) L कुर्याच्च तिलकं .—(6) B
 तत्क्षणादेवमायाति .—(7) M मुनिना उक्तेयं योग उत्तमः .—(8)
 M श्वेतार्क ° .—(9) V कुष्ठं समूलकम् .—(10) IO, R तत्तज्ञः स्वव-
 शं कुर्यान्मोदते च चिरं भुवि .—(11) L एतत्समं च पञ्चाङ्गमलं
 नीत्वै °, M तत्पञ्चमं स्वपञ्चाङ्गं मलै °, L एतत्समं चात्ममलै ° .—
 (12) B omits यः वशीकुर्यात् .—(13) L जगत्त्रयं .—(14) L कुर्या-
 च्च तिलकं M कुर्यात्तु तिलकं .—(15) L ध्रुवम् --(16) M यस्तु .—
 (17) L पतितं .—(18) M सजलं .—(19) L ग्राह्यं मोहयेदवलां शु-
 भाम् .—(20) L, IO ° पतितं Stanza 90 is wanting in B.—(21) L
 क्षिप्त्वा .—(22) L क्षौणी .—(23) M ° दञ्जनादस्य .—(24) L, V
 तथाञ्जनात् .—(25) M कृष्णमुत्पलम् .—(26) L चैव .—(27) B
 शीघ्रं .—(28) B वातौच्छिद्रतरलं पुंसां .—(29)— V तु .—(30) M
 पद्मावलमिदं .—(31) M संक्षिप्तं मूर्ध्नि .—(32) B शिवाख्यं .—(33)
 M सत्ताण्यं, IO, R सत्तौण्यं, B सत्तौद्रेयं .—(34) M परम-
 मोहनम्, IO, R शिरसि (!) मोहनम् .—(35) L सर्वाण्यांत्राणि,

M पत्रादि सर्वविष्णास्य (!).—(36) M सृञ्जरीकोदरं कुजा.—(37)
M पूरयित्वास्य वीर्येण.—(38) M तर्प्यकान्ते.—(39) L संपेष्य.
(40) L वतीः.—(41) M वामदेश्च, B वापं पादं.—(42) L भवे-
त्तस्याः स वश्यो.—(43) L, B, R, IO, ° सिंधूत्य °, M ° सिन्धुरं.
—(44) L सप्तभागैः.—(45) L सभल्लूकमेद्रवं, B सभल्लूकं मंदं
च.—(46) L पिष्ट्वा लिप्त्वा ध्वजं यां च भजते सा वशांभवेत् ;
M ° ध्वजो नारीं भजेच्च वशगा भवेत्.—(47) B ° चंदनी, IO
° नैः.—(48) This stanza is wanting in L and M.—(49) L व्या-
घ्रा, V व्याधिः.—(50)— L कूप्राण्डकुसुमं जलं, M कालिकं
कुसुमं, B कुंकुमजलं कुष्टं कालांडकं तथा.—(51) V, B, IO देव-
दारु.—(52) This stanza is wanting in IO —(53) M भृङ्गी चेति
(54) L सर्वविश्वं.—(55) M, B, IO omit क्लीं. IO प्राणः कामे-
श्वरेत्युक्त्वं.—(56) V आनयानयेत्येवं (with chandobhauga!); B
आनयानय इत्येव ; M आयुष्यायतये सेवं वशतां.—(57) L वश्य-
तां ; पदम् ; B, IO च instead of क्लीं.—(58) B वापि.—(59) L
संज प्यायुत °, M सृजप्तेयुतसंख्यकः ; IO, R संयुक्ते ; L, V
° संख्यया.—(60)— M अथो.—(61) M ° पर स्मृतः.—(62) L
जप्त्वा द्रव्यादि.—(63) M अथ तेन चतुष्पादि दत्तं परमशोभनः
—(64) L वश्यतां ; M चामुण्डमोहनं चैव वशतां नष्ट चामुकीम्
(65) B प्रयच्छति.—(66) M कामिनीं तां न संशयः.—(67) L पू-
र्णमोकारादथ, M ओंकारोप्यथ.—(68) L, V निमन्त्रितम्, B
भिमंत्रयेत्.—(69) V प्रोच्य.—(70) M स्वाहेत्यस्तु ; L मनोभवम्
—(71) L, M जाति °.—(72) M रात्रिकिरणै °.—(73) L चित्रिणीं
वशतां नयेत्.—(74) L ओं नमस्ततश्चोमिति स्वा° ; M ओ नमो-

न्तं च मित्री च.—(75) R, IO तथाद्वयं .—(76) B omits अयं
 and reads महासिद्धिप्रदो मंत्रः की^० सर्वसूरिभिः.—(77) R, IO
 संजप्त्वा.—(78) L श्रीफलैश्चैव.—(79) R, IO संदग्ध्वा (!);
 V शङ्खिनी वशतां व्रजेत्; R, IO श^० वशगा भवेत्. Instead
 of this stanza, M reads ओं परिखं शङ्करि स्वाहा स्वाहा मन्त्रे-
 णानेन सञ्जप्तं मूलं तगरसंभवम्.—(80) IO धुरि^०, M हर^०.—
 (81) M प्रोक्तो.— M adds ओं हर हर पच पच कामदेवाय क्लीं
 स्वाहा and omits the following stanza—(82) L संपेय्य.—(83) B
 मधुना च.—(84) V mentions the reading तत्पानात्.—L^० द्व-
 स्तिनीं वशतां नयेत्.—(85) M कामिनीप्रीतिजनकम^०.—(86) M
 न्यसेत्.—(87) L^० शीरयष्ट्यार्ति^० V^० पथ्यादि^०, M^० पथ्यार्थि^०,
 B^० पथ्यानि^०, P 238^० पथ्यानि^०.—88 L पिष्ट्वापि वा दलं, B
 निचफलं.—(89) L लोघ्रदाडिमीसप्तपत्रजम्, M^० समपत्रयोः, B
^० पञ्चत्रयोः.—(90) L कल्कस्य च V वल्कलस्य, M कल्केन त्वक-
 लोपेयं (?).—(91) L^० दुर्गन्ध^०, M मददुर्गन्धिनाशनम्, B
^० दौर्गन्ध^०.—(92) M^० फलकुरङ्गस्य; R, IO चिञ्ची^०.—(93) L
 बीजान्यथ; R, IO बीजेनाथ.—(94) L^० दुर्गन्ध^०, B^० दौर्ग-
 ष्य^०.—(95) B त्वयं, R, IO ध्रवं.—(96) M^० पुष्पागरुस्सार-
 कोल^०; L^० मञ्जात्र^०.—(97) B लिप्त्वांगं, IO विलिप्तांगं निहं-
 त्याशु.—(98) V खगपीलु^०.—(99) L एतदेव निदाघे स्याद्धर्मभे-
 नाशनम् परम्.—(100) B^० फलाम्भोज^०, M^० भोदलोहदाडि-
 मिकल्कजैः.—(101) M पीलुपत्रमरुक्कं च.—(102) L निदाप-
 येत्.—(103) M^० पत्राणि.—(104) This line is wanting in M,
 B.—(105) L^० स्वशी^०.—(106) V सुगन्धि; L परिविन्दन्ति

मूर्धजाः, R, IO वदंति नः, B परममूर्ध्व...ते विंदति .-(107)
 L ° स्वर्णा °, B ° स्वर्णा °.—(108) L मासार्द्धमध्ये तु.—(109)
 L सामान्यलेप, M समये लेप, B सामलैलेप, V समानैलेप
 —(110) B, IO, R सुगंधः —(111) M काम ° —(112) L शैलेयं,
 B स्यौलेयजलं °, M स्याण्यं .—(113) B उशीरैश्च, M उशीरै-
 श्चामरैरेभि ° .—(114) IO सुरभिः प्रदः .—(115, M ° शीरमुस्ता-
 गरुक्चोरकैः .—(116) L कृतो निजांगेषु ; M कृतोयमन्त्रेषु .—
 (117) M चन्दनोदितः .—(118) L कन्काचन्द्रः M, R, IO कनका-
 चन्द्रो .—(119) L जाति° पूतिका, V ° पूतिका —(120) L omits
 तु and accordingly writes ° पिष्टैरेभिर्नाग °; B सुसूक्ष्म° रेतैस्तु,
 M सुलक्ष्मैरेभि पिष्टैस्तु .—(121) M सुगन्धये रसैलेप .—(122) L
 योगो .—(123) B महीभृतां .—(124) L ° क्षौण्ड्रेय °, M ° क्षौणां-
 पयद्राणां .—(125) R, IO केसरस्य द्विपंच .—(126) M स्युर्भव
 छाग नगस्य तु ; B च instead of तु .—(127) M येभिरत्कासु-
 गन्धिश्च क° संज्ञितः .—(128) M नखपत्यात्रयाम्भोदमांसीमानक-
 रञ्जकः ; L नखपद्यामयं भोग्यं मांसी° जवः ; V ° मांसीभिसिकर-
 ञ्जकाः .—(129) L M समं .—(130) L ° क्षौण्ड्रेय °; B च instead
 of तु .—(131) L तैलं .—(132) B ° गर्भाढ्यः .—(133) L शु-
 क्ला सा ; B भक्षेतांबूलसंयुक्तां .—(134) L, M क्षौण्ड्रेय .—(135) IO
 जातिपत्रकं, R जातकोशकं .—(136) L, R मधुना तेषां .—(137) L
 कृत्वा .—(138) B द्विसंध्ययोः .—(139) L ° वासि .—(140) L, B
 काम्बोज °, IO काम्बोजि °, M काम्बोजवीजं .—(141) M मधुर-
 तान्वितम्, R, IO पक्कृता° .—(142) M प्रोल्लीढमानस्तद्वक्तं .—(143)

V मासं तद्वक्तं मासं कुसुमवद्भवेत्.—(144) L खादेत्ताम्बूल °, M
भक्ष्यं ताम्बूल °.—(145) R, IO तद्वक्तं सुरभीभवेत्.—(146) B,
M मुखवासेषु.

VIII.

M लीला °.—(2) B शुद्धे च धर्म °, IO शुद्धस्व °.—(3) R,
IO जनधान्य °.—(4) L जाते.—(5) M विवाहश्शुभः, IO सतां.
—(6) L ° भसुरा.—(7) M स्याद्यस्यास्थिलजप्रसन्नवदना वासा
सु ° वलिः.—(8) IO, R ° श्रीवा च ; IO वाग्बंधुरा.—(9) B श्रोण्या
च पृथ्वान्वितः.—(10) M मान्या चैव सुनिम्नगा, B नाभी चैव
सनिम्नगा, IO, R नाभ्या चापि गभीरया.—(11) V, B ° निद्रा-
न्विता.—(12) M विवाह्या शुभा.—(13) R, IO रूक्षा चारुणाजि-
ह्वि.—(14) IO सस्तांशुका.—(15) V निद्रोद्रेकवती, M नीका-
शोक ° सदा च चलनद्वयस्या प्रकोपेन वा ; (16) L चलनैर्यस्याः ;
V, B वचने, R, IO चलते; V प्रकम्पोऽधरे, R, IO प्रकम्पे-
द्वराद्.—(17) IO चाति.—(18) L, R, IO गल्लौ.—(19) V चञ्च-
लौ.—(20) L मध्योरुहीनाग्रिका, M भवेद्वंध्या तु हीनाग्रगा.—
(21) L, M, B, IO ° पक्ष °.—(22) L सवल °, IO शवला °, B
शरला °, M सखला °.—(23) V कूपसमन्वितौ.—(24) L, B विद-
धती, M विदधतां हीनोत्तमाङ्गिस्तथा.—(25) V opens with the
following stanza which I never since can find in the Manus-
cripts:

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदनतापताडनैः ।

तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
श्रुतेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥

(26) L सञ्चारः, V स्वाचारः.—(27) B⁰ कुटुंबभाक्.—
 (28) B परिकीर्तितः.—(29) L दुर्व्यसनो.—(30) M नष्टो.—(31) L
 धूर्तो ऽति⁰; M निवद्वस्सदा.—(32) M, B दारिद्रः, R, IO
 निर्द्रव्यः.—(33) V adds here two chapters, namely, पुरुषसामुद्रि-
 कलक्षणं, and स्त्रीसामुद्रिकलक्षणं which are wanting in L and all My
 manuscripts.—(34) L आयुःक्षयो.—(35) all my texts and manuscripts,
 except IO, read⁰ लघुता.—(36) M विरतिः.—(37) R, IO रते तु,
 B रतो न.—(38) V कीचकश्च, R, IO कीचको ऽपि.—(39) V
 कुर्यात्.—(40) L, M, B, IO दृष्टिः प्रेम; M प्रेमयुता.—(41) L
 भ्रमा मनसि च, R, IO पुरीभ्रमो.—(42) L⁰ च्छित्तिरथो.—(43)
 L किमु.—(44) B कांतं च चेन्नाप्नुया⁰.—(45) V⁰ मोहिता,
 M कन्दर्पमोहादतः.—(46) M एवं चिन्त्य (?).—(47) M प्रत्यर्थिनीं.
 (48) IO वाचस्पतिः. The editor of L has the note: वात्स्याय-
 नीये कामसूत्रे तु नैव दृश्यते.—(49) B⁰ भूपतिमित्र⁰.—(50) L
 स्वस्य दोषाय न चेत्प्रगच्छेत्, M भोगाय, B, IO, R प्रयच्छे⁰.—
 (51) L तास्ताः पुमा⁰ नैवम्, M ऋतौ पुमान् कामत्य (?) नैवं;
 B नैवं; .—(52) L शिष्य.—M has only कन्या प्रयुजिता
 परां कामकलाप्रवणम्. Then immediately follows अथ दुस्सा-
 ध्यलक्षणम् (!) —(53) V⁰ वल्लभा च.—(54) L विक्रेयिका, V
 विक्रेतिका, R, IO विक्रेत्रिका.—(55) L मालाकार⁰, R, IO मा-
 न्याकार⁰.—(56) B योषिताः.—(57) L निर्धन instead of वा-
 मन; L, V⁰ भार्या तु या.—(58) L महाभामिनी.—(59) L अत्यु-

ग्रा.—(60) L साध्या °ङ्गना.—(61) L लज्जां च धत्ते, V, IO, R
 न धत्ते.—(62) L विमुखी च, R, IO ऽभिमुखं च.—(63) R वि-
 लिखत्यधस्था.—(64) L, B, R, IO दृष्ट्वा.—(65) B कराब्जा.
 The correct reading of this line seems to be दृष्ट्वा कराभ्यां न-
 यने पिदध्यात्.—(66) L, B, IO दृष्ट्वा स्फुटं, V पृष्ट्वा स्फुटं.—
 (67) L सा स्मृत एष (!) वाक्यं.—(68) L, V, B शनैर्व्रजे °.—
 (69) L विलोकते.—(70) L ° दुच्चैःप्रदेशं.—(71) L प्रेमवशो
 हि धीरः, B दृशं च धत्ते.—(72) L कुत्रापि, IO मृञ्जति.—(73)
 L दृष्ट्वा.—(74) B प्रस्फोट °.—(75) L ° भारं.—(76) L सङ्कोचयेन्.
 —(77) L ° वक्ते वहेद् धर्मजलं विलोक्य.—(78) B ° चिह्नन व-
 रांगयुक्तां, P 238 ° चिह्नन च रागयुक्तां—(79) B, IO, R, P 204
 238 दूर्ति त्वरा—(80) L ° प्रवीणाम् As for M, see Note 52.
 —(81)— M प्रेष्या.—(82) L त्रपापरवशा.—(83)L, B गर्भादि °.—(84)
 B साध्यांगना.—(85) B ° पुण्यवर्ग °.—(86) V च instead of
 ऽथ.—(87) M भवने.—(88) M, R, IO रम्य.—(89) M ° पुष्पादि-
 धूपा °.—(90) B शुभदिने.—

IX.

(1) M तद्विदधीत.—(2) L ° विद्वक्काख्यम्, R, IO ° विद्व-
 केथ, M जाघनिकं तदेव.—(3) M ऊरुपगूढं दिह (?) क्षीरनीरं
 (4) L सुखमपरपदाब्जेना °.—(5) B, IO, R ° वल्ल्यापीड्य, M
 वल्ल्यावद्य.—(6) B घटेयद्यन्मिथुनं.—(7) L ° वक्तमास्य हन्या-
 न्मिथुनं सभावम्, M ° वक्त्रहस्तावली यन्मिथुनं घटेश्चेत्; B
 घटेच्च.—(8) M जघनपरिनदेस्थः (?).—(9) L, V ललित °.—

(10) M स्फुटं.—(11) L विध्यत्युरोजेन तु यत्र कान्ता.—(12) M कामविष्टदृक्कार्ख्यं.—(13) B ° न्मथितांगनाया.—(14) L संदंशितस्वोरुयुगेन यत्र ; M ऊरुयुगं स्वरुयुतेन.—(15) M वा.—(16) L अङ्गे च, B अथैकनल्पे.—(17) M IO ° सुखस्था कान्ता.—(18) M, IO, B, R ग ढं.—(19) M वा, B हि.—(20) V R, IO ° यष्टिं, B ° यष्टी.—(21) M यत्र यौवने.—(22) IO चुंवत.—(23) This stanza is wanting in L.—(24) M वा.—(25) L ° सात्स्यान्निषां स्तनाऽऽ ° : M नान्या ततश्चुम्बन ° . V न त्वन्यतश्चु °.—(26) L शनैश्च चुम्बदतिरागयुक्तः.—(27) All editions and manuscripts, except B, P 238, read तन्मिलिता °.—(28) L स्फुटिताख्यं.—(29) L, B परिचुम्बनं—(30) L, IO, R तल्लाटिकाख्यं, V तद्वन्दिकाख्यं, M तद्वादुकार्खा, B तद्वद्विकाख्यं. Only P 238 has the correct reading.—(31) R, IO च.—(32) L परिचुम्बनं.—(33) V मदनाभिलेला.—(34) M वा.—(35) IO स्निहेद्देशेच.—(36) L, R, IO पण्डित °.—(37) M, R, IO प्रियामुखं.—(38) L तदेव.—M, B, R, IO read तत्संपुटाख्यं हनु [B त्वनु] वक्तसंज्ञं स्यात्केलिजिह्वाननतस्तदेव [IO तत्सदैव, B जस्तदेव].—(39) L प्रथितं.—(40) IO ° पृष्ठजिह्वास्फिकपार्श्व ° विषयेषु नराः (!).—(41) B च.—(42) M पधिभूतास्स्येस्पुटितत्वमेव, B वद्विष्णुता च स्फु °, R, IO वद्विष्णुताप्यस्फु °.—(43) L, B आमार्दवं.—(44) L नखानामुक्ताः प्रभूताः किल, B षडुक्ता नखरप्रसंगे, M नखा गुणानां बुधैः प्रयुक्ताः.—(45) L गण्डयुगाधरेषु.—(46) M यत्साधुसंपूर्णमुखिप्रभूति ; IO, P 204 ° प्रभूतं.—(47) M, IO तदेच्छु °.—This stanza is wanting in B: the first half of it has

been omitted in V.—(48) L भेदाः सुमुखोः प्रयोज्या °, M इत्ये-
वे चन्द्राभिमुखं प्रयुञ्ज्येत्तथा ; B इत्येतदेवाभिमुखं, IO इत्येव
चेदाभिमुखे, R इत्येव चेदाशु मुखे प्रयुञ्ज्या °.—(49) M मण्ड-
कमावदन्ति.—(50) M द्वित्र्यंगुलादपि करेण नख °.—(51) L, B
° द्वयं.—(52) B ° विदग्धा.—(53) M तदेव.—(54) B तरुणं
हितपत्रपानः (?), IO तरुणस्य हितत्वभावः.—(55) L ° मादाय,
M ° मादापि तु कञ्चुके.—(56) L, IO तं, M संवदन्ति.—(57) L
तथा, M वृत्तं.—(58) IO तज्ज्ञा.—(59) L प्रयोज्यास्तुष्टाननांतन-
यनानि, B सुंवप्रदेशेषु रदा विधेया ओष्टाननार्त्तुनानि हित्वा ;
R, IO ° नयनं विहाय.—(60) L हुङ्कार °.—(61) V ° विधि-
ज्ञैः.—(62) L अपि instead of दन्ताः.—(63) V ° मात्रंगं,
M ° मातृगं.—(64) B ° मात्रलिगवदलेख्यं.—(65) B च.—
Stanza 33 is wanting in M—(66) All texts and manuscripts
have तिलके च [R तिलको ऽथ]; but as pointed out by the
editor of V, the correct reading seems to be तिलशश्च which
is in accordance with the reading of the Ratirahasya : मध्ये-
ऽधरं तिलश एव विखण्डने स्याद्विन्दू रदद्वयकृते.—(67) L, M
कामिनां.—In M stanza 34 is mutilated.—(68) R, IO ° मालकं.
—(69) L, M गण्डाभ्रकं.—(70) B स्मृतिहातुपश्चात्तक्रोडसंज्ञं.—
(71) L कोलवत्तरं, IO, M कालचर्चं.—(72) IO तत्त्वाः, B
तज्ञाः.—(73) L प्रेमप्रवृद्धां, M ° प्रवृद्धैः, B रागप्र °.—(74) M
साध्या.—(75) V, M जनैश्चु °.—(76) All My manuscripts
परिकुष्य.—(77) IO चुंबते . The editor of L remarks that
चुम्बति is हतवृत्तत्वम्.—(78) B रतांगवज्रकं.—(79) L भुजंग-
वक्षकम्, M ° वल्लरीम्, IO ° वल्लिकाः.—(80) IO वतंसदेश °.

(81) M प्रगृह्य.—(82) M सुरतावकाशे.—(83) M प्रविष्टाः.—(84) IO श्रुता मया.—(85) V °रति°, M क्रमाद्या सुरतः प्रकारः, B वाह्यतरप्रचारः.—(86) L, B, M प्रसिद्ध°; L बहुशो वदन्ति न दर्शिता; M प्रसिद्धवन्धाद्बहुशोपरत्र, B, IO परत्र.—(87) L ते, M ° शङ्कयात्र.

X.

(1) L स्वात्मानु रूपं, M सामान्यरूपाः परिधाय.—(2) M पूर्व पुमान् चरेद्ब्रह्म°.—(3) M ° पराङ्गदेशे.—(4) L साध्या.—(5) M अविश्लुधानं यमितोरु°.—(6) L तथैवानतकन्धरं च, B स्थितं तथा व्यानतकं रसज्ञैः.—(7) M वदामि—(8) B भोगविलास°, M भोगविभागपक्षाः.—(9) M, L, V°मन्दिरे यः.—(10) All my manuscripts ° द्वयमुद्गृहीत्वा (!).—(11) B स्त्रीपादभेकं.—(12) V, B, IO, R ° पाणियुग्मम्.—(13) M भूमौ.—(14) L तथा.—(15) V ° युग्मावूर्ध्वं.—(16) B P 238 स्मरवज्रनामा, IO स्मरनामयुक्तः.—(17) M श्रेष्टस्तदा, B श्रेष्टः.—(18) B किञ्चित्दूरुद्वय रमते.—(19) L, V ° रवदारिताख्यः, M ° रविदारताभ्यः, ग° रेथिताकिताख्याः, B ° रविदारिकाख्यः, R, IO ° रविदारिताख्यः.—(20) L, IO कान्तां, M कान्ता.—(21) R, IO ऊरुयुगं.—(22) B रमते.—(23) V, B, M निपीड्य.—(24) B कामालय°, M कामाङ्कुश°.—(25) L, M चेष्टिता°, B वेष्टिका°.—(26) B, IO, R, P 204, 238 तदेति.—(27) M अर्थ, B अतो विधाय, R, IO अथो.—(28) V प्रबलां; M प्रबला तमेव भर्ता यथाचेच्च (?) विदारितं तत्.—(29) M, B विलासिनी, R, IO यदा स्त्रियः; B संगत°.—(30)

L तद्भुग्नकं, B तद्भुग्नकः M उद्भुग्नकन्यां समदांघ्रि^० —(31) M स्फुटमाप्रदिष्टः, B स्फुटिताख्य उक्तः, R, IO स्फुटमान्प्रदिष्टः —(32) L कुर्याद्रिति चोदितकोणाकार्यः, V वीणकार्यः, M वीणितार्यः, B अर्द्धेन युक्तं विनिपीडितं तत्; R वेणिकार्यः (33) M, IO, R पौढांगनायां.—(34) L परिवर्जनीयः, R, IO इति कल्पनीयः.—(35) L^० प्रसुप्ता. M^० प्रसुप्तः.—(36) L मुनीन्द्रैः.—(37) B जानुयुगस्य, M विपर्ययादूरुयुगस्य.—(38) L^० विपर्ययाद् भूपपदं, M^० विपर्ययाच्चोदपरं, B^० यादुपपदं —(39) M पिनये^०.—(40) M omits कृत्वेति—स्वभुजौ तु कृत्वा.—(41) B प्रयच्छे^०.—(42) V^० तार्यमुक्तम्.—(43) B, IO, R मणिकूपर^०, M मणिकूपराख्या.—(44) IO मुनीन्द्रैः.—(45) M प्रणिदायसंज्ञः, omitting तदा कवीन्द्रैः.—(46) B तथा.—(47) L संयमनामधेयम्.—(48) L मुखं मुखे.—(49) V स्ववाहुं, B च बाहू.—(50) V, B^० युगमं.—(51) IO स्त्रियं समाकुञ्चित^०.—B reads तथैव भर्ता कृतं स्थितां स्त्रियं कु^०.—(52) B^० विदग्धां, R, IO^० विदग्धा.—(53) V, B भ्रमयेन्मु^०.—(54) M विनिधितस्स्यात्, L, B, IO वितर्दितं.—(55) L चेत्.—(56) L तन्माकटार्यं मुखसं^०.—(57) This wrong form is the reading of all my texts and manuscripts.—(58) B परिरभ्य.—(59) L कण्ठे.—(60) L विन्यस्तयान्यंघ्रियुगं.—(61) IO, R^० देशगामी —(62) L ऐणगार्दभिकसैरिभादि^०; M^० जनतया न.—V B and P 238 greatly differ from L and my other manuscripts. They read as follows:

ऐण गार्दभिकं चैव शौनं सैरिभकं तथा ।

कामकेलिकलाविज्ञः प्रायेणैवं प्रकल्पयेत् ॥ ३० ॥

सुस्तेन यथोक्तेन तृप्तिं चेन्नाङ्गना व्रजेत् ।

कुर्यादाद्यां^१ पुरुषवच्छेषां तत्पुरुषायितम् ॥ ३१ ॥
 असमाप्तसुखा कान्तं हन्ति हस्तं धुनोति च ।
 उभिक्तुं न ददात्येव विधत्ते वा पतिक्रियाम् ॥ ३२ ॥
 कन्यकां हरिणीं स्थूलां नवपुष्पां सुदुर्बुलाम् ।
 गर्भिणीं^२ नवमूर्तां वा न युञ्ज्यात्पुरुषायिते ॥ ३३ ॥
 चारुयौवनसंपन्ना तन्वी श्रमविवर्जिता ।
 जितवीडानुक्ता च शस्ता नारी नरायिते ॥ ३४ ॥
 विलोक्य श्रमयुक्तां तां पातयेच्छ्रयने सुधीः ।
 संपुटं घटयेच्चव विसृष्टिसमये ततः ॥ ३४ ॥
 मुहुः स्वजघनाश्लेषः सीतकारो वीतलज्जता ।
 हिंकारः श्रसितं नार्याः सुखसांनिध्यसूचकम् ॥ ३६ ॥
 मूर्च्छना मीलनं चाक्षुण्यश्च्युतिकालस्य लक्षणम् ।
 सर्वमेतत्परिज्ञाय साधयेत्स्वसुखं ततः ॥ ३७ ॥
अङ्गस्वेदः श्लथत्वं च केशवस्त्रादिसंवृतिः ।
जाते च्युतिसुखे नार्या विरामेच्छा च जायते ॥ ३८ ॥
 अन्यासक्रमनाश्विरं नरवरो रामां रते सत्वरं
 ज्ञात्वा तन्मनसोदयं लणमर्थी मन्दं समान्दोलयन् ।
 अन्ते जातसुखामवेत्य विसृजेद्वीजं निजं तत्परं
 तिष्ठेत्तां परिरभ्य भावकथनैर्नोदेति यावन्मदः ॥ ३६ ॥
 इत्थं या च्युतिसौरुषहेतुकामितुर्वश्यं^३ गता कामिनी
 सा यावन्मरणं निजैर्धनजनप्राणैर्न तं मुञ्चति ।
 यस्त्वेवं सुखसाधनैकनिपुणो वश्यायसा (?) प्रेक्षते^४

^१ V कुर्याद्दद्यात्.

^२ V गुर्विणीं.

^३ V याऽतिहिंसोरुषहेतुकामिति वश्यं. ^४ V वश्याय चापेक्षते.

नो मन्त्रं न च भेषजं न च हुतं नो भावनां नो धनम् ॥ ४० ॥

कल्याणमल्लनृपतिर्मुनिवाक्यानुसारतः ।

अनङ्गरङ्गमकरोद्गुर्जराधीश्वराज्ञया ॥ ४१ ॥†

These stanzas apparently are spurious.—(63) L रते प्रवृ-

त्तिम्, M एवाभृततेष्वदृष्टा.—(64) L तत्.—(65) V, R ° परिस्था-
—(66) IO सुरतं.—(67) L प्रेयय विभ्रमवती.—(68) L स्मराल-
ये.—(69) L, IO ° मनोहरानना.—(70) L वदन्त्य°.—(71) L
सुख°, R ° नेत्रया.—(72) M तथा.—(73) L ° देहवतीं.—(74) R
° गच्छद्रवतां.—(75) IO द्रुतामपि.—(76) L नवसूतां च वियो-
गिनीं, M ° सूतामनुरागिणीं.—(77) IO बुधः.—(78) M, V ° युद्ध-
Sङ्ग.—(79) IO चतुर्धा स्यात्.—(80) L, V प्रसृतेनाथ हस्तेन, M
नाल्पहस्तेन हस्तेन.—(81) L स्थानान्यहं ब्रुवे.—(82) L समबलं
मुष्टिः, M गुह्येन हस्तं तु मुष्टिः.—(83) IO विरतिं भजते.—(84)
IO करताडनं.—(85) L यदा रता.—(86) L स्यात्सपलालसंज्ञम्,
V स्यात्सपताकसंज्ञम्, IO ° संज्ञां—(87) L कृतेप्रहारे V, R कृत प्रहारै
—(88) All texts and manuscripts, except IO, विंदुमालः.—(89)
M अंगुष्ठ°.—(90) L, V ° भेदांश्च.—(91) L सीत्कृतोक्तं ; M
हिंकृतं स्तनितं चैव हुंकृतं पूत्कृतं तथा ; IO हितं स्तनित्कृतं सू-
त्कृतं दूत्कृतं फू°, R हिंकृतं स्तनितं सीत्कूदूत्कृतं पू°.—(92) L
हिंकृतस्यापि जायते.—(93) L ° घोषस्तु सुदृशो भवेत्, M ° तस्या
तत स्मृतम्, V ° घोषवत्तदिदं स्मृतम्, IO स्यात्कृतः स्मृतम्.
—(94) IO सूत्कृतं, R पूत्कृतं.—(95) IO ° नारावतुल्य. This
line is wanting in M, R.—(96) L चारुकोकिल°.—(97) L श्र-

† Wanting in V.

मात्. —(98) L, IO, R, M ° च्छदं.—(99) V यदि.—(100) M
 निरागसाकृता, IO तदातिरागतः.—(101) L स पत्न्याः.—(102)
 L सुभृशकलुषं.—(103) L ° वाक्यं, IO सभयचकित °.—(104)
 L मृनिरेनां.—(105) L ° मन्दिरे.—(106) M ° चिरायतेक्षणा.
 (107) L विलासं.—(108) M सुरताय च पत्युरालयेत्कवयं.—(107)
 L, R विदुः.—(110) L प्रेषयित्वापि, M प्रेषयित्येव, IO प्रेषयित्वै-
 क, R प्रेषयत्वाथ.—(111) L स्वयमतितरलोला.—(112) IO परि-
 ताप्यत, M परितापत.—(113) L सकलकार्यकला.—(114) L
 सकलसौख्यसमन्विता, M ° वितर्पिता, IO ° विचिंतिता, R वि-
 मोहिता, P 204 ° विवंचिता.—(115) IO चपलार्त्ती.—(116) L,
 V add the following lines:

वासकसञ्जा समुत्कण्ठा स्वाधीनभर्तृका * तथा ।

कलहान्तरिता चापि विप्रलब्धाभिसारिका ।

खण्डिता प्रोषिता चैव नायिकाश्चाष्टधा स्मृताः ** ॥

(117) IO अविदित ° रंजते यः सभावं, R ° रागात्संव्रजे—(118)
 R, P 204 सलीले.—(119) L सुखमविकलमेवं V कल ° मेवं.—(120) L, V
 प्राप्नुयान्मानवः सः, M मानवस्यः.—(121) L ° शेखरे—(122) L
 तदद्वासने.—(123) L ° रङ्गकविता .

